राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 तैयार हो गई गौतम गंभीर की कोचिंग टीम...

राष्ट्रपति बनने से पहले ट्रंप ने हमास को दी धमकी, मिला ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 100 | पटना, रविवार, 21 जुलाई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

झारखंड में पूर्ण बहुमत की बनाएंगें सरकार : शाह

प्रात : किरण

रांची/एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को रांची में झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के अभियान का शंखनाद कर दिया। यहां प्रभात तारा मैदान में आयोजित भाजपा की विस्तृत कार्यसमिति की सभा में कार्यकताओं से संवाद करते हुए उन्होंने राज्य की मौजूदा हेमंत सोरेन सरकार को उखाड़ फेंकने और भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने का आह्वान किया। अमित शाह ने कहा कि हेमंत सोरेन के नेतृत्व में चल रही झामुमो–कांग्रेस–राजद की सरकार देश की सबसे भ्रष्ट सरकार है। भारतीय जनता पार्टी के नेता–कार्यकर्ता घर–घर जाकर इस सरकार के भ्रष्टाचार, घोटाले और वादाखिलाफी का दस्तावेज पहुंचाएंगे।

इस सरकार में एक हजार करोड़ का मनरेगा घोटाला, एक हजार करोड़ का खनन घोटाला, 300 करोड़ का जमीन घोटाला हुआ। झारखंड में कांग्रेस के एक सांसद के घर से तीन सौ करोड़ रुपए और हेमंत सरकार के मंत्री के पीए के घर से 30 करोड़ मिले। यह जनता से लूटा गया और भ्रष्टाचार से इकट्ठा किया गया पैसा है। बेशर्मी की हद तो यह कि कांग्रेस जेल में बंद उस मंत्री को फिर टिकट देने जा रही है, जिसके पीए के घर से 30 करोड़ मिले। केंद्रीय गृह मंत्री ने झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ के लिए राज्य के सीएम हेमंत सोरेन को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि वे खुद को आदिवासी सीएम बताते हैं, लेकिन आदिवासियों की चिंता करने के बदले लैंड और लव जिहाद के जरिए उनकी जमीन लूटने वाले घुसपैठियों को संरक्षण दे रहे हैं।

झारखंड में आदिवासियों की संख्या लगातार घट रही है। घुसपैठिए आदिवासियों के हक पर डाका डाल रहे हैं। उनके बदले नौकरियां पा रहे हैं और हेमंत सोरेन सिर्फ अपना वोट बैंक बढ़ाने की फिक्र कर रहे हैं। उन्होंने वादा किया कि राज्य में भाजपा की सरकार बनते ही जनसंख्या के मामले में एक व्हाइट पेपर जारी किया जाएगा और सुनिश्चित किया जाएगा कि आदिवासियों को संरक्षण मिले। उनकी जनसंख्या कम न हो और उन्हें आरक्षण का वास्तविक लाभ मिले, यह सुनिश्चित किया जाएगा। अमित शाह ने कहा कि हेमंत सोरेन के लिए आदिवासी कल्याण का मतलब सिर्फ अपने परिवार का कल्याण करना है। यह भाजपा ही है, जिसने आदिवासी के बेटे बाबूलाल मरांडी को राज्य का पहला सीएम बनाया था। इतना ही नहीं, आदिवासी बहन द्रौपदी मुर्मू को देश के राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर पहुंचाया। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने संताली को आठवीं अनुसूची में शामिल कराया था और पहली बार केंद्र में आदिवासी कल्याण मंत्रालय बनाया। उन्होंने कहा कि आदिवासियों और दलितों के साथ पिछड़ों की किसी ने अब तक सबसे ज्यादा चिंता की तो वह नरेंद्र मोदी की सरकार है। ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण हमारी सरकार ने सुनिश्चित किया। पिछड़ा वर्ग आयोग बनाया और नरेंद्र मोदी के कैबिनेट में 27 फीसदी पिछड़ों को जगह दी गई। ऐसा देश में आज तक किसी सरकार ने नहीं किया। अमित शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी की सरकार से पहले केंद्र में 10 साल कांग्रेस का राज था, लेकिन उसने झारखंड की लगातार उपेक्षा की। कांग्रेस के 10 साल के शासन में झारखंड को विकास योजनाओं के लिए सिर्फ 84 हजार करोड़ दिए, जबकि नरेंद्र मोदी की सरकार ने पिछले दस साल में इस राज्य के विकास के लिए 3 लाख 84 हजार करोड़ रुपए दिए।

यूपीएससी अध्यक्ष मनोज सोनी ने दिया इस्तीफा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष मनोज सोनी ने निजी कारणों का हवाला देते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। आधिकारिक सूत्रों ने शनिवार को यह जानकारी दी। सोनी का कार्यकाल मई 2029 में समाप्त होना था। सूत्रों ने कहा कि सोनी के इस्तीफे का परिवीक्षाधीन आईएएस अधिकारी पूजा खेडकर का मामला सामने आने के बाद संघ लोक सेवा आयोग पर उठ रहे सवालों से कोई लेना–देना नहीं है। एक सूत्र ने कहा, यूपीएससी अध्यक्ष ने निजी कारणों का हवाला देते हुए एक पखवाड़े पहले इस्तीफा सौंप दिया था। इसे अभी तक स्वीकार नहीं किया गया है। प्रख्यात शिक्षाविद् सोनी (59) ने 28 जून, 2017 को आयोग के सदस्य के रूप में पदभार संभाला था। उन्होंने 16 मई, 2023 को यूपीएससी अध्यक्ष के रूप में शपथ ली थी और उनका कार्यकाल 15 मई, 2029 को समाप्त होना था। सूत्रों के मुताबिक, सोनी यूपीएससी अध्यक्ष बनने के इच्छुक नहीं थे और उन्होंने पद से मुक्त किए जाने का अनुरोध किया था, लेकिन तब उनका अनुरोध स्वीकार नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि सोनी अब सामाजिक–धार्मिक गतिविधियों पर अधिक समय देना चाहते हैं। यह घटनाक्रम इसलिए महत्व रखता है, क्योंकि यूपीएससी ने शुक्रवार को कहा था कि उसने परिवीक्षाधीन आईएएस अधिकारी पूजा खेडकर के खिलाफ कई कार्रवाई शुरू की हैं, जिनमें फर्जी पहचान दस्तावेज के जरिये सिविल सेवा परीक्षा में शामिल होने के अधिक मौके पाने के आरोप में उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराना शामिल है। आयोग ने कदाचार के आरोपों की गहन जांच के बाद खेडकर के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कराया। उसने सिविल सेवा परीक्षा–2022 के लिए उनकी उम्मीदवारी रद्द करने और भविष्य की परीक्षाओं में शामिल होने से रोकने के लिए उन्हें कारण बताओ नोटिस भी जारी किया। एमएसयू में नियुक्त होने के दौरान सोनी भारत में किसी विश्वविद्यालय के सबसे कम उम्र के कुलपति बने थे।

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रपति ने सेना व नौसेना प्रमुख सहित 31 अधिकारियों को परम विशिष्ट सेवा पदक प्रदान किए

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी और नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी सहित 31 वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को शुक्रवार को परम विशिष्ट सेवा पदकों से सम्मानित किया। श्रीमती मुर्मु ने यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित रक्षा अलंकरण समारोह के दूसरे चरण के दौरान सैन्य कर्मियों को विशिष्ट और लेखनिया सेवा के लिए ये पदक के प्रदान किए। उन्होंने सशस्त्र बलों और भारतीय तटरक्षक बल के 94 कर्मियों को विशिष्ट सेवा अलंकरण भी प्रदान किए। इन अलंकरणों में 31 परम विशिष्ट सेवा पदक चार उत्तम युद्ध सेवा पदक, दो बार सहित अति विशिष्ट सेवा पदक, और 57 एवीएसएम पदक शामिल हैं। हाल ही में सेना प्रमुख और नौसेना प्रमुख नियुक्त किए गए जनरल दिवेदी और एडमिरल त्रिपाठी को भी परम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों के साथ-साथ अनेक गण मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री ने पीएम मोदी से की बातचीत

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने शनिवार को टेलीफोन कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बातचीत की। प्रधानमंत्री लक्सन ने भारत में आम चुनावों के बाद प्रधानमंत्री मोदी को उनके पुनः निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई दी। प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक बयान जारी कर कहा कि इस बात पर गौर करते हुए कि भारत-न्यूजीलैंड के रिश्ते साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों के बीच घनिष्ठ संबंधों पर आधारित हैं, दोनों नेताओं ने आने वाले वर्षों में द्विपक्षीय सहयोग को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता दोहराई। दोनों पक्षों के बीच हाल ही में हुए उच्च-स्तरीय संपर्कों से उत्पन्न गति को उजागर करते हुए, उन्होंने व्यापार और आर्थिक सहयोग, पशुपालन, फार्मास्यूटिकल्स, शिक्षा, अंतरिक्ष सहित अन्य क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभकारी द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। प्रधानमंत्री मोदी ने न्यूजीलैंड में भारतीय प्रवासियों के हितों की देखभाल के लिए प्रधानमंत्री लक्सन को धन्यवाद दिया। प्रधानमंत्री लक्सन ने उनकी सुरक्षा और कल्याण के लिए निरंतर प्रयास करने का आश्वासन दिया। पीएमओ के अनुसार, दोनों नेताओं ने संपर्क में बने रहने पर सहमति व्यक्त की।

सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में एक नक्सली ढेर

सुकमा। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक नक्सली को मार गिराया है। पुलिस अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सुकमा के जगरगुंडा थाना क्षेत्र में जगरगुंडा एरिया कमेटी के नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर शुक्रवार रात डीआरजी के दल को गश्त पर रवाना किया गया। अधिकारियों के मुताबिक, गश्ती दल शनिवार सुबह तुमार गट्टा और सिंगावरम गांव के जंगल में पहुंचा, तो नक्सलियों ने उस पर गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई की। अधिकारियों के अनुसार, कुछ देर तक दोनों पक्षों के बीच गोलीबारी के बाद नक्सली वहां से भाग गए।

भारतीय उच्चायोग नागरिकों की सुरक्षा के लिए अधिकारियों के संपर्क में

हिंसा प्रभावित बांग्लादेश से 778 भारतीय छात्र स्वदेश लौटे

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। बांग्लादेश में सरकारी नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ हिंसा भड़कने के बाद, कुल 778 भारतीय छात्र इस पड़ोसी देश से लगी विभिन्न भूमि पारगमन बिंदुओं के जरिये स्वदेश लौटे हैं। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा बांग्लादेश में भारतीय उच्चायोग भारतीय नागरिकों और छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संबद्ध अधिकारियों के साथ निरंतर संपर्क में हैं।

मंत्रालय ने कहा, अब तक 778 भारतीय छात्र विभिन्न भूमि पारगमन बिंदुओं के जरिए भारत लौटे हैं। इसके अलावा, लगभग 200 छात्र ढाका और चटगांव हवाई अड्डों के जरिए नियमित उड़ान सेवाओं के जरिए स्वदेश लौटे हैं। बांग्लादेश में प्रदर्शनकारी छात्र मांग कर रहे हैं कि शेख हसीना सरकार विवादास्पद नौकरी–कोटा प्रणाली को खत्म करे। पड़ोसी देश में कुछ सप्ताह पहले शुरू हुई झड़पों में 50 से अधिक लोग मारे गए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को कहा कि बांग्लादेश में भारतीय नागरिकों की कुल संख्या लगभग 15,000 होने का अनुमान है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि ढाका में भारतीय उच्चायोग और चटगांव, राजशाही, सिलहट और खुलना में सहायक उच्चायोग भारतीय नागरिकों की स्वदेश वापसी में सहायता कर रहे हैं।

एक बयान में कहा गया है, स्थानीय अधिकारियों के साथ समन्वय में, भारत–बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा तक सुरक्षित यात्रा की सुविधा प्रदान करने के लिए उच्चायोग और सहायक उच्चायोगों द्वारा उपाय किए जा रहे हैं। बयान के अनुसार, विदेश मंत्रालय अपने नागरिकों की सुगम यात्रा सुनिश्चित करने के लिए नागर विमानन, आव्रजन, भूमि बंदरगाहों और बीएसएफ अधिकारियों के साथ भी समन्वय कर रहा है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारतीय उच्चायोग और सहायक उच्चायोग बांग्लादेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाई कर रहे 4 हजार से अधिक छात्रों के साथ नियमित संपर्क में हैं तथा उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान कर रहे हैं। नेपाल और भूटान के छात्रों को भी अनुरोध पर भारत में प्रवेश करने में सहायता की गई है। विदेश मंत्रालय ने कहा, आवश्यकतानुसार, चयनित भूमि पारगमन बिंदुओं के माध्यम से स्वदेश आने के दौरान सड़क मार्ग से उनकी यात्रा के लिए सुरक्षा की भी व्यवस्था की गई है। मंत्रालय ने कहा, ढाका में उच्चायोग बांग्लादेश के नागर विमानन अधिकारियों और वाणिज्यिक एयरलाइनों के साथ समन्वय कर रहा है ताकि ढाका और चटगांव से भारत के लिए निर्बाध उड़ान सेवाएं सुनिश्चित की जा सकें, जिनका उपयोग हमारे नागरिक स्वदेश लौटने के लिए कर सकते हैं।

नीट यूजी-2024 : उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद प्रकाशित किया गया परिणाम

एनटीए ने जारी किया नीट-यूजी का परीक्षा परिणाम

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय के आदेश का पालन करते हुए राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने नीट यूजी–2024 की परीक्षा में शामिल सभी अभ्यर्थियों के परिणाम शहर और परीक्षा केंद्र स्तर पर शनिवार को अपनी बेवसाइट पर जारी कर दिये। स्नातक स्तर के मेडिकल और अन्य पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए पांच मई को आयोजित राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा 2024 की परीक्षा में शामिल सभी अभ्यर्थियों के परिणाम शहर और परीक्षा केंद्र स्तर पर विद्यार्थियों की पहचान उजागर किए बिना बेवसाइट पर डाल दिये गये हैं। यह परीक्षा कथित अनियमितताओं को लेकर जांच के घेरे में है। नीट–यूजी के परिणाम पांच जून को घोषित किए गए थे, लेकिन उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद इन्हें इस प्रारूप में प्रकाशित किया गया है।

जहां विवाद वहीं का नहीं जारी हुआ परिणाम: नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से परिणाम आधिकारिक वेबसाइ पर अपलोड कर दिया गया है। अभी उन केन्द्रों का परिणाम नहीं जारी किया गया है, जहां पर पेपर लीक होने का मामला सामने आया था। क्योंकि अभी इस मामले में जांच चल रही है। अन्य परीक्षार्थियों के भविष्य को देखे हुए सेंटर्स के अनुसार परिणाम जारी हुआ है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने 18 जुलाई को एनटीए को निर्देश दिया था कि वह 20 जुलाई को दोपहर 12 बजे तक नीट यूजी के नतीजे घोषित करे।

इसी साल पांच मई को हुई थी परीक्षा: इसी साल बीते 5 मई को नीट की परीक्षा आयोजित की गई थी, इसमें 23 लाख 33 हजार अभ्यर्थी शामिल हुए। परीक्षा के बाद से ही पेपर लीक और गड़बड़ियों की बात उठने लगी थीं। सुप्रीम कोर्ट में इससे जुड़ी दो दर्जन से ज्यादा याचिकाएं लंबित हैं, जिनमें पूरी परीक्षा रद्द कर इसे नए सिरे से कराने और कोर्ट की निगरानी में गड़बड़ियों की जांच कराने की मांग की गई है। अभी मामला चल रहा है।

एनटीए का कहना है कि पेपर लीक की ज्यादा घटना नहीं : एनटीए का कहना है कि पेपर लीक और गड़बड़ी की कुछ चुनिंदा ही घटनाएं हैं। कोई सिस्टेमेटिक फेल्योर नहीं है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने छात्रों के वकील से कहा कि आपको साबित करना होगा कि परीक्षा में व्यापक तौर पर गड़बड़ियां हुई हैं और पेपर लीक का व्यापक प्रभाव हुआ है, जिसके कारण दोबारा परीक्षा कराए जाने की जरूरत है।

उच्चतम न्यायालय प्रश्नपत्र लीक सहित परीक्षा कराने में कथित अनियमितताओं के संबंध में कई याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। न्यायालय ने अपने आदेश में कहा था कि अभ्यर्थियों की पहचान उजागर नहीं करते हुए परिणाम घोषित किए जाएं। उसने कहा था कि वह यह पता लगाना चाहता है कि कथित विवादित केंद्रों पर परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों को अन्य स्थानों पर परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों की तुलना में अधिक अंक तो नहीं मिले हैं। इस मामले में अगली सुनवाई 22 जुलाई को होगी। नीट–यूजी परीक्षा पांच मई को 571 शहरों के 4,750 केंद्रों पर आयोजित की गई थी, जिनमें 14 विदेशी शहर भी शामिल हैं। इसमें 24 लाख से अधिक अभ्यर्थियों ने हिस्सा लिया था।

सीबीआई ने तीन और किया गिरफ्तार

पटना। नीट-यूजी पेपर लीक मामले में सीबीआई ने भरतपुर मेडिकल कॉलेज के दो छात्रों समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार मेडिकल छात्रों की पहचान कुमार मंगलम बिश्नोई और दीपेंद्र कुमार के रूप में हुई है। सीबीआई सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार टेक्निकल सर्विलेंस टीम ने परीक्षा के दिन उनके हजारीबाग में मौजूद होने की पुष्टि की है। गिरफ्तार किया गया दूसरा शख्स शशि कुमार पासवान एक ऑलराउंडर है जो कि सरगना को हर तरह की मदद मुहैया करा रहा था।

एनएमसीएच में डेंगू के चार नए मरीज मिले

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में शनिवार को डेंगू के 14 नमूना की जांच की गई। इसमें चार डेंगू संक्रमित मरीज मिला है। माइक्रोबायोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो संजय कुमार ने बताया कि संक्रमित डेंगू मरीजों में मेहंदीगंज के दीपनगर का 15 वर्षीय किशोर, बख्तियारपुर के 24 वर्ष का युवक, धनरुआ का 20 वर्ष की महिला, गया के 32 वर्ष का युवक डेंगू संक्रमित है। अस्पताल के अधीक्षक डॉ विनोद कुमार सिंह और उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार ने बताया कि अस्पताल में 30 बेड डेंगू मरीज के लिए आरक्षित है। इसमें पांच वार्ड शिशु रोग विभाग में है। अस्पताल में डेंगू मरीजों के उपचार की पूरी व्यवस्था की गयी है। संक्रमित मरीज ओपीडी में इलाज कराने आए थे। शुक्रवार को भी जांच में डेंगू से पीड़ित तुम्हारा पांच मरीज पाए गए थे।

सभी प्रदेशों में मतदाता सूची से हिन्दू मतदाताओं के हटाए गए नाम : गिरिराज

प्रात : किरण

पटना। केंद्रीय कपड़ा उद्योग मंत्री और बेगूसराय के सांसद गिरिराज सिंह ने देश के करीब सभी प्रदेशों में मतदाता सूची में बड़े पैमाने में योजनाबद्ध तरीके से गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए इसकी जांच कराने की आवश्यकता बताई है। गिरिराज सिंह ने शनिवार को कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान बड़ी संख्या में हिन्दू मतदाता वोट करने से वंचित रह गए। उनके नाम काट दिए गए थे। बड़े पैमाने पर हिन्दू मतदाता का मतदाता सूची में ही नाम के आगे डिलीट लिख दिया गया। मतदाता पहचान पत्र रहने के बाद भी मतदाता सूची में नाम नहीं था। जबकि दूसरी तरफ मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में मतदाता सूची में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गयी है। उन्होंने साफ लहजे में कहा कि यह कोई एक प्रदेश का मामला नहीं है। विधानसभा फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली का गहन पुनरीक्षण 2002 के बाद नहीं हुआ है। उन्होंने बेगूसराय संसदीय और झारखंड के राजमहल विधानसभा को एक मॉडल के रूप में पत्रकारों को उपलब्ध कराते हुए कहा कि राजमहल के एक बूथ में 2019 में 672 मतदाता थे, जबकि 2024 में इस बूथ पर 1461 मतदाता हो गए और एक बूथ को दो बूथ में बदल दिया गया। सिंह ने इसे वोट जिहादऔर बूथ जेहाद बताते हुए कहा कि यह केवल दो प्रदेशों का मामला नहीं है, यह सभी प्रदेशों में हो रहा है। उन्होंने कहा कि वे बिहार में इसको लेकर सभी बूथों का एक सर्वे करवा रहे हैं जिसकी रिपोर्ट भी आने लगी है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि चुनाव आयोग और सभी राज्यों के निर्वाचन आयोग 2014 से लेकर 2024 तक के सभी बूथों पर मतदाताओं की बढ़ी संख्या का तुलनात्मक अध्ययन करे तो स्थिति साफ हो जाएगी।

व्यवस्था | **इस वर्ष श्रावणी मेला 22 जुलाई से 19 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा**

श्रावणी मेला : श्रद्धालुओं को सभी प्रकार की उत्तम व्यवस्था मिलेगी : नीतीश मिश्रा

प्रात : किरण

पटना। पर्यटन विभाग द्वारा श्रावणी मेला 2024 में श्रद्धालुओं को सभी प्रकार की उत्तम व्यवस्था मिलेगी। सुल्तानगंज के बाबा अजगैबीनाथ से गंगा जल लेकर बाबा वैद्यनाथ धाम, देवघर में जलाभिषेक की पवित्र यात्रा से मेरे बचपन की स्मृतियां जुड़ी हुई है, मैं उन कमियों को व्यक्तिगत रूप से स्वयं भी जानता हूं, जिसे दूर करने की आवश्यकता है।

श्रावणी मेला को बेहतर बनाने के लिए पर्यटन विभाग ने तीन माह पूर्व संयुक्त सचिव रैंक के अधिकारी के नेतृत्व में हर 25 किमी की दूरी पर कमियों को चिह्नित करने हेतु कुल चार टीमों का गठन किया था ताकि गत वर्ष के अनुभवों को देखते हुए इस वर्ष कांवरियों को ज्यादा गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं प्रदान की जा सके। टीम ने जो रिपोर्ट दी है, उसके अनुसार कांवरियों के आवासन के लिए अधिक व्यवस्था, कांवर स्टैंड की संख्या में यथोचित वृद्धि, टेंट सिटी में साफ–सफाई की बेहतरीन व्यवस्था, टेंट सिटी में रोज चादर बदलने और परिसर को प्लास्टिक आदि से मुक्त रखने आदि की सलाह दी गयी थी, इसके अनुरुप इस बार विभिन्न सुधार किए गए हैं, जिसके बाद इस वर्ष श्रावणी मेला और भी आकर्षक होगा। उक्त बातें पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने शनिवार को सूचना भवन में श्रावणी मेला की तैयारियों को लेकर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही। उन्होंने मीडियाकर्मियों को बताया कि इस वर्ष श्रावणी मेला दिनांक 22 जुलाई से 19 अगस्त के बीच आयोजित किया जाएगा। गत वर्ष कुल 75 लाख श्रद्धालुओं का आगमन हुआ था, इस वर्ष ज्यादा से ज्यादा प्श्रद्धालु यहां पहुंचे, इस हेतु सभी प्रकार की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालुओं की वैज्ञानिक गणना हेतु पीपुल काउंटिंग कैमरा मशीन का अधिष्ठापन किया गया है। पर्यटन सचिव अभय कुमार सिंह ने बताया कि सभी टेंट सिटी में काँवरियों को बिहार के लोक संस्कृति से परिचय कराने एवं मनोरंजन हेतु प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कराया जायेगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति हेतु स्टेज, लाईट एंड साउंड आदि का निर्माण बिहार राज्य

पर्यटन विकास निगम के माध्यम से कराया गया है। कांवरिया पथ पर कुल 200 नए कांवर स्टैंड का निर्माण कराया गया है। डाक बम के लिए पंजीकरण काउंटर की स्थापना की गयी है। सुरक्षा हेतु विभिन्न स्थानों पर सीसीटीवी का अधिष्ठापन किया गया है।

कांवरिया पथ पर जगह–जगह पर पानी का टैंकर एवं सक्शन पंप की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी है। उन्होंने बताया कि काँवरिया पथ पर 12 अस्थायी पर्यटक सूचना केन्द्रों का निर्माण किया गया है, जहां प्रशिक्षित पर्यटक गाईडों की प्रतिनियुक्ति कर आगत काँवरियों/श्रद्धालुओं को सूचना, सुविधा एवं सहयोग प्रदान किया जायेगा। अस्थाई पर्यटक सूचना केन्द्र : सुल्तानगंज स्टेशन, सुईया, बस स्टैंड–सुल्तानगंज, अबरखा, सुल्तानगंज, कटोरिया, धांधी बेलारी, इनारावरण, कुमरसार, दुम्मा, धौरी व बासुकीनाथ पथ पर बनाए गए हैं। सुल्तानगंज में प्रशासनिक ब्लॉक और मेडिकल ब्लॉक का निर्माण किया गया है। सुल्तानगंज में रोज गंगा जी की भव्य आरती होगी, श्रद्धालुओं के बैठने के लिए पगोडा का भी निर्माण कराया गया है। पर्यटन निदेशक विनय कुमार राय ने बताया कि श्रावणी मेला, 2024 के अवसर पर आगत काँवरियों को सुविधा एवं सहयोग प्रदान करने हेतु श्रावणी मेला से संबंधित ब्रोशर का मुद्रण कराया गया है, जिसे श्रद्धालुओं के बीच निःशुल्क वितरण कराया जायेगा। मौके पर श्रावणी मेला पर पर्यटन विभाग द्वारा तैयार डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई गई।

कांवरियों के लिए 1200 बेड की टेंट सिटी का कराया गया है निर्माण

श्रावणी मेला के अवसर पर श्रद्धालुओं के विश्राम और आवासन हेतु भागलपुर के सुल्तानगंज और धोबई में पहली बार 200-200 बेड की टेंट सिटी बनायी गयी है, वहीं बाँका के अबरखा में 600 बेड और मुंगेर के खैरा में 200 बेड यानी कुल 1200 बेड की टेंट सिटी का निर्माण कराया गया है। सभी स्थानों पर प्रबंधक की नियुक्ति की गयी है, जिससे आवासीय सुविधा का बेहतर प्रबंधन हो सके। सभी टेंट सिटी में सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति, स्वच्छता संबंधी सुविधाएं, जिसमें प्रत्येक दिन हर प्रयोग के बाद चादर-बेडशीट को बदलने का प्रावधान किया गया है, चिकित्सा सुविधाएं, स्वच्छ महिला-पुरुष शौचालय, पेयजल, पंखे की उपलब्धता एवं अबाधित विद्युत आपूर्ति हेतु साइलेंटर जेनरेटर की व्यवस्था रहेगी। ट्वायलेट्स की लगातार हर 5-10 प्रयोग के उपरांत साफ-सफाई की जाती रहेगी। पूरा परिसर तंबाकू व प्लास्टिक मुक्त रखने की अपील उन्होंने श्रद्धालुओं से की है। उन्होंने बताया कि कांवरिया पथ पर सभी स्थायी पर्यटकीय संरचनाओं को न केवल श्रावणी मेला बल्कि सालों भर आवासन, कैफेटेरिया, सोलर लाइट से युक्त रखा जाएगा। श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु 24 घंटे पटना के पर्यटन निगम मुख्यालय में कॉल सेंटर टॉल फ्री नंबर 18003097677 का संचालन किया जाएगा। बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम परिसर में कुल तीन शिफ्ट में विभागीय कर्मी श्रद्धालुओं की सुविधाओं का ख्याल रखते हुए उनके सवालों का समाधान करेंगे। श्रद्धालुओं को मेला से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं यथा आवासन, चिकित्सा व्यवस्था, पुलिस, महत्वपूर्ण दूरभाष संख्या आदि को संकलित कर बिहार पर्यटन मोबाईल एप एवं विभागीय वेबसाईट में समाहित किया गया है। बिहार पर्यटन मोबाईल एप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है।

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित कमला पुजारी का निधन

प्रात : किरण

भुवनेश्वर/एजेंसी। पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित और प्रख्यात जैविक किसान कमला पुजारी का शनिवार को किडनी से संबंधी बीमारी से निधन हो गया। सीएमओ के सूत्रों ने यह जानकारी दी। वह 74 वर्ष की थीं और उनके दो बेटे तथा दो बेटियां हैं। पुजारी को किडनी से संबंधित बीमारी को लेकर दो दिन पहले कटक के एससीबी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती कराया गया था तथा उनका उपचार चार सदस्यीय चिकित्सकीय टीम कर रही थी। उन्होंने शनिवार की सुबह दम तोड़ दिया। इससे पहले उन्हें तबियत बिगड़ने पर जेपुर जिला मुख्यालय अस्पताल से कटक लाया गया था। मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया और उनका अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किए जाने की घोषणा की। मांझी ने फोन पर पुजारी के पुत्र टंकाधर पुजारी से भी बात की। ओडिशा विधानसभा में विपक्ष के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने एक बयान में कहा, ह्यह्यकृषि के क्षेत्र में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।

एम्स पटना में अत्याधुनिक प्रसवपूर्व निदान सुविधा का उद्घाटन

मातृ एवं भ्रूण स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए संस्थान प्रतिबद्ध : जी के पाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। प्रसवपूर्व देखभाल के लिए एक अभूतपूर्व विकास में, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, पटना ने दुर्लभ बीमारियों के लिए अपनी अत्याधुनिक प्रसवपूर्व निदान सुविधा का उद्घाटन किया। भव्य उद्घाटन समारोह का नेतृत्व एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक और सीईओ प्रोफेसर डॉ. गोपाल कृष्ण पाल ने किया। एम्स पटना के रेडियोडायग्नोसिस विभाग को एमनियोसेंटेसिस, कोरियोनिक विलस बायोप्सी, फेटोस्कोपी, भ्रूण की त्वचा या अंग बायोप्सी, या किसी भी निर्दिष्ट प्रक्रिया सहित भ्रूण हस्तक्षेप प्रक्रियाओं को करने के लिए प्रमाणित किया गया है। नव स्थापित सुविधा अत्याधुनिक नैदानिक सेवाएं प्रदान करने के लिए तैयार है, विशेष रूप से दुर्लभ आनुवंशिक और जन्मजात स्थितियों को लक्षित करती है जो गर्भवती परिवारों को प्रभावित करती हैं। यह पहल दुर्लभ बीमारियों का शीघ्र पता लगाने और प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण छलांग का प्रतिनिधित्व करती है जो समय पर हस्तक्षेप करने और भावी माता-पिता के लिए सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। डॉ. गोपाल कृष्ण पाल, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व और चिकित्सा देखभाल को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता को व्यापक रूप से मान्यता मिली है, ने आधिकारिक तौर पर इस सुविधा का उद्घाटन किया। यह आयोजन एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो नवीन प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञ देखभाल के माध्यम से मातृ एवं भ्रूण स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए संस्थान के समर्पण को उजागर करता है। यह सुविधा नवीनतम नैदानिक उपकरणों और प्रौद्योगिकी से सुसज्जित है, जिसमें उन्नत आनुवंशिक परीक्षण, उच्च-रिजॉल्यूशन इमेजिंग और व्यापक परामर्श सेवाएं शामिल हैं। केंद्र की बहु-विषयक टीम में बाल रोग विशेषज्ञ, आनुवंशिकी विशेषज्ञ, प्रसूति विशेषज्ञ, रेडियोलॉजिस्ट और परामर्शदाता शामिल हैं जो दुर्लभ बीमारियों की जटिलताओं से निपटने वाले परिवारों को व्यक्तिगत देखभाल और सहायता प्रदान करने के लिए समर्पित हैं। डॉ. पाल ने नई सुविधा के बारे में अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, इस प्रसव पूर्व निदान सुविधा का उद्घाटन गर्भवती परिवारों को उच्चतम मानक की देखभाल प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। हम शीघ्र निदान और हस्तक्षेप के गहन प्रभाव को समझते हैं, और हमें एक समर्पित स्थान की पेशकश करने पर गर्व है जहां परिवारों को आवश्यक सहायता और विशेषज्ञता प्राप्त हो सकती है। उद्घाटन समारोह में डॉ. प्रेम कुमार, डीन अकादमिक, डॉ. अनुप कुमार, चिकित्सा अधीक्षक, डॉ. ट्रिबुवब्न कुमार और दुर्लभ रोगों के सदस्य सचिव डॉ. प्रताप कुमार पात्रा सहित कई प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों की उपस्थिति से भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा डॉ. अजीत कुमार सक्सेना, डॉ. मोनिका अनंत, डॉ. बिनोद कुमार पति, डॉ. मीनाक्षी तिवारी, डॉ. बंदन कुमारी, डॉ. सुरभि, डॉ. आनंद राय, डॉ. संजीव कुमार भी उपस्थित थे, जो इसके सदस्य हैं।

एम्स पटना को मिली पर्यावरण मंजूरी : निर्माण कार्य में आएगी तेजी

पटना। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) पटना को इसके कैंपस और आवासीय सुविधाओं के प्रस्तावित विस्तार के लिए पर्यावरण मंजूरी मिल गई है। यह महत्वपूर्ण स्वीकृति बिहार राज्य पर्यावरण प्रभाव आकलन प्राधिकरण द्वारा जारी की गई है और यह परियोजना के लिए एक प्रमुख मील का पत्थर है। पर्यावरण मंजूरी एक्अ अधिसूचना 2006 के प्रावधान के तहत दी गई थी, जिसका विवरण एउ पहचान संख्या एउ23इ039इफ्1 10400 के तहत दर्ज है। इस स्वीकृति से निर्माण गतिविधियों में तेजी आएगी और परियोजना को तेजी से आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक, डॉ. (प्रो.) गोपाल कृष्ण पाल ने मंजूरी पर अपनी संतुष्टि व्यक्त करते हुए कहा, ्यह एम्स पटना के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यह विस्तार न केवल हमारी चिकित्सा अवसंरचना को बढ़ाएगा बल्कि हमारे कर्मचारियों और छात्रों के लिए बेहतर आवासीय सुविधाएं भी प्रदान करेगा। हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि विकास उच्चतम पर्यावरण मानकों के अनुसार हो ्विस्तार परियोजना में नए चिकित्सा सुविधाओं, अनुसंधान केंद्रों और आवासीय क्षेत्रों का विकास शामिल है, जिसका उद्देश्य एम्स पटना की बढ़ती आवश्यकताओं का समर्थन करना है। यह परियोजना ्टाउनशिप और क्षेत्र विकास परियोजनाओं् की श्रेणी के अंतर्गत आती है और विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने की संस्था की दृष्टि के अनुरूप है। इस मंजूरी के साथ, एम्स पटना एक प्रमुख चिकित्सा केंद्र बनने के लिए तैयार है, जो क्षेत्र में एक प्रमुख स्वास्थ्य सेवा संस्थान के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करेगा। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और रएक्अअ, बिहार को उनके समर्थन और समय पर स्वीकृति के लिए धन्यवाद देते हैं।

एम्स पटना में रोबोटिक घुटना रिप्लेसमेंट कार्यशाला आयोजित

पटना। रोबोट और एआई अब भविष्य नहीं बल्कि आज की दुनिया में एक वास्तविकता हैं। चिकित्सा सहित हर क्षेत्र में रोबोट का उपयोग किया जा रहा है। इस क्षेत्र के लोगों के लिए अत्याधुनिक आधुनिक तकनीक और नवाचार लाने में अग्रणी होने के नाते, एम्स पटना ने बिहार के लोगों के लिए संपूर्ण घुटने और कूल्हे के प्रतिस्थापन जैसी परिष्कृत सर्जरी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ते हुए और अपने स्वयं के निर्धारित मानकों को पार करते हुए, प्रोफेसर डॉ. सुदीप कुमार और प्रोफेसर डॉ. अनुप कुमार के मार्गदर्शन में एम्स पटना के हड्डी रोग विभाग का लक्ष्य निकट भविष्य में विभाग में रोबोट की सहायता से पूर्ण घुटना प्रतिस्थापन शुरू करना है। इसकी शुरूआत 20 जुलाई, 2024 को विभाग में सॉबोन मॉडल पर एक व्यावहारिक कार्यशाला के साथ हुई, जिसमें प्रोफेसर डॉ. सुदीप कुमार और अन्य सम्मानित संकायों के मार्गदर्शन में रेजिडेंट डॉक्टरों को रोबोटिक घुटने के प्रतिस्थापन में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। रोबोटिक घुटना रिप्लेसमेंट पारंपरिक घुटना रिप्लेसमेंट सर्जरी का एक उन्नत संस्करण है, जिसमें रोबोटिक सहायता से, हड्डी के कट के संरेखण और इम्प्लांट प्लेसमेंट में त्रुटि के एक संकीर्ण क्षेत्र के साथ सुधार किया जाता है, जिससे समग्र रूप से बेहतर इम्प्लांट प्लेसमेंट और अधिक प्राकृतिक एहसास होता हैप्रत्यारोपित घुटने से प्रत्यारोपण की लंबी उम्र के साथ समग्र रूप से बेहतर परिणाम प्राप्त हुए।इसके अलावा, चल रहे शोध से ऑपरेशन के बाद दर्द में कमी, संक्रमण दर और गतिविधि में जल्दी वापसी के रूप में कुछ सबूत मिले हैं। उल्लेखनीय है कि ये रोबोट केवल सर्जरी की योजना बनाने और उसे निष्पादित करने में सर्जन की सहायता करते हैं और सर्जन की जगह नहीं लेते हैं, वास्तव में इसे निष्पादित करने के लिए सर्जन की ओर से एक उच्च विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, मानवीय स्पर्श खोया नहीं है, बल्कि तकनीक बढ़ी है।

संक्षिप्त खबरें

पौधा लगा पर्यावरण बचाने का संकल्प

पटना सिटी (प्राकि)। किसलय इंटरनेशनल स्कूल और किड्स एंड किड्स एजुकेशन प्वाइंट के तत्वावधान में सावन मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जीतू लाल लेन में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों ने विभिन्न रूप धारण कर समाज के अंदर संदेश देने का काम किया। फल, सब्जी व पौधे के रूप में, ताकि हम अधिक से अधिक हरियाली के लिए पौधे लगाएं। यह संदेश किसलय इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों द्वारा दिया गया। स्कूल की प्राचार्य सरोज जायसवाल ने बच्चों के साथ उनके परिवार वालों से भी आग्रह किया कि अधिक से अधिक पौधा लगाएं। स्कूल के निदेशक बिनोद किसलय ने भी बच्चों को पौधा लगा उसकी सेवा करने का आवाहन किया, ताकि म सबों को शुद्ध वातावरण मिल सके। सभी शिक्षक और शिक्षिकाओं से भी आग्रह किया गया कि अधिक से अधिक पौधा लगाएं।

साई पालकी यात्रा निकाली गई

दानापुर नगर के अंतर्गत छावनी परिषद स्थित साई आंगन से साईं पालकी यात्रा के साथ गुरू पुर्णिमा उत्सव शनिवार से प्रारंभ हुआ। छावनी परिषद परिसर स्थित साईं अंगना से गाजे बाजे के साथ पालकी शोभायात्रा निकाली गयी। ऊंट घोड़ा व गाजे बाजे के साथ निकली पालकी यात्रा में शामिल श्रद्धालु बाबा की पालकी कंधे पर लेकर निकले। फूलो से सजे पालकी में बाबा की तस्वीर लगी थी। बाबा की पालकी को भारी संख्या में श्रद्धालु कांधे लगाने में जुटे रहे। पालकी यात्रा में शामिल रथ व सिंहासन पर विराजमान साईं बाबा की आकर्षित रूप से सजी चित्र के साथ निकली झांकी की शोभा देखते ही बन रही थी। इससे पूर्व बाबा की धूप आरती किया गया। बाबा के जयकारे के साथ श्रद्धालु पालकी को कंधे पर लिये आगे बढते रहे। पालकी यात्रा में विधान पार्षद अनामिका सिंह पूर्व पार्षद सह भाजपा नेता संजय यादव समेत भारी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। पालकी के साथ भक्ति गीत पर श्रद्धालु झुमते हुए जयकारा लगाते रहे। पालकी के आगे सड़क पर झाड़ू व पानी का छिड़काव करते श्रद्धालु चलते रहे। शोभायात्रा सदर बाजार, थानापर, मछुआटोली, इमलीतल, चौधराना रोड, तकियापर, गाभतल, गोलापर, बसपड़ाव होते हुए साईं अंगना पहुंच सम्पन्न हुआ।

सूचना के दो घंटे में बालक को पुलिस ने किया बरामद

पटना सिटी (प्राकि)। मालसलामी थाना की पुलिस को सूचना मिली कि माधव मिल के पास रहने वाले दंपति माधुरी देवी पति गुरु चरण महतो के 14 साल का पुत्र 18 जुलाई की शाम से लापता है। वह सब अपने बेटे की काफी खोजबीन किए, मगर कोई पता नहीं चला। इसके बाद 20 जुलाई को पूर्वाह्न 10 बजे थाना आकर बेटे के लापता होने के संबंध में लिखित सूचना दिए। थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने कहा कि हालांकि उन्होंने दंपति को कहा भी कि जब आपका पुत्र दो दिन पहले से लापता है, तब आप आज क्यों, पहले आकर सूचना देनी चाहिए थी। हालांकि घटना की गंभीरता को देखते हुए त्वरित कार्रवाई की गई। सूचना मिलने के दो घंटे के अंदर माधुरी देवी के पुत्र मनीष कुमार को बरामद कर लिया गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि मनीष भटकता हुआ गायघाट के पास स्थित करनालगंज दुर्गा मंदिर के पास चला गया था। वह आसपास में ही इधर-उधर भटक रहा था। उसे बरामद करने के साथ ही उसके माता-पिता को बुलाकर पुलिस ने सुपुर्द कर दिया।

दोहरे हत्या कांड के दो आरोपित शनिवार को न्यायालय में किया आत्मसमर्पण

दानापुर खगौल थाना क्षेत्र के अंतर्गत मैरिज हॉल के पास दोहरे हत्या कांड के दो आरोपित ने शनिवार को न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस द्वारा लगातार बनाई जा रही दबिश के बाद दोनो ने आत्मसमर्पण कर दिया। जिसके बाद खगौल पुलिस ने राहत की सांस ली है। घटना के बाद से लगातार आरोपित शुभम सिंह एवं विक्की यादव के गिरफ्तारी को लेकर अलग अलग ठीकाने पर छापेमारी में लगी थी। आत्मसमर्पण के बाद खगौल पुलिस आरोपित शुभम सिंह एवं विक्की यादव को रिमांड पर लेने की कार्रवाई में जुट गयी है। थानाध्यक्ष सुशील कुमार ने बताया कि रूद्रा मैरेज हॉल में शादी समारोह में बिन बुलाये शामिल हुए बदमाशो ने जमुई के मलयपुर निवासी गोल्डन सिंह एव भागलपुर शाहकुंड थाना क्षेत्र मानिकपुर निवासी बहनोई सर्वेन्द्र सिंह की गोली मार कर हत्या कर दी थी। जिसमें मृतक के भाई गोलू कुमार सिंह के ब्यान पर मामला दर्ज कर रूपसपुर निवासी विक्की यादव व आरा के मुल निवासी वर्तमान में गोलारोड निवासी शुभम यादव समेत अज्ञात आठ लोगो को आरोपित किया था। घटना के बाद से दोनो फरार चल रहे थे। दोनो के गिरफ्तारी को लेकर आरा रोहतास समेत अन्य ठीकानो पर छापेमारी की गयी। लगातार दबिश बनायी जा रही थी। न्यायालय से वारंट कल लिया गया था। जिसके बाद दोनो ने न्यायालय में आत्म समर्पण किया है।

पूर्व-मध्य रेल के जीएम छत्रसाल सिंह ने दरबार साहिब में मत्था टेका

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह सपत्नीक सिखों के दूसरे प्रमुख धार्मिक स्थल तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब पहुंचे। यहां उनके साथ उनके सचिव सुमन कुमार, वरीय मंडल वाणिज्य प्रबंधक (दानापुर) के अभिनव सिद्धार्थ भी थे। यहां आने पर तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह के अलावा प्रबंधक हरजीत सिंह, प्रेम सिंह, राजेश शुक्ला व स्थानीय रेल कर्मी नितिन व्यास ने उन सबों का स्वागत किया। इसके बाद वे सभी सीधे दरबार साहिब में गए। यहां गुरु के समक्ष नतमस्तक हुए। दरबार साहिब की परिक्रमा किया। इस दौरान ग्रंथी के द्वारा उन्हें आशीर्वादस्वरूप सरोपा और प्रसाद प्रदान किया गया। उन्हें यहां का इतिहास से अवगत कराने के साथ ही प्रमुख धरोहरों का भी दर्शन कराया गया। इसके बाद वीआईपी लॉउंज में अध्यक्ष और कनीय उपाध्यक्ष ने उन्हें तख्तश्री पटना साहिब से जुड़े लिटरेचर और श्री साहिब (तलवार) प्रदान किया। इस दौरान अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही ने महाप्रबंधक पूर्व-मध्य रेलवे छत्रसाल सिंह को कहा कि वह आपके कार्यालय में आकर पटना साहिब स्टेशन एवं सिख यात्रियों की जरूरत पर चर्चा करेंगे। कारण कि उनका कहना था कि यह विशुद्ध रूप से उनका अपना गुरु घर के प्रति निष्ठा जताना था। श्री छत्रसाल सिंह ने भी कहा कि यहां आकर उन्हें सुख और आनंद की अनुभूति हुई है। वह काफी दिनों से यहां आकर दर्शन करने को लालायित थे। आज यह इच्छा पूरी हुई है। भविष्य में कोशिश करेंगे कि गुरु घर और यहां के नजदीक स्टेशन पटना साहिब के बारे में जो भी संभव हो, यात्रियों की सुविधा प्रदान करने की कोशिश करेंगे।

गुरु पूर्णिमा आज, लौटेगी रथयात्रा

पटना सिटी (प्राकि)। आषाढ़ माह की गुरु पूर्णिमा रविवार को है। इसी दिन भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा भी वापस मूल स्थान पर लौटेगी। पूर्णिमा को ले धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया जाएगा। सोमवार से सावन की शुरूआत हो रहा है। गोपीनाथ जी गली स्थित 129 वर्ष प्राचीन जगन्नाथ मंदिर में पुजारी आचार्य पंडित रामानंद पांडेय की देखरेख में लल्लू बाबू के कूचा स्थित मंदिर में रह रहे भगवान जगन्नाथ की पूजा-अर्चना व धार्मिक अनुष्ठान के बाद विशेष श्रृंगार में भगवान कालिया नाग पर भक्तों को दर्शन दिए। आचार्य सुरेश मिश्र ने पूजा अर्चना और कृष्णा पांडेय ने भजन कीर्तन किया। सचिव गणेश प्रसाद रोहगती, हर्षकृष्ण रोहगती, सचिच्दानंद शर्मा, अंबुज रोहतगी, कृष्ण कुमार सिन्हा, प्रह्लाद अग्रहरि, कृष्णा जायसवाल, संजीव सिन्हा, अखिल, चंदन सिंह व विशाल समेत अन्य सक्रिय हैं। रविवार को रथयात्रि की वापसी होगी। दीवान मुहल्ला नौजर घाट स्थित 214 वर्ष प्राचीन जगन्नाथ बाड़ी स्थित जगन्नाथ मंदिर में पुजारी आचार्य विष्णुकांत झा देखरेख में धार्मिक अनुष्ठान हुआ। रविवार को वहां पर रथयात्रा वापसी पर अचल उत्सव का आयोजन किया गया है।

गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की नींव : प्रो डॉ पूनम

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गुरु पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर आरपीएम कॉलेज में गुरु-शिष्य परंपरा पर संगोष्ठी का आयोजन आईक्यूएसी को-ऑर्डिनेटर डॉ रजिया नसरीन एवं दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ नागेंद्र मिश्र के द्वारा किया गया। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज की प्राचार्या प्रोडॉ पूनम के द्वारा किया गया। उन्होंने छात्राओं को गुरु पूर्णिमा की बधाई देते हुए कहा कि किसी भी व्यक्ति की सफलता और उनके जीवन में सफल होने के लिए गुरु का होना जरूरी है। गुरु ही एकमात्र व्यक्ति है, जो अपने शिष्य को अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में इस दुनिया का परिचय करवाता है। शिष्य का कर्तव्य गुरु की आज्ञा का पालन करना तथा उनकी शिक्षाओं से सीखना, उनके ज्ञान का लाभ उठाना है। उन्होंने यह भी कहा कि गुरु-शिष्य संबंध न केवल शिक्षा के क्षेत्र में, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। उन्होंने छात्राओं को अपने गुरु का सम्मान करने और उनसे निरंतर सीखते रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति अपना गुरु स्वयं बन सकता है। कार्यक्रम में छात्राओं और शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर नागेंद्र मिश्र ने इस परंपरा के ऐतिहासिक महत्व और इसके वर्तमान संदर्भों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की नींव है, जो ज्ञान के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों को गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता और उसके विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया गया। शिक्षकों ने भी अपने अनुभव साझा किए और छात्राओं के साथ अपने रिश्तों को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की। विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उनके जीवन में गुरुओं का मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण है और यह परंपरा उनके समग्र विकास में सहायक है। कार्यक्रम में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग की छात्रा रितिका कुमारी ने गुरु-शिष्य परंपरा पर विचार व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन आईक्यूएसी को-ऑर्डिनेटर डॉ रजिया नसरीन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्राचीन इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ मनोज कुमार ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकों में डॉ किरण कुमारी, डॉ नीलम, डॉ सुषमा, डॉ मनोज कुमार, डॉ प्रीति कुमारी, डॉ सीमा कुमारी, डॉ ईना बहन, डॉ प्रियंका कुमारी, डॉ दशरथ मंडल, डॉ अमोल कुमार, डॉ नीना, डॉ मीनू मिंज, डॉ सत्येंद्र शर्मा आदि उपस्थित थे।

मोबाइल से दूरी बना योग व एकाग्र हो अध्ययन करना जरूरी : डॉ रितु

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, नया टोला के सभागार में विद्यालय के प्राचार्य राजीव कुमार की अध्यक्षता में भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी, पटना शाखा व पीएमसीएच, एनएमओ यूनिट के संयुक्त तत्वावधान में मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रेडक्रॉस सोसाइटी, पटना के सचिव डॉ मुकुल कुमार सिंह ने बताया कि यह अभियान हर विद्यालय में चलाने की योजना बनायी गई है। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता आयोजन के अलावा परिवहन सुरक्षा, आगलगी, बाढ़ आपदा, भूकम्प, स्नैक बाइट तथा अन्य जागरुकता अभियान भी क्रमशः आगे चलाने की बात कही गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रेडक्रॉस पटना के वरीय पदाधिकारी डॉ रितु रंजन, व्याख्याता, ह्यूमन राइट्स व मेंटल हेल्थ अवेयरनेस तथा डॉ अंकिता सिंह, मनोरोग विभाग, पीएमसीएच थीं। इनलोगों ने मानसिक स्वास्थ्य आयोजन के तहत छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि मोबाइल से दूरी बनाए रखना, ध्यान मुद्रा, योग व एकाग्रचित होकर अध्ययन करना आज के परिपेक्ष्य में सबसे जरूरी है। इस अवसर पर पीएमसीएच व एनएमओ के विद्यार्थी समीर, दुर्गेश कुमार, रिशु राज, साक्षी, निकेश, चांदनी, कृष्णा के अलावा आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, नया टोला की छात्राओं के साथ शिक्षक व शिक्षिका उपस्थित थीं।

आंगनवारी केंद्र पर हुआ सामाजिक अंकेक्षण का आयोजन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दुल्हिन बाजार प्रखंड अंतर्गत आंगनवारी केंद्र कुकरी बिगहा के प्रांगण में शनिवार को बाल विकास परियोजना पदाधिकारी रेणु कुमारी की उपस्थिति में सामाजिक अंकेक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें आंगनवारी केंद्र के पोषक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले लाभुक वर्ग की लगभग 50 महिलाएं शामिल हुई। आंगनवारी सेविका सरिता देवी के द्वारा उपस्थित लाभुको को आंगनवारी केंद्रों पर मिलने वाली सारी सुविधाओ से अवगत कराया गया और सभी पंजीयों का ग्रामीणों के द्वारा अवलोकन कराया गया। उन्होंने यह भी बतलाई कि प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना का फॉर्म हमारे माध्यम से भरा जाता है। पात्र लाभूक आकर अपना फॉर्म ऑनलाइन भरवा सकती है। साथ ही साथ आपके घर में यदि कोई गर्भवती महिला होती हैं तो उनका आंगनवारी केंद्र में आकर पंजीकरण कराए और नियमित टीकाकरण और वजन कराते रहें ताकी आपको आंगनवारी केंद्रों से मिलने वाली सारी सुविधाओ का लाभ मिलता रहे। इस सामाजिक अंकेक्षण में वार्ड सदस्य राजेश सिंह, प्राथमिक विद्यालय कुकरी बिगहा के शिक्षक रंजीत कुमार, आशा कार्यकर्ता सरिता देवी महिला सुपरवाइजर प्रिया कुमारी के साथ लाभुक वर्ग पुनम देवी, रीना देवी, सबिया देवी, अनुपा देवी, रजंती देवी, पुजा देवी, आशा देवी, महेश्वरी देवी, चंचला देवी, सुशीला देवी, मराक्षी देवी, शोभा देवी के साथ आंगनवारी सहायिका गुड़िया देवी उपस्थित हुई।

मो चांद उर्फ आफताब की सूचना देने वाले को पुलिस देगी 50 हजार इनाम

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना पुलिस को मोहम्मद चांद उर्फ आफताब नामक अपराधी की बेसब्री से तलाश है। हालांकि पुलिस लगातार इसकी खोज में हर स्तर पर लगी है। अनेक सूत्र को भी लगाया गया है। मगर मोहम्मद चांद पुलिस की पकड़ से दूर है। पटना पुलिस ने कहा है कि जो कोई भी इस वांछित अपराधी के बारे में पुष्ट सूचना देगा, उसे 50 हजार का इनाम दिया जाएगा। साथ ही उसकी पहचान को गोपनीय रखा जाएगा। इस संबंध में खाजेकलां थाना के थानाध्यक्ष प्रभात कुमार सक्सेना ने बताया कि मोहम्मद चांद उर्फ आफताब के रंगदारी एवं हत्या के मामले में तलाश है। जनवरी माह में बैगनवा की हत्या में यह फरार चल रहा है। रंगदारी का मामला भी इस पर है। यदि किसी को इस वांछित अपराधी के बारे में पुष्ट जानकारी हो, तो वह खाजेकलां थाना की पुलिस को 94318 22148 पर सूचना दे सकते हैं। हालांकि इसका कोई स्थायी पता नहीं है। वैसे पूर्व में यह सुल्तानगंज थाना क्षेत्र में रह रहा था, मगर वह भी उसकी अस्थायी निवास था।

मूल सेवादार कल्याण समिति को मिला सेवादारों का बहुमत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मूल सेवादार कल्याण समिति की बैठक में अधिकांश ऑफिस स्टाफ से लेकर हर तबके के कर्मचारी व सेवादारों की भागीदारी शनिवार को रही। इससे उत्साहित कल्याण समिति के अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह बंटी और महासचिव अजायब सिंह ने कहा कि बहुमत हम सबों के साथ है। जिन लोगों ने समिति को तोड़कर तदर्थ समिति बनाने का काम किया है, ऐसे लोगों को तख्तश्री कमेटी के स्टाफ ने करारा जवाब देने का काम किया है। दरअसल सेवादार कल्याण समिति की बैठक पुरानी दर्शनी ड्योढ़ी के पास समिति के अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह बंटी की अध्यक्षता और महासचिव अजायब सिंह के संचालन में हुई। बैठक में दो सौ से अधिक कर्मियों के भाग लेने पर पहले संतोष जाहिर किया गया और एकता में ही बल की बात कहते हुए कहा गया कि जिन मुट्ठी भर लोगों ने समिति को तोड़ने व कर्मियों को बरगलाने का काम करते हुए तदर्थ समिति का गठन किया है, उन सबों को आप लोगों ने करारा जवाब देने का काम किया है। बैठक के दौरान समिति के पूर्व अध्यक्ष बलराम सिंह को मुख्य संरक्षक बनाया गया। जयकारा के साथ सबो ने उनका स्वागत किया। इसके अलावा समिति की बैठक में कुछ मुद्दों को उठाया गया। इसमें कमेटी के पदाधिकारियों से मांग की गई कि ड्यूटी के दौरान यदि किसी कर्मी की मौत होती है, तो उसे पर्याप्त राशि और एक सदस्य को नौकरी दी जाए, कर्मियों के सेवानिवृत्ति के बाद उसे 5 लाख और एक सदस्य को नौकरी दी जाए, तख्तश्री परिसर से बाहर रहने वाले कर्मियों का कमरे का किराया डेढ़ हजार रुपया बढ़ाने की बात भी कही गई। साथ ही कहा गया कि तख्तश्री कमेटी के अधीन काम करने वाले स्टाफ के बच्चे, यदि कमेटी के मातहत चलने वाले स्कूल में पढ़ते हैं, तो उनका फीस माफ करते हुए अन्य सुविधाएं प्रदान की जाए। इसके अलावा कहा गया कि ऐसे स्टाफ, जिनका सेवा का तीन साल का कार्यकाल पूरा हो गया है, उसकी सेवा स्थायी किया जाए। अधिक माह से निलंबित कर्मियों को निलंबन मुक्त कर सेवा शुरू कराया जाए। बैठक दौरान तदर्थ समिति के गठन को सिरे से खारिज कर दिया गया और बैठक में मौजूद हर किसी ने खासकर समिति के पूर्व संरक्षक त्रिलोक सिंह निषाद और प्रबंधक दिलीप सिंह पटेल की भाषा की निंदा की गई। बैठक में यह भी कहा गया कि जो भी स्टाफ गलती से या बहकावे में तदर्थ समिति में गए हैं, ऐसे अधिकांश लोग वापस आ गए हैं। इनमें हरजीत कौर, तनवीर सिंह अमरदीप सिंह, इंदर सिंह, ग्रंथी कृपाल सिंह आदि हैं। समिति की बैठक में मैनेजर हरजीत सिंह, प्रशासक बलवीर सिंह कालरा, लेखपाल देवेंद्र सिंह, कैशियर मंजीत सिंह, डिस्पैचर देवेंद्र सिंह, मंजीत सिंह सेठु, बलवंत सिंह, बलराम सिंह, समिति के उपाध्यक्ष मिथिलेश सिंह, जसवंत सिंह, देवेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष दीपक सिंह, सचिव अवधेश सिंह, रामेश्वर राम, बबलू कुमार सहित करीब दो सौ लोग शामिल हुए।

गुरुद्वारा सर्किट निर्माण पर विस्तार से रूपरेखा हो रहा तैयार : अशोक प्रभाकर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं हिन्दू जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठन मंत्री अशोक प्रभाकर एवं द्वि-क्षेत्र संगठन मंत्री सुमन कुमार (बिहार,झारखंड, बंगाल व नौ कहां से लिया ओडिशा) गुरुद्वारा दर्शन वास्ते शनिवार को आए। दरबार साहिब में मत्था टेकने के बाद दोनों ने समाज के लिए सुख, शांति एवं समृद्धि की कमाना की। गुरुघर में उन्होंने ध्यान भी लगाया एवं लंगर प्रसाद चखा। दिल्ली से पटना की यात्रा पर आए वरिष्ठ प्रचारक राष्ट्रीय संगठन मंत्री अशोक प्रभाकर ने बताया कि गुरुद्वारा सर्किट निर्माण पर विस्तार से रूपरेखा तैयार हो रही है। हिन्दुओं की रक्षा के लिए ही सिख धर्म की स्थापना हुई। सनातन में सभी धर्मों का सम्मान व कल्याण की भावना समाहित है। प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के अध्यक्ष जगजोत सिंह ने अतिथियों को सिरोपा, कड़ाह प्रसाद एवं पत्रिका भेंट कर स्वागत किया। मौके पर समाजसेवी एवं बीजेपी किसान मोर्चा के पूर्व उपाध्यक्ष संजीव कुमार यादव, कमेटी के कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह, विनोद यादव जी (उत्तर बिहार प्रांत संयोजक), अंजनी कुमार (दक्षिण बिहार प्रांत सह संयोजक), कार्यालय प्रमुख प्रचारक देवेंद्र सिंह, साकेत कुमार, विनय प्रसाद, आर्यन कुमार, अजीत यादव, राजेश कुमार शुक्ला टिल्लू सहित अन्य गण्यमान्य लोग उपस्थित थे।

राज्य के 03 खनिज ब्लॉक की नीलामी से राज्य खनन उद्योग के नए युग का सूत्रपात : विजय

डिप्टी सीएम बोलें- हैदराबाद हैकेथॉन तो बस शुरुआत है, पिक्चर अभी बाकी है

- खनिज ब्लॉक्स की सफल नीलामी से राज्य के राजस्व और रोजगार को मिलेगी रफ्तार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री सह खनन एवं भूतत्व मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने हैदराबाद में आयोजित अभिनव खोज आधारित खनिज अन्वेषण हैकेथॉन में भाग लिया। इस हैकेथॉन में बिहार के तीन वृहत खनिज ब्लॉक्स की सफलतापूर्वक नीलामी भी की गई। श्री सिन्हा ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम अपने यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व और केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्रालय तथा केंद्रीय मंत्री श्री जी किशन रेड्डी जी के आभारी हैं जिनकी बदौलत आज हमारा राज्य पत्थर और बालू के उत्खनन से निकलकर वृहत खनिज उत्खनन के क्षेत्र में प्रवेश कर गया है। हमें पूरी उम्मीद है कि माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में बिहार के खनन परिदृश्य में ऐसे और भी अनेक सुखद मौके आने वाले हैं। श्री सिन्हा ने आगे बताया कि इस हैकेथॉन के दौरान बिहार में अवस्थित रोहतास जिले के ग्लूकोनाइट के 02 ब्लॉक (चुटिया नौहट्टा एवं पिपराडीह भुरवा) एवं गया जिले के निकेल खनिज के 01 ब्लॉक (गेंजना) की सफल नीलामी हुई। ग्लूकोनाइट का उपयोग फर्टिलाइजर उद्योग में किया जाता है। लिहाजा हमारे यहां 2 ब्लॉक्स से होने वाले उत्खनन के जरिये आने वाले दिनों में बिहार में फर्टिलाइजर उद्योग की स्थापना हो सकेगी। वहीं निकेल एक क्रिटिकल खनिज है, जिसका प्रयोग मुख्य रूप से बैटरी एवं स्टेनलेस स्टील के निर्माण में किया जाता है। भारत आज निकेल की जरूरतों को पूरा करने के लिए शत-प्रतिशत आयात पर निर्भर है। हर साल हमारा देश इस मद में 6500 रुपए व्यय कर रहा है। लिहाजा गया के गेंजना में निकेल उत्पादन शुरू होने से इसका लाभ राज्य के साथ-साथ पूरे देश को मिलेगा। श्री सिन्हा ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा राज्य को वृहत खनिज के 10 ब्लॉक्स आवंटित किये गए थे। जिनमें से 07 क्रिटिकल एवं रणनीतिक महत्व के खनिजों के ब्लॉक्स हैं। 2023 में खान एवं खनिज अधिनियम में हुए संशोधनों के आलोक में इन सातों ब्लॉक्स की नीलामी केंद्र सरकार के स्तर से ही की जानी है। इसमें से प्रथम चरण में उपरोक्त तीन ब्लॉक्स की सफल नीलामी आज हो गई है। शेष 04 ब्लॉक्स, जिनमें 03 ग्लूकोनाइट के तथा 01 ब्लॉक वैनेडियम का है। हमने इन 04 ब्लॉक्स की नीलामी भी शीघ्रता से कराने का आग्रह केंद्र सरकार से किया है। वहीं दूसरी तरफ विगत 19 जुलाई को हुई कैबिनेट की बैठक में राज्य सरकार को आबंटित 03 खनिज ब्लॉक्स, जिनमें रोहतास जिले के भोरा कटोरा में लाइम स्टोन, जमुई के मजोस और भंटा में मैग्नेटाइट के ब्लॉक्स शामिल हैं, की नीलामी को मंजूरी दे दी गई है। श्री सिन्हा ने कहा झारखंड के अलग हो जाने के बाद हमारी गिनती खनिजों के मामले में एक अभावग्रस्त राज्य के रूप में हो चली थी। हमने अपने खनिज विकल्पों पर गंभीरता से विचार भी नहीं किया। लिहाजा राज्य में खनिज अन्वेषण को अपेक्षित गति नहीं दे पाए थे। लेकिन प्रधानमंत्री की प्रेरणा और मुख्यमंत्री की सोच से खनन एवं भूतत्व विभाग नीति, नीयत और नई सोच के साथ बिहार के खनन परिदृश्य में गुणात्मक परिवर्तन लाने में जुटा है। इससे निश्चित रूप से बिहार में राजस्व एवं रोजगार को निर्णायक दिशा देने वाली उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा।

दुकानों पर नाम लिखवाने से सामाजिक विषमता बढ़ने का खतरा : राजीव

बोलें-हिन्दू धर्म में कांवर यात्रा सिर्फ यात्रा नहीं बल्कि एक तपस्या

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि हिन्दू धर्म में कांवर यात्रा सिर्फ यात्रा नहीं बल्कि एक तपस्या है। इसके बावजूद कांवर यात्रा के मार्गों पर लगाये जाने वाले दुकानों व भोजनालयों आदि पर दुकानदार का नाम लिखवाने के निर्णय को सही नहीं कहा जा सकता। दुकानों व भोजनालयों पर नाम लिखवाने से सामाजिक विषमता बढ़ने का खतरा है, जिसे विपक्षी दल हवा देने के लिए तैयार खड़े हैं। नाम देख कर लोग केवल दूसरे धर्मों के लोगों से ही नहीं बल्कि दलित-पिछड़े व अतिपिछडे समाज के लोगों से भी सामान खरीदने से कतरायेंगे। इससे कांवड़ियों की परेशानी भी बढ़ेगी और उनकी सेवा करने को उत्सुक लोग भी मायूस होंगे। उन्होंने कहा कि लोगों को भूलना नहीं चाहिए कि बिहार-यूपी जैसे राज्यों में जाति एक कड़वी सच्चाई है। इसीलिए इस निर्णय से हिन्दू-मुस्लिम समेत समाज का हर अंग प्रभावित होगा। इसलिए सरकार को इस नियम को लागू करवाने के बजाये सरकारी स्तर पर विशेष भोजनालय, विश्राम स्थल, पूजन सामग्री वितरण स्थल आदि का निर्माण करवा कर उनके उपयोग को लोगों की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। जिसे जहां से सुविधा लेनी हो वह वहां से ले। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि आज विपक्ष इस विषय पर राजनीतिक रोटियां सेंकने का भरपूर प्रयास कर रहा है, जबकि हकीकत में यह कानून उन्होंने ने ही बनाया हुआ है। इस कानून को 2006 में लागू किया गया था उस समय यूपी में स्व. मुलायम सिंह यादव की सरकार थी और केंद्र में कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए सरकार थी। इसमें साफ कहा गया था कि सभी दुकानदारों, ढाबा मालिकों को अपने नाम के साथ-साथ पता और लाइसेंस नंबर भी होना चाहिए। और आज इनका इस विषय पर छाती पीटना इनके दोमुहेंपन को दिखाता है। उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ऐसे भी कई गलत कानूनों को रद्द या बदल चुकी है। उन्हें चाहिए कि इस कानून में भी फेरबदल कर इसे लागू करें, जिससे समाजिक सद्भाव भी बना रहे और कानून का उद्देश्य भी पूरा हो जाए।

नालन्दा विवि के तर्ज पर होगा विक्रमशिला विवि का पुनरोद्धार : सम्राट

- विक्रमशिला विश्वविद्यालय को गौरवशाली बनाएगी एनडीए सरकार
- स्वीकृति मिलने के बाद यहां तेज होगा विकास का काम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा है कि शिक्षा के प्राचीन केंद्र विक्रमशिला विश्वविद्यालय को एनडीए सरकार गौरवशाली बनाएगी। विश्वप्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय के तर्ज पर विक्रमशिला विश्वविद्यालय का पुनरोद्धार किया जाएगा। श्री चौधरी ने कहा कि 400 वर्षों से अधिक समय तक पूरी दुनिया में शिक्षा का अलख जगा रहे इस विश्वविद्यालय को मुस्लिम आक्रांता बख्तियार खिलजी ने 12 वीं सदी में नालन्दा विश्वविद्यालय की तरह ही विध्वंश कर दिया था। राज्य कैबिनेट से आधुनिक परिपेक्ष्य में इसके विकास व पुनरोद्धार के लिए जमीन की स्वीकृति मिलने के बाद यहां विकास का काम तेज होगा। उन्होंने कहा कि यह सर्वविदित है कि विक्रमशिला भारत ही नहीं दक्षिण-पूर्व एशिया सहित दुनिया का एक प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र (विश्वविद्यालय) था। नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला दोनों पाल राजवंश के राज्यकाल में शिक्षा के लिए जगत्प्रसिद्ध थे। वर्तमान समय में बिहार के भागलपुर जिले का अन्तिचक गाँव वहीं है जहाँ विक्रमशिला विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना ८वीं शताब्दी में पाल राजा धर्मपाल ने की थी। प्रसिद्ध पण्डित अतीश दीपंकर यहीं शिक्षण करते थे। श्री चौधरी ने कहा कि यहाँ पर लगभग 160 विहार थे, जिनमें अनेक विशाल प्रकोष्ठ बने हुए थे। विश्वविद्यालय में सौ शिक्षकों की व्यवस्था थी। नालन्दा की भाँति विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी बौद्ध संसार में सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसके प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए एनडीए सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

सूबे में बढ़ते आपराधिक घटनाओं के खिलाफ महागठबंधन का प्रतिरोध मार्च

इनकम टैक्स गोलंबर से डाक बंगला चौराहा पर पहुंचा मार्च, नेताओं ने खोला मोर्चा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सूबे में बढते आपराधिक घटनाएं, लचर कानून व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन के घटक दलों ने प्रदेश भर में प्रतिरोध मार्च निकाला। पटना के जयप्रकाश नारायण प्रतिमा स्थल के समीप इनकम टैक्स गोलंबर से पटना के विभिन्न मार्गो से होता हुआ डाक बंगला चौराहा पर पहुंचा ,जहां विशाल प्रतिरोध मार्च को डाक बंगला चौराहा पर पटना जिला प्रशासन ने बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया और बाद स्थानीय प्रशासन के माध्यम से इंडिया गठबंधन के 12 सदस्यीय नेताओं का प्रतिनिधि मंडल जिलाधिकारी के कार्यालय में पहुंचा। जहां प्रतिनिधि मंडल ने जिलाधिकारी को राज्यपाल महोदय को संबोधित स्मार-पत्र को सौंपा। नेताओं ने कहा कि पटना में जिस तरह से विपक्षी दलों के आंदोलन को रोकने की दिशा में डाक बंगला चौराहे पर बैरिकेटिंग लगा कर सरकार के इशारे पर पुलिस की सक्रियता दिख रही थी उससे स्पष्ट होता है कि बिहार में सरकार विपक्षी दलों के द्वारा सच और सच्चाई दिखाने से उन्हें दूर रखना चाहती है। इस इस प्रतिरोध मार्च में राजद की ओर से राष्ट्रीय महासचिव जयप्रकाश नारायण यादव, भोला यादव, डॉ तनवीर हसन, रणविजय साहू, अख्तरुल इस्लाम शाहीन, मो कारी शोएब, डॉ उर्मिला ठाकुर, मुन्नी रजक, एजाज अहमद, मृत्युंजय तिवारी, दीनानाथ सिंह यादव, मो महताब आलम, अरुण कुमार यादव, प्रमोद कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, बल्ली यादव,फैयाज आलम कमाल, प्रमोद कुमार राम, मुकुंद सिंह, इंजीनियर अशोक यादव, केडी यादव, संजय यादव, नंदू यादव, गगन कुमार यादव, जेम्स कुमार यादव, सरदार रणजीत सिंह, शिवेंद्र तांती सहित पटना जिला के सभी प्रखंड अध्यक्ष जिला के पदाधिकारी उपस्थित थे।

अपराध पर संज्ञान लेने के संबंध में सौंपा स्मार पत्र :

महागठबंधन के नेताओं ने प्रतिरोध मार्च के बाद पटना के जिलाधिकारी को स्मार पत्र सौंपा। राजद द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक स्मार पत्र में लिखा गया है कि बिहार में इन दिनों जिस तरह से अपराध की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है, उसे वर्तमान एनडीए सरकार रोकने में पूरी तरह असमर्थ साबित हुई है। राज्य में बढ़ रहे अपराधिक घटनाओं के कारण नागरिक समाज दहशत में है। अब तो घर के अन्दर भी लोग सुरक्षित नहीं हैं। वीआईपी अध्यक्ष मुकेश सहनी के पिता की निर्मम हत्या का प्रसंग हो या अभी बिहटा में एक मोटर साईकिल चालक द्वारा कार चालक को मामूली गलती के लिए गोलियों से हत्या कर दिये जाने का मामला हो या मुजफ्फरपुर के डीवीआर कम्पनी में हुई युवतियों के साथ यौन शोषण की घटना। दिन-दहाड़े फिरौती और हत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। महागठबंधन के घटक दल बिहार में जारी इन घटनाओं के लिए अपराधियों और सरकार की संवेदनहीनता की निंदा करते हैं और महामहिम राज्यपाल से राज्य की दयनीय विधि व्यवस्था को संज्ञान में लेने का अनुरोध करते हैं ताकि अपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगे और बिहार का आम जन अमन चैन का जीवन जी सके।

अपराधियों के मंसूबे सांतवें आसमान पर : अखिलेश

- प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में कांग्रेस ने निकाला प्रतिरोध मार्च

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कानून व्यवस्था और अपराधियों के बढ़े हुए मनसूबे के खिलाफ इंडिया गठबंधन की सभी पार्टियों के साथ बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के नेतृत्व में हजारों की संख्या में कांग्रेसजन ने इनकम टैक्स गोलंबर से डाकबंगला चौराहा तक सरकार के विरोध में गगनभेदी नारों के साथ प्रतिरोध मार्च निकाला। श्री सिंह ने कहा कि राज्य में अपराधियों का मंसूबा सातवें आसमान पर पहुंच चुका है। दिनदहाड़े किसी भी जिले में अपराध, हत्या, लूट डकैती और बलात्कार की घटनाएं हो जा रही है और पुलिस महकमा हाथ पर हाथ धरे बैठी रह रही है। विधानमंडल दल के नेता डॉ शकील अहमद खान ने कहा कि प्रदेश में आमजन खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा है। प्रदेश की जनता त्रस्त है और अधिकारी और सत्तारूढ़ दल के नेता सत्ता के हनक में अपनी जिम्मेदारियां भूल चुके हैं। मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने बताया कि इंडिया गठबंधन के द्वारा आहूत बिहार के सभी जिलों में प्रतिरोध मार्च निकाला गया है और कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष सहित सभी वरिष्ठ नेताओं ने जिला मुख्यालयों में भी प्रतिरोध मार्च निकाला। इस मार्च में पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, विधायक अफाक आलम, विधान पार्षद समीर कुमार सिंह, विधायक विजेन्द्र चौधरी, नीतू सिंह, आनन्द शंकर, निर्मलेन्दु वर्मा, ब्रजेश पाण्डेय, लाल बाबू लाल, कपिलदेव प्रसाद यादव, ब्रजेश प्रसाद मुनन, आनन्द माधव, शशि रंजन, विनय वर्मा, मनोज कुमार सिंह, अनिल कुमार, शरवतजहां फातिमा गरीब दास, ज्ञान रंजन, डा संजय यादव, आलोक हर्ष, गुंजन पटेल, सिद्धार्थ क्षत्रिय, अनुराग चंदन, ललन यादव, अखिलेश्वर सिंह, आशुतोष शर्मा, निधि पाण्डेय, मृणाल अनामय सहित हजारों की संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित रहें।

राज्य में विधि व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त : भाकपा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

इंडिया गठबंधन के आह्वान पर शनिवार को आयोजित प्रतिरोध मार्च में भाकपा कार्यकताओं ने बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि बिहार में अपराध की घटना दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, विधि व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है। प्रत्येक दिन पूरे बिहार से अपराध की घटना की सूचना आ रही है। उन्होंने कहा कि बिहार की डबल इंजन की सरकार बिगड़ती विधि व्यवस्था के लिए पूरी तरह जिम्मेवार है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सुशासन के वायदे का पोल खुल गया, आज संस्थागत अपराध हो रहे हैं। किसी की भी जान सुरक्षित नहीं है। राज्य में जिस प्रकार दिन प्रतिदिन अपराधिक घटनाएं बढ़ती जा रही है और अपराधियों के मन से पुलिस प्रशासन का भय समाप्त होता जा रहा है, इससे पूरे राज्य में दहशत का माहौल कायम है। इंडिया गठबंधन द्वारा संयुक्त रूप से सभी जिला मुख्यालयों पर प्रतिरोध मार्च निकाल कर जिला अधिकारी को संयुक्त ज्ञापन सौंपा गया। बिहार विधान मंडल के 22 जुलाई 2024 से शुरू हो रहे सत्र के दौरान कार्यस्थगन प्रस्ताव के जरिए अपराध की बेलगाम घटनाओं पर चर्चा कराई जाएगी तथा सरकार से जवाब मांगा जाएगा। भाकपा राज्य सचिव ने प्रतिरोध मार्च को सफल बनाने के लिए राज्य की जनता को बधाई दी है।

सूबे में अपराधी पूरी तरह बेलगाम : माले

पटना। महागठबंधन के प्रतिरोध मार्च का नेतृत्व भाकपा-माले विधायक दल के नेता महबूब आलम, सत्यदेव राम, गोपाल रविदास, शशि यादव; कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह व विधायक दल के नेता शकील अहमद खा; राजद के जिला अध्यक्ष दीनानाथ सिंह, सीपीआई के रामलला सिंह, सीपीएम के सर्वोदय शर्मा, वीआईपी के जिलाध्यक्ष अर्जुन सहनी कर रहे थे। मार्च में माले के पोलित ब्यूरो सदस्य, अमर, अभ्युदय, संदीप सौरभ, रणविजय कुमार, कमलेश शर्मा, उमेश सिंह; राजद के महानगर अध्यक्ष आफताब आलम; सीपीआई के विश्वजीत कुमार, सीपीएम के मनोज चंद्रवंशी व सोनेलाल प्रसाद, कांग्रेस के पटना अध्यक्ष शशि रंजन यादव, वीआइपी के आनंद ठाकुर आदि प्रमुख रूप से शामिल थे। मुख्यमंत्री को सौंपा गया ज्ञापन : भाकपा माले के प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक ज्ञापन में लिखा गया है कि राज्य में अपराध की बढ़ती घटनाओं ने पूरे बिहार को झकझोर दिया है, जैसे राज्य में कानून नाम की कोई चीज रह ही नहीं गई है। गया, नवादा, सिवान, मुजफ्फरपुर, सारण, पूर्वी चंपारण, सासाराम, गोपालगंज आदि जिलों में अपराध की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि हुई है। हालत यहां तक पहुंच गई है कि राजधानी पटना और उसके आस-पास के इलाकों में भी अपराधी पूरी तरह बेलगाम हो गए हैं। विगत कुछ दिनों में दो दर्जन से अधिक हत्या के मामले सामने आए हैं। प्रदर्शन के माध्यम से हम राज्य में अपराध और दलितों-महिलाओं व अल्पसंख्यक समुदाय पर हिंसा की लगातार बढ़ती घटनाओं पर अविलंब रोक लगाने की मांग करने आए हैं।

बढ़ते आपराधिक वारदात के खिलाफ लोगों में गुस्सा : राजद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव और प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने अपने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि पूरे राज्य में जिला मुख्यालयों पर इंडिया गठबंधन के द्वारा आयोजित प्रतिरोध मार्च पूरी तरह से सफल रहा। लोगों ने जिस तरह से आंदोलन में भाग लिया उससे यह स्पष्ट हो गया कि बिहार की जनता अपराध और अपराधियों के द्वारा किए जा रहे वारदात के खिलाफ लोग गुस्सा में है। उस गुस्सा और आक्रोश का कहीं ना कहीं प्रकटीकरण आज के प्रतिरोध मार्च में देखने को मिला। राजद नेताओं ने कहा कि पटना में विपक्षी दलों के आंदोलन को रोकने की दिशा में डाक बंगला चौराहे पर बैरिकेटिंग की गई। उससे स्पष्ट होता है कि बिहार में सरकार विपक्षी दलों के द्वारा सच और सच्चाई दिखाने से उन्हें दूर रखना चाहती है। उसके लिए तरह-तरह का प्रयोग पुलिस के माध्यम से करती है। अपराध और अपराधियों को रोकने के लिए पुलिस की सक्रियता कहां चली जाती है यह पता ही नहीं चलता है।

प्रतिरोध मार्च अपनी करतूतों को छिपाने की कोशिश :निहोरा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रदेश प्रवक्ता डॉ निहोरा प्रसाद यादव ने एक बयान जारी कर राजद के प्रतिरोध मार्च पर जमकर निशाना साधा है। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि राजद के प्रतिरोध मार्च से चोर मचाए शोर वाली कहावत जरुर चरितार्थ हो जाती है। उन्होंने कहा कि लालू-राबड़ी शासनकाल के दौरान आम लोगों की बात कौन करे, उनके शासनकाल में तो खास लोग भी सुरक्षित नहीं थे। लालू-राबड़ी शासनकाल का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि विधायक अशोक सिंह हत्याकांड को कौन भूल सकता है, जिनकी हत्या विधायक आवास में कर दी गई। उन्होंने आरजेडी पर निशाना साधते हुए कहा कि पूर्व विधायक आशा सिंह के पति सत्यानारायण सिंह, हेमंत शाही और मंत्री रमा देवी के पति बृजबिहारी प्रसाद की दिनदहाड़े हत्या जैसे दर्जनों खास लोगों की हत्या लालू-राबड़ी शासनकाल के दौरान ही हुई। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि इतना ही नहीं विधान सभा अध्यक्ष सदानंद सिंह के पोते का अपहरण, शंकर प्रसाद टेकरीवाल के रिश्तेदार का अपहरण, पूर्व मंत्री बैजनाथ पांडे, भाजपा विधायक प्रदीप कुमार जैसे कई खास लोगों के रिश्तेदारों का अपहरण किया गया। उन्होंने कहा कि लालू-राबड़ी शासनकाल में तो जेलों के अधिकारी और कर्मचारी कैदियों के आगे हाथ जोड़कर अपने परिवार की सुरक्षा की भीख मांगते थे। बिहार में जेलों में बंद महिला बिना पति के गर्भवती हो जाती थी और कैदी जेल से रंगदारी वसूलने का काम करते थे। उन्होंने आरजेडी से सवाल पूछते हुए कहा कि एक थानेदार एसपी और डीआईजी पर भारी पड़ता था और आज वही लोग किस मुंह से विधि व्यवस्था बिगड़ने की बात कर रहे हैं?

प्रतिरोध मार्च के जरिए राजनीतिक रोटी सेंकने का काम कर रहा राजद : अरविन्द

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द सिंह ने कहा है कि राजद प्रतिरोध मार्च नहीं, लगातार चुनावों में जनता द्वारा नकारे जाने के कारण खबरों में बने रहने के लिए अपनी राजनीतिक रोटी सेकने का काम कर रहा हैं। 2005 के पहले की तरह लालू यादव के शासनकाल के जैसा सता का संरक्षण अपराधियों को नहीं दिया जाता हैं। अब एनडीए सरकार में यहां त्वरित कार्रवाई की जाती है, अपराधियों को गिरफ्तार करके सलाखों के अंदर पहुंचाया जाता हैं, और उन पर कठोर कार्रवाई की जाती है। एनडीए सरकार ने लालू राज के बदहाल शासनकाल से मुक्ति दिलाकर अब चहुंओर विकास के नए आयाम गढ़ रही हैं। श्री अरविन्द ने कहा कि एनडीए सरकार खेलों को बढ़ावा दे रही इसी क्रम में राजगीर में अंतरराष्ट्रीय अकादमी बनकर तैयार हो गया हैं खेल दिवस के दिन इसका उद्घाटन होगा। अब प्रत्येक पंचायत में खेल मैदान बनाए जाएंगे। वहीं पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक जिले में पार्क का निर्माण होगा, पटना में मरीन ड्राइव के पास करीब 250 एकड़ में बनेगा पार्क। और तो और नए आपराधिक कानून के पालन के लिए और डिजिटल एविडेंस कलेक्शन के लिए एनडीए सरकार राज्य पुलिस के इन्वेस्टिगेटिंग ऑफिसरों को लैपटॉप और स्मार्ट फोन देगी और पुलिसकर्मियों को इसके लिए ट्रेनिंग मिल रही हैं। एनडीए सरकार में जनता की सुरक्षा के लिए नए भारत के सबसे दमदार वर्जन में दिखेगी बिहार पुलिस। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने बिहार में चहुंओर विकास कर के विकास के नए आयाम गढ़ने का काम किया है। और सुशासन से कोई कंप्रोमाइज ना करते हुए अपराधियों पर त्वरित कार्रवाई कर रही हैं और बिहारवासियों को भय मुक्त वातावरण प्रदान करने का काम कर रही हैं।

विधानमंडल का मानसून सत्र : सुरक्षा की होगी चाक चौबंद व्यवस्था

जिलाधिकारी व वरीय पुलिस अधीक्षक ने लिया सुरक्षा व्यवस्था का जायजा

- परिसर के आसपास धारा144 लागू की जाएगी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार विधानमंडल का आगामी सत्र 22 जुलाई से प्रारंभ होकर 26 जुलाई तक चलेगा। इस अवसर पर विधि-व्यवस्था संधारण, यातायात प्रबंधन एवं सुरक्षा व्यवस्था हेतु पटना के जिलाधिकारी डॉ. चन्द्रशेखर सिंह तथा वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा ने प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों ने शनिवार को विधान सभा परिसर में संयुक्त ब्रीफिंग की। सुरक्षा व्यवस्था का जायजा भी लिया। डीएम डॉ. सिंह के निदेश पर अपर जिला दंडाधिकारी, विधि-व्यवस्था राजीव रौशन द्वारा दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों को दिशा-निदेशों से विस्तार से अवगत कराया गया। डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने कहा कि सुरक्षा प्रोटोकॉल के अनुसार त्रि-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी। आठ क्यूआरटी भी क्रियाशील रहेगा। डीएम डॉ सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने कहा कि सभी प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी 22 जुलाई को प्रातः 09.00 बजे एवं आगे प्रतिदिन विधान मंडल की कार्यवाही शुरू होने के एक घण्टा पहले अपना प्रतिनियुक्ति स्थान निश्चित रूप से ग्रहण कर लेंगे। सभी प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी प्रत्येक दिन विधान मंडल की बैठक की समाप्ति के पश्चात ही अपने-अपने प्रतिनियुक्ति स्थल को छोड़ेंगें। डीएम व एसएसपी ने यह सुनिश्चित करने को कहा कि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति विधान मंडल परिसर में प्रवेश नहीं करे। यदि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति प्रवेश करता है तो उसकी सारी जवाबदेही वहाँ पर प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी की होगी। सचिवालय, विधान सभा एवं विधान परिषद क्षेत्र में बिना प्रवेश पत्र के किसी भी व्यक्ति/ वाहन को प्रवेश करने नहीं दिया जाएगा ।डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा द्वारा वरीय पदाधिकारियों के साथ विधानमंडल परिसर का भ्रमण एवं सुरक्षा व्यवस्था का जायजा भी लिया गया था। अधिकारीद्वय द्वारा इस निमित आवश्यक निदेश दिया गया। विधान सभा परिसर में स्थापित नियंत्रण कक्ष में प्रतिनियुक्त वरीय पदाधिकारी सभी दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों से समन्वय स्थापित करते हुए आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित कराएंगे। अनुमण्डल दण्डाधिकारी, पटना सदर द्वारा बिहार विधान मंडल की सत्रावधि में बिहार विधान मंडल परिसर एवं आस-पास के क्षेत्र में पूर्व की तरह विधि-व्यवस्था संधारण हेतु एहतियात के तौर पर धारा-144 दं प्र सं के अन्तर्गत निषेधाज्ञा लागू की जाएगी। अनुमंडल पदाधिकारी, पटना सदर एवं पुलिस उपाधीक्षक, सचिवालय इस अवसर पर विधि-व्यवस्था के प्रभार में रहेंगे। डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने सभी दण्डाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों त्रुटिरहित एवं सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु सजग, तत्पर तथा प्रतिबद्ध रहने का निदेश दिया है।

महेंद्र नारायण यादव के निधन पर राजद में शोक की लहर

पटना। बिहार सरकार के पूर्व पथ निर्माण राज्य मंत्री महेंद्र नारायण यादव के असामयिक निधन पर राष्ट्रीय जनता दल के नेताओं ने गहरी शोक संवेदना प्रकट किया है। राजद के प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया उनके निधन का समाचार मिलते ही पार्टी के राज्य कार्यालय का आधा झंडा इनके सम्मान में झुका दिया गया। निधन का समाचार सुनकर राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी,नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव, सांसद डॉक्टर मीसा भारती, पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव, प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी, विधान परिषद के पूर्व उपसभापति रामचंद्र पूर्वे,राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, भोला यादव, राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रो मनोज कुमार झा,सांसद राज्यसभा श्री संजय यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, डॉ तनवीर हसन, मुख्यालय प्रभारी मुकुंद सिंह, मदन शर्मा, फैयाज आलम कमाल, बल्ली यादव, डॉ प्रेम कुमार गुप्ता, प्रमोद कुमार राम, निर्भय कुमार अंबेडकर सहित अन्य नेताओं ने इनके निधन पर गहरी शोक संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि इनके निधन से राज्य को अपूर्णीय क्षति हुई है

कांग्रेस में शामिल हुए वाल्मिकिनगर के पूर्व रालोसपा प्रत्याशी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

वाल्मीकिनगर विधानसभा के रालोसपा के पूर्व प्रत्याशी सुरेंद्र प्रसाद कुशवाहा अपने हजारों समर्थकों के साथ आज प्रदेश कांग्रेस कार्यालय सदाकत आश्रम में प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के समक्ष सदस्यता ग्रहण किए। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने सुरेंद्र प्रसाद कुशवाहा को सदस्यता दिलाने के बाद कहा कि कांग्रेस पार्टी और हमारे नेता राहुल गांधी के प्रति उन्होंने निष्ठा प्रदर्शित करते हुए पार्टी में शामिल हुए। उनके आने से पार्टी चंपारण के इलाके में सांगठनिक रूप से मजबूत होगी। कांग्रेस पार्टी के प्रति लगातार प्रदेश में माहौल बना है और सभी पार्टी की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहें हैं। हाल में सभी दलों से लोग पार्टी में शामिल हो रहे हैं ये हमारे नेतृत्व के प्रति आम जनता में विश्वास का ही देन है। सदस्यता लेने के बाद वाल्मीकिनगर पूर्व प्रत्याशी सुरेंद्र प्रसाद कुशवाहा ने कहा कि बिहार सहित देश में कांग्रेस पार्टी ही एकमात्र विकल्प है जो देश के विकास को समर्पित है और मैं कांग्रेस से जुड़कर खुद को देश के सबसे समर्पित और सच्ची पार्टी के साथ खुद को जोड़कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

पूर्व मध्य रेल

ई–निविदा सूचना

खुली ई – निविदा सूचना सं. 17 – GSUSEE–23–24 03 एवम 06 GSUSEE– 24–25–01

मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) / सोनपुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए खुली ई – निविदा आमंत्रित करते हैं। ई–निविदा की अंतिम तिथि 16.02.2024 को 13:00 बजे तक निर्धारित है। ई–निविदा संबंधी एवं निविदा प्रपत्र का अवलोकन वेबसाइट पर किया जा सकता है।

S.N. 1 Name of work : At KGG : Provision of Two Escalator Khagaria. Advertised value (In Rs.) : ₹4,42,2041.55, Earnest Money (In Rs.) : ₹88,500/- S.N. 2 Name of work : At GHZ:Upgradation/ Modernisatior infrastructure of Goods shed (Concretizatiwharf, labour facilities) Advertised value (In Rs.) : ₹12,00,36,964.92, Earnest Money (In Rs.) : ₹7,50,200/-, उपरोक्त निविदा सूचना वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है । निविदा संबंधी रेल का अधिकार–किसी भी निविदा को स्थगित करने / निरस्त करने अथवा निविदा में सुधार करने हेतु रेलवे का अधिकार सुरक्षित रहेगा। निविदा दाता का इसमे कोई दावा मान्य नहीं होगा ।

वरिष्ठ मंडल इंजीनियर(गतिशक्ति)/ पूमरे/सोनपुर

पीआर/00713/एसईईजीएस/यां./टी/24–25/32

संक्षिप्त खबरें

जयनगर में श्रावणी मेला में की जाएगी फोर्स की तैनाती

मधुबनी जयनगर में श्रावणी मेला को लेकर शांतिपूर्ण व सौहार्द माहौल में संपन कराने को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित। थाना में अध्यक्षता एसडीएम ने की एसडीएम ने श्रावणी महीने के शनिवार रविवार व सोमवार को कमला नदी तथा शिवालयों पर विधि-व्यवस्था के संधारण को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए है। एसडीएम ने मेला व मंदिर समिति को स्थल पर सीसी टीवी लगाने को कहा तथा कार्यकर्ताओं को पुलिस बल के साथ सहयोग बनाकर व्यवस्था पर नजर रखने को कहा साथ ही नदी पर जल भरने वक्त कांवरियों को सहयोग मिले प्रशासन ने आरपीएफ को स्टेशन पर कांवरियों की भीड़ को देखते हुए पुख्ता व्यवस्था को से तैयार होकर रहेंगे बेले हैं। कोई भी प्रकार से दिक्कत कमरिया को नहीं होना चाहिए प्रशासन तैयार तत पर रहेंगे।

श्रावणी मेला के दौरान हर सोमवार को बंद रहेंगे शहर के सरकारी एवं निजी स्कूल

मुजफ्फरपुर। श्रावणी मेला 2024 के अवसर पर मुजफ्फरपुर जिले में श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को भारी संख्या में कांवरियों द्वारा बाबा गरीब नाथ मंदिर में रविवार रात्रि से सोमवार तक जलाभिषेक किया जाता है। जलाभिषेक के पश्चात - कांवरिया विभिन्न मार्गो से प्रातः वापस होते हैं। उक्त अवसर पर विद्यालयों के बसों के परिचालन से कांवरियों एवं विद्यार्थियों को होने वाली कठिनाई को देखते हुए जिला प्रशासन ने लोकहित में श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार क्रमशः 22 जुलाई, 29 जुलाई, -5 अगस्त, 12 अगस्त, 19 अगस्त को मुजफ्फरपुर शहरी क्षेत्र में अवस्थित सभी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में सभी प्रकार के शैक्षणिक गतिविधियों को प्रतिबंधित कर दिया है। इस आशय का आदेश जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने निर्गत करते हुए जिला शिक्षा पदाधिकारी मुजफ्फरपुर, अनुमंडल - पदाधिकारी पूर्वी मुजफ्फरपुर तथा संबंधित अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी - मुजफ्फरपुर को इस आदेश का दृढ़तापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया है।

फर्जी परीक्षार्थी गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर। बीपीएससी शिक्षक नियुक्ति प्रतियोगिता पुनर्परीक्षा के पहले दिन शुक्रवार को क्लब रोड स्थित नीतीश्वर महाविद्यालय परीक्षा केंद्र पर एक फर्जी परीक्षार्थी पकड़ा गया। वह अपने पड़ोसी की जगह शिक्षक भर्ती की पुनर्परीक्षा देने गया था।। परीक्षा के दौरान हुई जांच में उसे फर्जी पाए जाने पर पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया। हिरासत में लिए गए परीक्षार्थी से पुलिस विस्तार से पूछताछ कर रही है। दी गई जानकारी के अनुसार हाजीपुर का रहने वाला रविकांत कुमार अपने ही पड़ोसी रंजन कुमार की जगह बीपीएससी की पुनर्परीक्षा देने पहुंचा था। इस दौरान बायोमेट्रिक जांच में ही वह पकड़ा गया। जिसके बाद केंद्र पर तैनात दंडाधिकारी के द्वारा उसको मिठनपुरा थाने को सौप दिया गया। इस मामले में एसडीओ पूर्वी अमित कुमार ने बताया कि शुक्रवार से बीपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा की शुरूआत हुई है। ऐसे में मुजफ्फरपुर के नितिश्वर महाविद्यालय से एक फर्जी परीक्षार्थी को गिरफ्तार किया गया है ।वह अपने ही पड़ोसी की जगह पर बीपीएससी का परीक्षा देने पहुंचा था। बायोमेट्रिक जांच के दौरान उसे पकड़ा गया।

सड़क दुघर्टना में शाला की धटना स्थल पर हुई मौत

● आक्रोशित लोगों ने शव को सड़क पर रख किया जाम

प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर समस्तीपुर थाना क्षेत्र के समस्तीपुर दरभंगा मुख्य पथ के जटमलपुर बकबारा पुल के समीप शनिवार की सुबह करीब सुबह दस बजे में मिनी ट्रक की ठोकर से बाईक सवार शाला ओर बहनोई गंभीर रूप से जख्मी हो गया। आक्रोशित लोगों ने मोती की सूचना मिलते ही बरहेता चोक के समीप बैजलपुर चोक के समीप शनिवार को शाम में जाम कर दिया।स्थानीय लोगों की मदद से जख्मी शाला ओर बहनोई को दरभंगा जिले के हनुमान नगर पीएचसी में भर्ती कराया गया। जहां मोजूद डॉ संतोष कुमार ने शाला की धटना स्थल पर ही मोत हो जाने की बात कही। वहीं बहनोई की पाराथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए डीएमसीएच दरभंगा रेफर कर दिया गया। मिरतक शाला की पहचान दरभंगा जिले के विशनपुर थाना क्षेत्र के रुपोली गांव निवासी लक्ष्मी सहनी के अठारह वर्षीय पुत्र राजा कुमार के रूप में हुई है। वहीं बहनोई की पहचान कल्याणपुर थाना क्षेत्र के खरसंड पंचायत के चकरी गांव निवासी दुखा साहनी के पुत्र कन्हैया कुमार के रूप में हुई। जिनका ईलाज डीएमसीएच दरभंगा में चल रहा है। जहां जिंदगी ओर मोत के बीच जुझ रहे हैं। दोनों एक बाईक पर सवार होकर दरभंगा जिले के विशनपुर थाना क्षेत्र के रुपोली गांव से कल्याणपुर के लिए निकले थे। जहां जटमलपुर के बकवारा पुल के समीप मिनी ट्रक के चपेट में आने से शाला की मौत धटना स्थल पर ही हो गया। जबकि बहनोई गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वहीं धटना स्थल से ट्रक चालक लेकर भाग रहा था लेकिन परिजन ओर गारमीणो के सहयोग से जटमलपुर हाट के समीप से ट्रक पकड लिया गया। ट्रक को हाट में लगाकर सभी परिजन जख्मी को देखने हनुमान नगर पीएचसी में चलें गए। सुचना पर कल्याणपुर पुलिस पहुंच कर जांच पड़ताल शुरू कर दिया। पुलिस जटमलपुर हाट के समीप से ट्रक को लेकर पुलिस थाना की ओर चला। लेकिन जख्मी एवं मिरतक के परिजन को मालूम होते ही पुलिस को पीछा कर बैजलपुर चोक के समीप ट्रक को पुलिस से छोड़ा लिया। पुलिस से ट्रक को बैजलपुर चोक के समीप ही गारमीणो ने आक्रोशित रुप को देखते हुए बैजलपुर चोक के समीप पुलिस ने खड़ा कर दिया तब जाकर गारमीण शांत हुए। धटना स्थल पर गारमीण शव को आने तक ट्रक को धटना स्थल पर रोक कर रखें हुए था।वहीं धटना स्थल से ट्रक चालक भागने में सफल रहा। मरतक युवक को डीएमसीएच में पोस्टमार्टम कराकर परिजन को सोप दिया। वहीं गारामीणो की मानें तो कन्हैया कुमार की शादी बीते दिन शुक्रवार को मंदिर में हुआ ही था। वहीं आक्रोशित लोग सड़क जाम कर मुआवजा की मांग कर रहे थे। सूचना पर अपर थाना अध्यक्ष चंद्रभूषण कुमार पहुंचकर जाम कर रहे आक्रोशित लोगों को समझाने बुझाने में लगे हुए थे। लेकिन लोग मानने को तैयार नहीं थे। समाचार प्रेषण तक सड़क जाम ही था। वहीं अपर थाना अध्यक्ष चंद्रभूषण ने बताया कि मृतक के परिजन द्वारा आवेदन मिलने के बाद आगे कार्रवाई की जाएगी।

मार पीट की धटना में चार जख्मी

कल्याणपुर समस्तीपुर थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर हुई मारपीट की धटना चार लोग गंभीर रूप जख्मी हो गया। जख्मी लोगों में जितवरिया गांव के मो अरमान मिल्की गांव निवासी शिव शंकर सिंधिया गांव निवासी प्रियांशु देवी,रमन कुमार गंभीर रूप से जख्मी हो। सभी जख्मी को ईलाज के लिए पीएचसी कल्याणपुर में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद प्रियांशु देवी को बेहतर ईलाज के लिए निजी सरद अस्पताल समस्तीपुर रेफर कर दिया गया। वहीं प्रशिक्षु डीएसपी सह थानाध्यक्ष नीतीश चन्द्र धारियां ने बताया कि जख्मी के परिजन द्वारा आवेदन मिलने पर आगे कार्रवाई किया जाएगा।

अपहरण मामले के नामजद आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कल्याणपुर समस्तीपुर थाना क्षेत्र के सोमनाहा गांव के कमती टोल से पुलिस ने अपहरण मामले के नाम जग आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गिरफ्तार आरोपी की पहचान गांव निवासी कामेश्वर राय के पुत्र राहुल कुमार उर्फ सोनू के रूप में हुई है वहीं थाना अध्यक्ष दिव्या ज्योति कुमारी ने बताई थी अपहरण के मामले में नाम ज्यादा आरोपी था जिसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

एसपी ने जिलादेश जारी कर 52 पुलिस पदाधिकारियों का थाना-अंतर्गत किया स्थानांतरण

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर एसपी विनय तिवारी के द्वारा शुक्रवार को एक जिलादेश जारी कर जिले के विभिन्न थानों में पदस्थापित 52 पुलिस पदाधिकारियों को जिला अंतर्गत विभिन्न थानों में स्थानान्तरित किया गया है।

इसमें 22 एसआई, 15 एएसआई, तीन पीएसआई और 12 पीटीसी का स्थानांतरण किया गया है। जारी जिलादेश में कहा गया है कि सभी स्थानांतरित पुलिस पदाधिकारियों को उनके लंबित कांडों का प्रभार थानाध्यक्ष को सौंपते हुये 24 घंटे के अंदर नए पदस्थापन स्थल पर योगदान कर अनुपालन प्रतिवेदन समर्पित करने का निर्देश दिया गया है। साथ ही सभी संबंधित थानाध्यक्षों को स्थानान्तरित पुलिस पदाधिकारियों से उनके पास लंबित कांडों का प्रभार 24 घंटे के अंतर ग्रहण कर नए पदस्थापन स्थल के लिये प्रस्थान कराने एवं थाना में आने वाले नये पुलिस पदाधिकारियों को कांड का प्रभार देने का आदेश दिया गया है। कांड का प्रभार प्रदान किये बिना प्रस्थान कराने वाले पुलिस पदाधिकारियों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी।

इन आदेशों के अनुपालन कराने के लिए संबंधित एसडीपीओ को निर्देश दिया गया है। इसमें महिला थाने में पदस्थापित एसआई सुरेश पासवान, एएसआई भीम प्रसाद यादव, एएसआई हुस्न आरा खातून, पीटीसी मंजू पटेल, पीटीसी रीना देवी व पीटीसी कुमारी सीमा रानी को मुफस्सिल थाने में स्थानांतरण किया गया है। वहीं वैनी थाने में पदस्थापित एसआई पंकज सिंह, एसआई मनोज पासवान, एसआई संदीप कुमार व एएसआई राम अवतार प्रसाद यादव को मुफस्सिल थाने में स्थानांतरण किया गया है। इसके अलावा मुसरीघरारी थाने में पदस्थापित एएसआई विनय कुमार पांडे का मुफस्सिल थाने में स्थानांतरण किया गया है।

नैतिकतावान व मानव मूल्य युक्त व्यक्ति ही विशिष्ट एवं समाजोपयोगी : डॉ घनश्याम महतो

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।भारतीय ज्ञान परंपरा अति प्राचीन एवं समृद्ध है, जिसकी शुरूआत वैदिक काल में ही हुई थी। वेद न केवल ज्ञान विज्ञान का भंडार है, बल्कि नैतिकता एवं मानव मूल्यों का आदि एवं विस्तृत स्रोत भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा हमें सदाचारी, व्यावहारिक एवं समाजोपयोगी बनता है। व्यक्ति एवं समाज को सही मार्ग दिखाने के लिए संस्कृत साहित्य में नीतिशतक, पंचतंत्र तथा हितोपपश जैसे नीतिकाव्यों की रचना हुई। ऐसी रचनाएं पश्चिमी एवं अरब देश के साहित्यों में नहीं दिखती हैं। उक्त बातें दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत प्राध्यापक डॉ राजेन्द्र कुमार ने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग के तत्वावधान में भारतीय ज्ञान- परंपरा में नैतिकता एवं मानव मूल्य विषय पर आयोजित एकल व्याख्यान में कही। अध्यक्षीय संबोधन में विभागाध्यक्ष डा घनश्याम महतो ने व्याख्यान के विषय को बृहद एवं प्रासंगिक बताते हुए कहा कि यदि व्यक्ति में नैतिकता एवं मानव- मूल्यों का अभाव हो तो वह पशु सद्दश्य ही व्यवहार करेगा। मानवीय धर्म पालन करने से ही हमारे कर्म भी पूर्ण होते हैं। नैतिकतावा- एवं मानव मूल्य युक्त व्यक्ति ही विशिष्ट एवं समाजोपयोगी होते हैं। विषय प्रवेश संस्कृत विभागाध्यक्ष डा विकास सिंह ने किया। स्वागत एवं कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान संयोजक डॉ आर एन चौरसिया व धन्यवाद ज्ञापन डॉ ममता स्नेही ने किया। व्याख्यान में शोधार्थी सदानंद विश्वास, बालकृष्ण कुमार सिंह, विपुल राय, आनंद सागर मौर्य, जिग्नेश, मनीष, मिहिर झा, मनीषा, रंजना, ज्योति, राधा, श्वेता, जूही, सुमेधा, माधुरी, साधु पासवान, विशाल, आकाश, देव कुमार, रितिक राज, प्रवीन्दर, राजीव, गिरधारी, विद्यासागर, योगेन्द्र तथा उदय कुमार आदि उपस्थित थे।

भारत और नेपाल दोनों देश के लिए बना झूलन पुल

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित जनकनंदनी गॉव पालिका के मल्हनीया फुलबरिया गॉव में नेपाल के दो जिलों को जोड़ने वाली नेपाल की सबसे बड़ी झूलन पुल भारत और नेपाल देश के लिए यह आकर्षण का केंद्र बना हुआ है ।जयनगर सीमा के करीव 3 किलोमीटर की दूरी पर नेपाल के इनरवा गांव से आगे कमला नदी पर बना लगभग 1.6 किलोमीटर लंबा झूलन पुल लगभग चार फिट चौड़ा 1600 मीटर लंबा लोहे से बना हवा में हिलता-डूलता जमीन से लगभग 50 से 60 फीट ऊपर बना झूलन पुल जो कि नेपाल के सिरहा जिला व धनूषा जिला को जोड़ता है झूलन पुल ।नेपाल सहित सीमावर्ती भारतीय क्षेत्र के नागरिक इस झूलन पुल से कमला नदी पार कर के सिरहा जिला जाया जा सकते हैं ।वही निर्माण एजेंसी साइट अभियंता विनोद कुमार मंडल ने जानकारी देते हुए कहा कि यह नेपाल का सबसे लंबा एवं इकलौता झूलन पुल है जिसमें लगभग 33 करोड़ नेपाली रुपया से इसका निर्माण हुआ है। जोकि पैदल यात्री और साइकिल एवं मोटरसाइकिल वाहनों को एक जिला से दूसरे जिला जाने में लगभग तीस से चालीस किलोमीटर की दूरी एवं नदी के पानी पार करना सहित लगभग एक घंटे की समय बचत होती हैं ।इनरवा महलनिया फुलवरिया कटहाल सहित एक दर्जन से अधिक ग्रामीण इलाको को सीधे सिरहा जिला से जोड़ने से इन ग्रामीण इलाकों का वृद्धि एवं विकास होगा और खासकर बरसात के दिनों में कमला नदी के बाढ़ के पानी से राहत होते हुए जरूरतमंद की सीधे सामान ग्रामीण इलाकों में पहुंचेगा ।नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में कमला नदी पर इस पुल के निर्माण से लगभग दो जिला के लाखों लोगों की आबादी को फायदा होगा ।इस झूला पुल पर चढ़ने के लिए दोनो छोर पर लगभग 35 फिट का सीढ़ी बनया गया है। इस पुल को आधुनिक तरीके जिसमें डेक को ऊर्ध्वाधर सस्पेंडर्स पर सस्पेंशन केबल के नीचे लटका दिया जाता है और सस्पेंशन ब्रिज या झूला पुल में बताया जाता है कि 70 से 75 फीसदी केबल का काम होता है. इनमें हजारों के मात्रा में छोटे छोटे तार लगे होते हैं जिन्हें जोड़कर बड़ी केबल बनाई जाती है। भारत और नेपाल के लोगों का कहना होता है कि यह झूलन पुल बनने से आकर्षण का केंद्र बन गया है आए दिन भारत के कई कोने-कोने से लोग देखने आते हैं इस झूलन पुल को सरकारी कर्मचारी हो या हो फिर आम पब्लिक सभी जाते हैं देखने के लिए जहां तक की यह झूलन पुल बनने से कहीं का रोजी-रोटी भी चलने लगा है इस झूलन पुल के नजदीक कहानी छोटे-छोटे दुकान भी खुल गया है जो की मनमोहित का केंद्र बना हुआ है। इसी बीच इस चीज को लेकर के चर्चा रखा गया तो महिला विकास मंच के दीप शिखा सिंह ने बताया कि यह झूलन नेपाल के सिरहा जिला और धर्मशाला जिला को जोड़ता है नदी में पानी आ जाने के कारण लोगों को कठिनाई से गुजरना पड़ता था जो कि अब नहीं गुजरना होगा , जबकि हम लोग मधुबनी जिला के जयनगर के रहने वाले हैं कई बार आकर्षण केंद्र झूलन पुल को देखने के लिए आ चुके हैं भारत से कहीं दूर-दूर से लोग भी आते हैं इस झूलन पुल को देखने के लिए।

जनता दरबार में जिलाधिकारी ने ऑन द स्पॉट कई मामलों किया निष्पादन

परिवादियों की शिकायतों को सुना, बल्कि 12 शिकायतों के त्वरित निष्पादन किये तथा शेष आवेदनों को यथाशीघ्र समाधान करने के लिए उपस्थित अधिकारियों को मोबाइल के माध्यम से दिए महत्वपूर्ण निर्देश।

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। जनता दरबार में जिलाधिकारी राजीव रौशन ने अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित कर जिले भर से आए परिवादियों से उनकी समस्यायों को सुना, समाधान किया एवं संबधित पदाधिकारीयों को त्वरित निष्पादन करने का निर्देश भी दिया। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक शुक्रवार आयोजित जनता दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम के आयोजन के दौरान आज 35 से अधिक परिवादी अपनी समस्या की समाधान के लिए उपस्थित हुए। जनता दरबार में समाज कल्याण विभाग, पंचायती राज विभाग, ग्रामीण विकास, सामान्य प्रशासन, शिक्षा विभाग, कार्यपालक अभियंता विद्युत, खाद्य एवं उपभोक्ता, स्वास्थ्य विभाग, नगर एवं आवास विभाग एवं पथ निर्माण विभाग आदि के मामलों का निष्पादन किया गया ।जिलाधिकारी ने न केवल मनीगाछी प्रखंड के एक परिवादी द्वारा विश्वकर्मा योजना हेतु आवेदन दिया था ।जिलाधिकारी ने जिला उद्योग महाप्रबंधक को नियमानुकूल कार्रवाई करते हुए मामलों का निष्पादन करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार दरभंगा सदर के एक परिवादी द्वारा बताया गया कि गाय पालन, बकरी पालन और मछली पालन की प्रशिक्षण लेने के बावजूद भी बैंक से लोन नहीं दिया जा रहा है ।जिलाधिकारी ने अग्रणी बैंक प्रबंधक को नियमानुकूल कार्रवाई करते हुए मामलों का निष्पादन करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त चित्रगुप्त कुमार, अपर समाहर्ता विधि व्यवस्था राकेश रंजन, उप निदेशक जन-संपर्क सत्येंद्र प्रसाद, सिविल सर्जन, प्रशिक्षु सहायक निदेशक जिला जन-संपर्क पदाधिकारी संजय कुमार, आईटी प्रबंधक पूजा चौधरी एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह से है ध्वस्तै : डॉ मदन मोहन झा

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। राज्य की डबल इंजन की सरकार मे बढ़ती अपराधिक घटनाएं, गिरती कानून व्यवस्था, लूटपाट, भ्ष्टार्चार, बेरोजगारी एवं कमरतोड़ महंगाई को लेकर शनिवार को इंडिया गठबंधन की ओर से सरकार के खिलाफ प्रतिरोध मार्च निकाला गया। शनिवार को जिला कांग्रेस के सैकड़ों कार्यकताओं ने जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी के नेतृत्व मे बलभद्रपुर कांग्रेस कार्यालय से लहेरियासराय समाहरणालय तक प्रतिरोध मार्च करते हुए पहुचे, जहां पर पहले से मौजूद महागठबंधन के साथियों के साथ मिलकर लहेरियासराय टावर, लोहिया चौक होते हुए पोलो मैदान स्थित धरना स्थल पहुचे। इस मार्च मे बिहार विधान परिषद मे कांग्रेस दल के नेता व पूर्व मंत्री डां. मदन मोहन झा भी सम्मिलित हुए। डां झा ने संबोधित होते हुए कहा कि पूरे प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो गई है, आए दिन प्रदेश मे हत्याएं, लूट पाट, और अपराध की घटनाएं तेजी से हो रही है जनता मे दहशत का माहौल है। वहीं जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी, पूर्व मेयर अजय जालान व कांग्रेस प्रवक्ता मो.असलम ने राज्य में बढ़ती आपराधिक घटनाओं के लिए शासन-प्रशासन और सरकार ने शामिल भाजपा को जिम्मेदार ठहराया है। प्रतिरोध मार्च मे, प्रदेश प्रतिनिधि मनोज झा,अच्युतानंद ठाकुर, दयानंद पासवान, रतिकांत झा, उपाध्यक्ष रामपुकार चौधरी, दिनेश गंगनानी,गणेश चौधरी, धनंजय सिंह, देवकीनंदन ठाकुर, राहुल झा, प्रिंस परवेज, मो.चांद, सैय्यद एजाज अनवर, उदितनारायण चौधरी, मो. अंसार हसन, राजा अंसारी, ललन राय, सुनील सिंह, नारायण जी झा, शादाब अतिकी, सैय्यद तनवीर अनवर, नसीम हैदर, जयशंकर चौधरी, विशाल महतो, नवीन झा, मो.अंसार, अजय चौधरी, बुच्ची देवी, प्रो. मिथिलेश यादव, बसंत झा, पंकज चौधरी, विवेकानंद चौधरी, राजकुमार पासवान आदि थे।

पंचायत वार्ड सदस्य संघ का विस्तारित बैठक बीआरसी प्रांगण में आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। प्रखंड मुख्यालय बहादुरपुर के बीआरसी के प्रांगण में पंचायत वार्ड सदस्य संघ बहादुरपुर दरभंगा का एक विस्तारित बैठक संघ के प्रखंड अध्यक्ष अरुण कुमार झा के नेतृत्व में आयोजित की गई जिसमें 23 पंचायतों से दर्जनों वार्ड सदस्य एवं वार्ड सदस्या बहनें ने भाग लिया और अपनी समस्याओं पर पंचायत वार वार्ड सदस्यों ने ध्यान आकृष्ट कराया। वहीं बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश प्रधान महासचिव सह जिलाध्यक्ष दरभंगा, संस्थापक राजीव कुमार मणी ने उपस्थित सभी साथियों को संबोधित करते हुए कहा कि वार्ड सदस्य का सबसे पहला दायित्व है अपने वार्ड में जितने भी वृद्धावस्था पेंशन के लाभुक है उनके 400 रुपए जो मासिक दिया जा रहा है उसमें बढोत्तरी करते हुए अबिलंब 2000 हजार किया जाए साथ ही साथ छुटे हुए गली नली पक्कीकरण योजना से बंचित वार्ड के योजनाओं को अनुसंशा कर राज्य सरकार को भेजने की कृपा करे ।सोलर स्ट्रीट लाइट से बंचित वार्ड में अबिलंब सोलर स्ट्रीट लाइट लगवाई जाए। प्रखंड स्तर पर अनुरक्षक की मासिक राशि को अबिलंब भुगतान करवाई जाए भबहादुरपुर प्रखंड के अन्तर्गत आनेवाले विभिन्न पंचायतों में अबिलंब भुगतान किया जाए। वहीं सभा को अनीश कुमार, लक्ष्मण लाल देव,आरती देवी मो0 रूस्तम, राजीव यादव, शाहीन अख्तर, दीलीप भंडारी, श्याम बैरागन झा, राम बाबु साफी, राजा महतो, मदन किशोर झा, संजय कुमार दास, जय कृष्ण राम, राजेन्द्र राम, विक्रम कुमार आदि ने अपनी बातों को रखा।

एयरपोर्ट जैसा होगा दरभंगा दिल्ली मोड़ का बस स्टैंड : संजय सरावगी

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। बहुत ही जल्द दिल्ली मोड़ स्थित दरभंगा बस स्टैंड मॉडल बनेगा। नए बस स्टैंड में यात्रियों को सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। ये बातें भाजपा के वरिष्ठ नेता व नगर विधायक संजय सरावगी ने कही। उन्होंने कहा कि पुराने बस स्टैंड का स्वरूप बदलकर करीब 92 करोड़ की लागत से 6.2 एकड़ में नए बस स्टैंड का निर्माण किया जायेगा। इसके लिए डीपीआर बनकर तैयार हो चुका है। उन्होंने बताया कि दिल्ली की ईडीएमएसी इंजीनियरिंग कंसल्टेंट द्वारा डीपीआर बनाया गया है। अब प्रशासनिक स्वीकृति हेतु बूडको द्वारा डीपीआर को आगे बढ़ाया जायेगा। इस बावत शनिवार को नगर विधायक श्री सरावगी की अध्यक्षता में शास्त्री चौक स्थित उनके कार्यालय पर समीक्षा बैठक हुई, जहां बूडको के परियोजना निदेशक कामेश्वर प्रसाद सहित विभाग अन्य अधिकारी व डीपीआर बनाने वाली एजेंसी के प्रतिनिधि मौजूद थे। इस बैठक में नगर विधायक ने डीपीआर की बारिकी से समीक्षा कर बूडको के अधिकारियों को त्वरित गति से कार्य आगे बढ़ाने का निर्देश दिया। जानकारी देते हुए विधायक श्री सरावगी ने कहा कि दिल्ली मोड़ बस स्टैंड को नारकीय हालत से निजात दिलाने के लिए वे लंबे समय से प्रयासरत रहे हैं। बस स्टैंड की दुर्दशा को लेकर उन्होंने कई बार विधानसभा में आवाज उठाया। गत दिनों उनकी पहल पर इसे नगर विकास विभाग में हस्तांतरित किया गया था। बहरहाल, अब बस स्टैंड का कायाकल्प निश्चित हो गया है। यह करीब 25 हजार यात्रियों का रोजाना आवागमन है। नए बस स्टैंड के निर्माण से दरभंगा सहित आसपास के कई जिलों के लोगों को लाभ मिलेगा। नगर विधायक ने कहा कि मॉडर्न लुक व तमाम सुविधाओं से लैस नये बस स्टैंड का स्वरूप एयरपोर्ट जैसा होगा। बस स्टैंड में सैंकड़ों बसों के पार्किंग आसानी से किया जा सकेगा। कार्यालय के लिए 4 मंजिला भवन बनाया जायेगा। पार्किंग की व्यवस्था, पुलिस चौकी, मॉर्केट कॉम्पलेक्स, रेस्टोरेंट, मीटिंग कॉन्फ्रेंस हॉल, मेडिकल रूम, पोस्ट ऑफिस,बैंक, वीआईपी लाउंज, कैंटीन, पर्यटक काउंटर, कई प्रवेश द्वार सहित यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए विभिन्न प्रकार के संसाधनों का निर्माण किया जायेगा। यात्रियों को लिफ्ट, एस्केलेटर, कई विश्रामागार, पार्सल ऑफिस, यात्री शेड, रात में जगजगाती रौशनी, टाईल्स व मार्बल से चमकते फर्श, पीने का शुद्ध पानी, महिलाओं और पुरूषों के लिए अलग शौचालय आदि तमाम सुविधाओं का लाभ मिलेगा।

बच्चों को मिलेगा नृत्य एंव अभिनय का प्रशिक्षण थिएटर कार्यशाला से बच्चों में बढ़ता है आत्मविश्वास

प्रात : किरण संवाददाता

पटनाः सोना कला केन्द्र एवं माँ गायत्री बाल संस्कारशाला के संयुक्त तत्वाधान में 12 दिवसीय सांस्कृतिक विकास कार्यशाला का आयोजन पोस्टल पार्क मे किया जा रहा है। शनिवार को कार्यशाला का शुभारंभ सोना कला केंद्र के संस्थापक रुपेश रंजन सिन्हा, प्रशिक्षक आदर्श वैभव, मां गायत्री बाल संस्कारशाला की संचालिका श्वेता रश्मि, सांस्कृतिक विकास कार्यक्रम के प्रभारी नियाज आलम के द्वारा किया गया। शनिवार से शुरू नाइट कार्यशाला के समापन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन तथा बच्चों को सम्मानित किया जाएगा। सोना कला केंद्र के संस्थापक रुपेश रंजन सिन्हा ने बताया कि थिएटर कार्यशाला से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही उनमें नई ऊर्जा का संचार देखने को मिल रहा है। उन्होंने बताया की 12 दिन तक चलने वाले इस कार्यशाला मे मां गायत्री बाल संस्कारशाला के लगभग 100 छात्र एवं छात्राएं भाग ले रहे हैं। कार्यशाला में मां गायत्री बाल संस्कारशाला की श्वेता रश्मि के मार्गदर्शन में आदर्श वैभव नाट्य एवं सुदामा पांडे के द्वारा नृत्य का प्रशिक्षण बच्चों को दिया जा रहा है। नाट्य प्रशिक्षक व रंगकर्मी आदर्श वैभव ने बच्चों को नाटक का जीवन में महत्व, अभिनय में शारीरिक भाषा का प्रयोग, इम्प्रोवाइजेशन, स्क्रिप्ट कैसे तैयार करते हैं, संवाद सम्प्रेषण कला, नाटक की सुन्दर प्रस्तुति में मंच निर्माण और प्रकाश का महत्व बताया। इस अवसर पर संस्था के शिक्षक शुभम रंजन, माया रानी, सविता अग्रवाल, सुमित्रा कुमारी, सुभद्रा कुमारी, सत्यवंती देवी, आशादीप, रेखा देवी एवम महिला मंडल पोस्टल पार्क, सिंपी कुमारी, राजनंदिनी कुमारी,ज्योति कुमारी, गुंजन कुमारी, पूनम कुमारी के साथ-साथ कई छात्र-छात्राएं मौजूद रहे ।

नीतीश सरकार प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाये रखने में विफल : इंडिया गठबंधन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार में लगातार बढ़ती आपराधिक घटनाओं के खिलाफ राजव्यापी कार्यक्रम के तहत इंडिया गठबंधन के नेताओं ने शनिवार को सड़क पर उतरकर नीतीश सरकार के विरुद्ध प्रतिरोध मार्च निकाला। प्रतिरोध मार्च शहर के प्रमुख सड़कों से गुजर कर समाहरणालय के समक्ष विरोध-प्रदर्शन किया। प्रतिरोध मार्च लचर कानून-व्यवस्था और राज्य सरकार की विफलताओं के खिलाफ इंडिया गठबंधन के तमाम घटक दलों द्वारा आहूत किया गया तथा प्रदर्शन के उपरांत जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया। प्रतिरोध मार्च को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री व उजियारपुर विधायक आलोक कुमार मेहता ने राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि जदयू-बीजेपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था का दिवाला निकल चुका है। बदमाश सरेआम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। प्रदेश की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि नीतीश सरकार प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाये रखने में विफल साबित हो रही है। बिहार में अपराधी खुलेआम मनमानी करते घूम रहे हैं। एक के बाद एक अपराधिक घटनाएं हो रही हैं मगर सूबे की नीतीश सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही। उन्होंने सरकार से सवाल करते हुए कहा कि क्या बिहार सरकार ने अपराधियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। श्री मेहता ने कहा कि नीतीश राज में अपराध चरम पर है और सरकार इसे रोक नहीं पा रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में बेहद तेजी से अपराध का ग्राफ बढ़ रहा है तथा कानून-व्यवस्था पूर्णतः चौपट है। बढ़ते हुए अपराध की घटनाओ से पूरा बिहार आहत है और बिहार की छवि पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है। राजद विधायक ने कहा की बिहार में बेहद तेजी से बढ़ते हुए अपराध की घटनाओं और अराजकता से यह साबित होता हैं की बिहार में शासन का इकबाल खत्म हो गया है। बिहार सरकार हर मोर्चे पर विफल है। मौके पर विधायक अजय कुमार, पूर्व विधान पार्षद सह राजद जिलाध्यक्ष रोमा भारती, पूर्व विधायक डॉ. एज्या यादव, भाकपा जिला मंत्री सुरेन्द्र कुमार सिंह मुन्ना, कांग्रेस जिलाध्यक्ष मो. अब्बू तमीम, भाकपा माले जिला मंत्री प्रोफेसर उमेश कुमार, माकपा जिला मंत्री रामाश्रय महतो, उजियारपुर संगठन के राजद जिलाध्यक्ष राजेश्वर महतो, जिला राजद के प्रधान महासचिव विपीन सहनी, रामचंद्र महतो, सुधीर कुमार देव, राजद प्रदेश महासचिव अशोक कुमार राय, जिला राजद के वरीय उपाध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद सिंह, जिला उपाध्यक्ष ललन यादव, प्रमुख जवाहर लाल राय, वरीय नेता रामवरण महतो, जगदीश राय, जिला राजद प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर, आदि मौजूद थे।

नाव हादसे में मृत के आश्रित को आपदा प्रबंधन विभाग ने दिया सहायता राशि का चेक

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। प्रखंड के गोलमा गांव में हुई नाव हादसे में मृत युवक राजा कुमार राय के आश्रित को आपदा प्रबंधन विभाग से मिलने वाले सहायता राशि का चेक शनिवार को दे दिया गया ।सीओ गोपाल पासवान और तिलकेश्वर थाना अध्यक्ष शैलेश कुमार ने संयुक्त रूप से मृत युवक राजा कुमार के पिता बिन्देश्वरी राय को चार लाख रुपए का चेक उनके घर पर जाकर दिया। चेक प्राप्त करने के दौरान बिन्देश्वरी राय के आंखों में आंसू छलकने लगा। कहा कि मेरे बेटे ने गांव के बीचों बीच बह रहे कोसी नदी के उपधार में पुल निर्माण की मांग को लेकर सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग से लेकर पुल निर्माण विभाग के अधिकारी को लिखित आवेदन दिया था। इससे पहले भी कई बार ग्रामीणों ने पुल निर्माण कराने की मांग को लेकर सड़क जाम और धरना प्रदर्शन किया था। ग्रामीणों के मांग पर यदि सरकार यहां पुल का निर्माण किया होता तो आज मेरा बेटा कोसी मैया के गोद में सदा सदा के लिए नहीं समाते। उन्होंने गांव का फिर किसी का बेट कोसी मां के प्यारा न बने इसके लिए नदी में पुल निर्माण कराने की मांग करते हुए फफक फफक कर रो पड़े। मौके पर पूर्व सांसद प्रतिनिधि राम कुमार राय, पूर्व सरपंच कुंदन कुमार राय सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

एक महिला को उसके समधी व अन्य ने बेरहमी से कि मारपीट रेफर

जमुई [झाझा] एक महिला के साथ उसके समधी के द्वारा बेरहमी से मारपीट करते हुए घायल कर दिया जिससे महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। मामला थानाक्षेत्र के नवकाडीह नागी डैम गांव की है। घायल महिला रूका देवी का आनन फानन में उसके पति विनोद कुमार साह द्वारा इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां घायल महिला का इलाज डॉक्टर के द्वारा किया गया लेकिन स्थिति गंभीर देखते हुए डॉक्टर ने उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया। घायल महिला के पति ने बताया कि विनोद कुमार साह ने बताया कि मेरे बेटे की शादी महेश्वरी गांव के रहने वाले रोहन साव की बेटी के साथ हुआ था। समधी बेटी को ससुराल में बसाने के लिए घर पर आकर विवाद किया जिसको लेकर समधी और उसके घर वालों ने मेरी पत्नी के साथ ईट पत्थर से कई बार प्रहार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। पीड़ित ने बताया कि छह माह पूर्व मेरा बेटा जब ससुराल गया था उसके साथ भी बेरहमी से मारपीट किया था।

मोरम गिराने को लेकर विधवा महिला के साथ कि गई मारपीट

जमुई [झाझा] बखोरीबथान में विद्यालय से साफ- सफाई कर घर लौट रही एक विधवा महिला के साथ गांव के ही कुछ लोगों के द्वारा मारपीट करते हुए घायल कर दिया। घायल महिला की पहचान गुडिया देवी के रूप में हुई है। घायल महिला को परिजनों की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सक के द्वारा घायल महिला का इलाज किया गया। घायल महिला ने बताया कि जब मै गांव के स्कूल से साफ- सफाई करके घर आ रहा था कि तभी कुलदीप यादव का बेटा मोहन यादव ने रास्ता रोकते हुए घर पर मोरम गिराने के विवाद को लेकर गाली गलौज करने लगा जिसका विरोध किया तो वे और उसके घर वालों ने लाठी डंडा से मारपीट करते हुए घायल कर दिया। जब आसपास के लोग जुटने लगे तो वे लोग भाग निकला। वही घायल के पिता टेकन राय ने बताया कि हमलोगों को सूचना मिला तो हमलोग मौके स्थल पर पहुंचकर घायल बेटी को उठाकर अस्पताल लाकर भर्ती करवाया।

बढ़ते अपराध के खिलाफ इंडिया गठबंधन का समाहरणालय के समक्ष प्रतिरोध मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा बिहार में बढ़ते अपराध एवं ध्वस्त होती विधि व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन के राज्य व्यापी आह्वान पर राजद, भाकपा, माकपा, भाकपा माले, कांग्रेस एवं वीआईपी कार्यकताओं ने कलाभवन परिसर से प्रतिरोध मार्च निकालकर समाहरणालय पहुंचा। इस अवसर पर इंडिया गठबंधन के नेताओं ने कहा कि बिहार में इन दिनों जिस तरह से अपराध की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है उसे वर्तमान डबल इंजन की सरकार रोकने में पूरी तरह और असमर्थ साबित हुई है। सत्ता के संरक्षण में अपराध फल फूल रहा है, राज्य में बढ़ रहे अपराधी घटनाओं के कारण आम लोग दहशत में है, अब तो घर के अंदर भी लोग सुरक्षित नहीं हैं, नाबालिक बच्चियों भी घर से निकलने में अपने को भयभीत महसूस करती है, वीआईपी अध्यक्ष मुकेश साहनी के पिता की निर्मम हत्या का प्रसंग हो या अभी बिहटा में एक मोटरसाइकिल चालक द्वारा कार चालक को मामूली गलती के लिए गोलियों से हत्या कर दिए जाने का मामला हो, या मुजफ्फरपुर के डिवीआर कंपनी हुई युवक्तियों के साथ यौन शोषण की घटना हो या मधेपुरा में एक युवक को गला काटकर हत्या कर दिए जाने का घटना हो, संपूर्ण बिहार दिन-ब-दिन इस तरह की घटनाओं से डर के माहौल में जीने को मजबूर है।

बिहार में दिनदहाड़े फिरौती और हत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है, आज यहां की दलित आदिवासी अति पिछड़ा, पिछड़ा और कमजोर वर्ग के लोग के लोग दमन और शोषण के बीच जीने को अभिशप्त है। पूरा शासन प्रशासन ध्वस्त हो चुका है यहां तक की समाज का कोई भी वर्ग इस शासन प्रशासन में सुरक्षित नहीं है। प्रदर्शनकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल राजद के जिला अध्यक्ष जयकांत यादव, प्रदेश महासचिव बिजेंद्र प्रसाद यादव, सीपीआई के राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर, जिला मंत्री विद्याधर मुखिया, भाकपा माले के जिला संयोजक रामचंद्र दास, माकपा के जिला मंत्री मनोरंजन सिंह, कांग्रेस नेता शत्रुघन भगत एवं वीआईपी नेता वालेश्वर भगत ने महामहिम राज्यपाल के नाम स्मार -पत्र को मधेपुरा के जिला अधिकारी को सौंपा। इंडिया गठबंधन के प्रतिरोध मार्च में इंडिया गठबंधन के वरीय नेता प्रो. अरविंद कुमार प्रो. तेज नारायण यादव, गोपाल यादव, डॉ रवि शंकर पिंटू, गणेश मानव, शंभू शरण भारतीय, विनीता भारती, अनिता कुमारी, रागिनी कुमारी, मुकुंद प्रसाद यादव, संजय यादव, उत्तम लाल मुखिया, रमेश कुमार शर्मा, देव यादव, वीरेंद्र आजाद, रंजन यादव, गजेंद्र राम, अरुण यादव, सुरेश यादव, योगेंद्र राम, विष्णुदेव यादव, बालेश्वर चौधरी, सूर्य नारायण राम, निशांत यादव, सोनू यादव, वसीउद्दीन उर्फ नन्हें, शुभम स्टारलीन, सुरेंद्र शाह, कृष्णा मुखर्जी, सीता राम रजक आदि बड़ी संख्या में इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ता शामिल थे। नेताओं ने केंद्र और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर की नारेबाजी।

जमीनी विवाद के निपटारे को ले थाना में लगा जनता दरबार, पूर्व के 1 मामले का हुआ निष्पादन

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। शनिवार को थाना परिसर में थानाध्यक्ष रीता कुमारी के देखरेख में क्षेत्र में जमीनी विवाद से जुड़े मामले के निष्पादन को लेकर जनता दरबार का आयोजन किया गया। आयोजित दरबार में प्रखंड क्षेत्र के जमीनी विवाद से जुड़े पूर्व के एक मामले का नित्पादन किया गया वहीं नया एक भी मामले नहीं आए वहीं जनता दरबार में मौजूद अंचल अधिकारी आरती भूषण कुमारी ने जानकारी देते हुए बताया कि थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद से जुड़े मामले के निंत्रण को ले हर शनिवार को जनता दरबार का आयोजन कर जमीनी विवादों का निबटारा यहां किया जाता है। क्षेत्र के लोग अपनी समस्या को जनता दरबार में रखें ।ताकि उनके भूमि विवाद से जुड़े समस्या का निदान किया जा सके। इस मौके पर सीआई सुभाष कुमार कर्मचारी सुमन कुमारी व कई फरियादी मौजूद थे।

कमेटी की बैठक में रूपए के हो रहे हिसाब के दौरान हुई मारपीट, पांच लोग घायल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के हरना गांव में ग्रामीणों के बीच कमेटी में रूपए के हो रहे हिसाब को लेकर एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के साथ लाठी डंडा, ईट पत्थर चलाते हुए मारपीट किया जिसमें एक पक्ष से दो महिला सहित कुल पांच लोग घायल हो गया। घायल की पहचान नुरेशा खातुन, मो. मोबीन, मो. मासुम अंसारी, मो. याकूब अंसारी और शमीमा खातुन के रूप में हुई है। सभी घायलों को इलाज के लिए परिजनों की मदद से रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां सभी घायलों का डॉक्टर ने इलाज किया लेकिन नुरेशा खातुन और मो. याकूब अंसारी की स्थिति नाजुक रहने पर डॉक्टर ने दोनो को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई भेज दिया। घायल मो. मोबीन ने बताया कि गांव में कमेटी की बैठक हो रही थी जिसमें कई तरह की समाज से जुड़ी बाते हो रही थी साथ ही साथ कमेटी में जु डे लोग रूपए जमा करता है ताकि मुसीबत में किसी को उस जमा राशि से मदद कि जा सके। बैठक के दौरान कमेटी में जमा राशि का हिसाब हो रहा था कि तभी फकरूद्दीन, मनोवर, सनोवर सहित लगभग एक दर्जनभर से अधिक लोग बैठक में अचानक विवाद कर दिया और वे लोग मारपीट करने लगा। मारपीट के दौरान उनलोगों ने जमकर पत्थरबाजी करते हुए लाठी डंडा से मारपीट करते हुए हमलोगों को घायल कर दिया।

हार्ड कोर नक्सली संजय सोरेन को एसएसबी ने जंगल से किया गिरफ्तार

- सात सालों से फरार चल रहे थे

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई : जमुई में 7 सालों से सुरक्षा बलों को चकमा देकर फरार चल रहे हार्ड कोर नक्सली कमांडर संजय सोरेन को गिरफ्तार कर लिया गया है। सुरक्षा बलों ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी अभियान चलाते हुए महेंग्रो जंगल से इसे गिरफ्तार किया है ।इसे कड़ी सुरक्षा के बीच एसएसबी कैंप लाकर पूछताछ की जा रही है। बताया जाता है कि एसएसबी 16वीं वाहिनी के कमांडेंट मनीष कुमार को गुप्त सूचना मिली थी कि 7 सालों से फरार चल रहे पूर्वी बिहार पूर्वोत्तर झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी भाकपा माओवादी संगठन के हार्ड कोर नक्सली कमांडर संजय सोरेन महेंग्रो गांव आया हुआ है ।घेराबंदी करते हुए पुलिस ने किया गिरफ्तार : सूचना के बाद एसएसबी जन्मस्थान और खैरा थाने की पुलिस ने संयुक्त रूप से हड़खार पंचायत के महेंग्रो गांव में सर्च अभियान चलाया। इस दौरान 7 सालों से फरार चल रहे नक्सली संजय सोरेन सुरक्षा बलों को देखते ही जंगल की ओर भागने लगा। इसे सुरक्षा बलों ने घेराबंदी करते हुए गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही गिरफ्तार नक्सली संजय सोरेन को खैरा पुलिस के हवाले कर दिया। पूरे मामले को लेकर प्रशिक्षु डीएसपी सह - खैरा थानाध्यक्ष दुर्गेश दीपक ने बताया कि नक्सली के महेंग्रो जंगल आने की गुप्त सूचना मिली थी। जिसके बाद एसएसबी जवानों ने संयुक्त रूप से इलाके में छापेमारी अभियान चलाया ।इस दौरान वर्षो से फरार चल रहे नक्सली कमांडर संजय सोरेन को गिरफ्तार किया गया है। जिसे थाने लाकर पूछताछ की जा रही है। बताया जाता है कि गिरफ्तार नक्सली शीर्ष नक्सली प्रवेश, चिराग, सिद्धू कोड़ा, अरबिंद यादव के साथ मिलकर कई नक्सली कांडों को अंजाम दे चुका है, जिसकी जांच की जा रही है।

मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने यक्षराज स्थान समीप वनक्षेत्र को विकसित करने का दिया भरोसा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] प्रकृति की गोद में अपनी खुबसूरती चारो तरफ फैलाने वाली यक्षराज स्थान समीप वनक्षेत्र को भी एक सुंदर रूप देने को लेकर बिहार सरकार के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने अपने विचारों को रखा। पत्रकारों से क्षेत्र में प्रकृति के प्रति रूचि रखते हुए मंत्री से यक्षराज स्थान समीप वनक्षेत्र के बारे में जानकारी मिलने पर मंत्री ने कहा कि यक्षराज स्थान समीप वनक्षेत्र को भी विकसित किया जाएगा ताकि इस क्षेत्र में अधिक से अधिक पर्यटक आ सके। पर्यटन के क्षेत्र में विकास करना हमारी प्राथमिकता है। यक्षराज स्थान समीप जंगल में मंदिर की खूबसूरती की बातों को रखते हुए उस क्षेत्र में पार्क बनाने की बात पर मंत्री ने कहा कि वनक्षेत्र का भ्रमण आने वाले समय में किया जाएगा उससे पहले उस क्षेत्र की वनक्षेत्र का पूरा विवरण भी लिया जाएगा साथ ही सुगम मार्ग आदि की जानकारी लेने पर एक प्रपोजल उसपर बनाने का पूरा प्रयास रहेगा ताकि वनक्षेत्र को और विकसित किया जा सके।

नौवीं व दसवीं के विधार्थियों की 22 से मासिक परीक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा सरकारी विद्यालयों में नामांकित छात्र- छात्राओं के बीच पढ़ाई के सही आकलन को लेकर हर महीने मासिक परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। बीएसईबी द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कक्षा नौवीं एवं दसवीं में नामांकित छात्र-छात्राओं के लिए जुलाई महीने की मासिक मूल्यांकन सह जांच परीक्षा जिले के सभी उच्च माध्यमिक विद्यालय में 22 जुलाई से 24 जुलाई तक दो पालियों में आयोजित की जाएगी। मासिक परीक्षा के आयोजन को लेकर समिति के परीक्षा नियंत्रक द्वारा आधिकारिक तौर पर परीक्षा से संबंधित कार्यक्रम सभी विद्यालयों को उपलब्ध करा दिया गया है। समिति द्वारा मासिक परीक्षा को लेकर जारी कार्यक्रम के अनुसार परीक्षा के पहले दिन यानी 22 जुलाई को प्रथम पाली में मातृभाषा के तहत हिंदी, बांग्ला, उर्दू ,एवं मैथिली भाषा की परीक्षा ली जाएगी। जबकि द्वितीय पाली में द्वितीय भारतीय भाषा के तहत संस्कृति, हिंदी ,अरबी, फारसी, एवं भोजपुरी विषय की परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा के दूसरे दिन 23 जुलाई को प्रथम पाली में विज्ञान एवं दृष्टबाधित छात्र-छात्राओं के लिए संगीत की परीक्षा ली जाएगी। जबकि द्वितीय पाली में सामाजिक विज्ञान की परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा के अंतिम दिन यानी 24 जुलाई को प्रथम पाली में गणित एवं दृष्टि बाधित छात्र- छात्राओं के लिए गृह विज्ञान एवं द्वितीय पाली में समान अंग्रेजी की परीक्षा आयोजित होगी। मासिक परीक्षा को लेकर बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा सभी विद्यालय को उत्तर पुस्तिका सहित अन्य सामग्री जिला शिक्षा कार्यालय को उपलब्ध कराई गई है।

भलुआ में प्रारंभ हुए एक दिवसीय अष्टयाम निकाली गई कलश शोभायात्रा

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र के भलुआ मुहल्ले के वार्ड संख्या 12 में शनिवार से श्री श्री 108 अखंड सह हरिकीर्तन एक दिवसीय अष्टयाम सुभाष नवयुवक संघ की ओर से प्रारंभ करवाया गया। एक दिवसीय अष्टरूाम को लेकर भलुआ की ओर से कलश शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें कुल 501 सुहागिन महिला, युवती, कुंवारी कन्याओं ने मिलकर कलश यात्रा निकाली। गाजे बाजे ढोल नगाड़ों के साथ निकली कलश शोभायात्रा में शामिल अन्य श्रद्धालु हाथों मे ध्वज लिए जय श्री राम के जयकारे लगाते हुए चरघरा स्थित उलायनदी पहुंचा जहां कलश में जल भरा गया। जल भरने के बाद कलश शोभायात्रा पूजन स्थल के आसपास के क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए पुनः पूजन स्थल पहुंचा जहां पंडितों के द्वारा अष्टयाम का शुभारंभ मंत्रोच्चारण के साथ प्रारंभ किया गया। स्थानीय सुबोध कुमार, मिथुन साव, अशोक साव, कृष्णा साव, गुडडु साव, मनोहर साव, रामदेव साव आदि ने बताया कि गांव में सुख समृद्धि और लोगों मे धर्म के प्रति सजगता लाने को लेकर अखंड सह हरिकीर्तन एक दिवसीय अष्टयाम प्रारंभ किया। अष्टयाम और अ खंड सह हरिकीर्तन प्रारंभ होने से क्षेत्र भक्तिमय बना हुआ है।

अर्जून मंडल सहित अन्य लोगों को मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] जमुई जिला मे पर्यावरण के प्रति अपनी सेवा देने वाले लोगों को शनिवार को नागी पक्षी आश्रयणी केंद्र पर वन महोत्सव के मौके पर बिहार सरकार के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार के द्वारा अंगवस्त्र, एक पौधा और अन्य उपहार देकर सम्मानित किया। लक्ष्मीपुर प्रखंड के चिन्वेरिया क्षेत्र के रहने वाले अर्जून मंडल को औषधीय पौधा के साथ अन्य कई तरह के पौधारोपण कर क्षेत्र को एक अलग पहचान स्थापित करने के लिए सम्मानित किया था बताते चले कि इससे पूर्व राष्ट्रपति ने सम्मानित किया था। वही चार हजार से भी जिले के अलग अलग क्षेत्रों में पौधारोपण करने वाले साईकिल यात्रा एक विचार मंच के सदस्य हरेराम,डुगडुग को भी सम्मानित किया गया। इसके अलावे आर्यण सिंह, निर्भय, संतोष, धीरज को भी मंत्री के द्वारा सम्मानित किया। पर्यावरण के प्रति सम्मानित लोगों का प्यार एवं स्नेह देखकर उन्होनें कहा कि यह बड़े ही गौरव की बात है कि इनलोगों ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर जो सराहनीय कदम उठाते हुए कार्य कर रहे है इससे अन्य लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए। इसी तरह हर लोग पौधारोपण करे तो आने वाले समय में पूरी धरती हरियाली की चादर ओढ़ लेगी और चारो तरफ हरे पेड़ पौधा से शुद्ध वातावरण और शुद्ध वायुमंडल बन जाएगा।

बिहार के हर बुजुर्ग को दिए जाएंगे 2 हजार, पदयात्रा कर रहे पीके का बड़ा ऐलान

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिले के गम्हरिया प्रखंड में पदयात्रा कर रहे जन सुराज अभियान के सूत्रधार प्रशांत किशोर दिन भर की पदयात्रा पूरा कर रात्रि विश्राम के लिए कौड़िहार विधालय तरावे पहुंचे। जहां उन्होंने आम सभा को संबोधित करते हुए बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि घर-द्वार छोड़कर मैं पिछले 18 महीने से पदयात्रा कर रहा हूं। बिहार की जनता को समझा रहा हूं कि जब अगले साल जनता का राज बनेगा, तब नाली-गली बने चाहे न बने, साल भर के अंदर जितने आपके घर के लोग रोजी-रोजगार के लिए बाहर गए हैं, उन्हें वापस बुलाकर बिहार में ही रोजगार मुहैया कराया जाएगा। इसके आगे प्रशांत किशोर ने कहा कि जन सुराज का दूसरा संकल्प है, 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को 2 हजार रुपये पेंशन की व्यवस्था करेंगे ताकि उन्हें किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। नीतीश कुमार जो आपको 400 रुपये भीख की तरह दे रहे हैं, उसे बदल दिया जाएगा।

स्कूलों के पास मंडराते मनचलों पर पुलिस ने कि कार्रवाई, मनचलों में दिखा पुलिस का भय

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] शहर में कई सरकारी गैर सरकारी स्कूलों में मनचलों के द्वारा कि जा रही शरारती हरकतों की शिकायत थाना को प्राप्त होने के बाद शनिवार को थानाध्यक्ष संजय सिंह के दिशा निर्देश पर कार्रवाई कि गई। दरअसल मनचलों के द्वारा यक्षराज स्थान समीप संत जोसेफ स्कूल, बालिका उच्च विद्यालय सहित अन्य कई स्कूलों के पास स्कूली छात्रों के साथ मनचलों के द्वारा बदमाशी करते हुए हूटिंग करते और स्कूली छात्राओं को परेशान करने की शिकायत थानाध्यक्ष को मिला था जिसके बाद थानाध्यक्ष के दिशानिर्देश पर एसआई कुंज बिहारी , एसआई नंदन कुमार दलबल के साथ अलग अलग जगहों पर पहुंचकर मनचलों के खिलाफ कार्रवाई किया। स्कूल के पास पहुंचकर मनचलों को खदेड़कर पकड़ा और पकड़ने के बाद उसपर आगे की कार्रवाई करने के लिए थाना लेकर आया। दोनो एसआई ने बताया कि अगर प्रखंड क्षेत्र में इस तरह की कोई कृत्य करते पकड़ा जाता है तो उनलोगों पर कार्रवाई कि जाएगी। वही नगर क्षेत्र में पुलिस के द्वारा मनचलों पर कि गई कार्रवाई से अभिभावकों, बुद्धिजीवियों ने पुलिस के सराहनीय कार्य की खूब प्रशंसा किया तो वही पुलिस के द्वारा मनचलों पर कि गई कार्रवाई से मनचलों के बीच हड़कंप भी मच गया।

मधेपुरा नगर परिषद की वार्षिक बजट पर लगा ग्रहण

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा नगर परिषद की वार्षिक बजट पर ग्रहण लग गया। सामान्य बोर्ड की बैठक बीच में हीं स्थगित हो गई।सदन से बाहर निकली मुख्य पार्षद गुस्से में आगबबूला हुई। वहीं मुख्य पार्षद को अपनी जान की खतरा सता रही है। मुख्य पार्षद ने कहा सदन में मुझे वार्ड पार्षद प्रतिनिधि आंख निकालने की धमकी दे रहे थे। बिना प्रशासन के बैठक करना संभव नहीं है। दरअसल मधेपुरा नगर परिषद की वार्षिक बजट (2024-25) पर एक बार फिर ग्रहण लग गया है। बता दें कि मधेपुरा नगर परिषद में आयोजित सामान्य बोर्ड की बैठक के बीच में हीं शहर की विकास को लेकर हंगामा शुरू हो गया, जहां बात इतनी आगे बढ़ की की एक वार्ड पार्षद के देवर ने सदन में घुसकर मुख्य पार्षद की आंख तक निकाल लेने की धमकी दे डाली। हालांकि सामान्य बोर्ड की बैठक बीच में हीं स्थगित कर मुख्य पार्षद कविता कुमारी साहा, बैठक से बाहर निकल गयी। साथ हीं गुस्से से आग बबूला हुई मुख्य पार्षद ने कहा हमको है अपनी जान की खतरा, सदन में आंख निकालने की भी हमे दी जा रही है धमकी। जिस कारण बैठक बिना प्रशासन के संभव नहीं है। बताया गया कि सामान्य बोर्ड की बैठक मुख्य पार्षद की अध्यक्षता में चल रही थी। बैठक के दौरान विभिन्न वार्डों में जलजमाव की समस्याओं से निजात दिलाने, तथा आवास योजना सहित अन्य मामलों पर चर्चा भी हो रही थी। चर्चा के दौरान पिछली बैठक की संपूष्टि करने का मामला सामने आया। वहीं मुख्य पार्षद ने कहा कि वे बिना जाँच के पिछली बैठक की कार्यवाही पंजी पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे और ना हीं संपूष्टि करेंगे। इसी बात को लेकर हंगामा सुरू हो गया, हंगामे के बीच एक वार्ड पार्षद के देवर सदन में घुसकर मुख्य पार्षद को आंख निकाल लेने की धामी दे डाले, जिसके बाद मुख्य पार्षद गुस्से में आगबबूला हुई और आक्रोशित होकर अचानक बैठक से बाहर निकल गयी। मुख्य पार्षद ने आरोप लगाया है कि एक पार्षद प्रतिनिधि द्वारा बैठक के दौरान उनके साथ अशोभनीय शब्द का इस्तेमाल किया और आंख निकालने की धमकी भी दी, उन्होंने कहा कि प्रशासन के उपस्थिति में हीं अब सामन्य बोर्ड की बैठक रखी जायेगी। वहीं इस मामले को लेकर विभिन्न वार्ड पार्षदों ने मुख्य पार्षद के अचानक सदन से बाहर निकल जाने पर इस मामले को दुर्भाग्यपुर्ण बताया साथ हीं शहर विकास विरोधी भी करार दिया। उन्होंने मुख्य पार्षद पर विकास विरोधी होने का आरोप भी लगाया है। हालांकि मधेपुरा नगर परिषद में चल रहे इस आरोप प्रत्यारोप की राजनीति में नगर के विकास की गती जरूर थम गई है। शहर के कई वार्डो में जलमाव और गंदी शहर की अभिशाप बन गई है।

नागी पक्षी आश्रयणी केंद्र पर वन महोत्सव पर मंत्री प्रेम कुमार ने किया पौधारोपण, नौका विहार का लिया आनंद

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी प्रखंड क्षेत्र स्थित नागी नकटी पक्षी आश्रयणी केंद्र पर शनिवार को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग जमुई वन प्रमंडल के द्वारा मनाए गए 75 वां वन महोत्सव में सहकारिता सह पर्यावृण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग बिहार के मंत्री डॉ. प्रेम कुमार आश्रयणी केंद्र पहुंचे। इस दौरान उन्होनें क्षेत्रीय विधायक दामोदर रावत एक पेड़ मां के नाम से आश्रयणी केंद्र पर पौधारोपण किया गया। मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने नागी पक्षी आश्रयणी केंद्र का चारो तरफ निरीक्षण करने के बाद नौका विहार का आनंद उठाते हुए वर्तमान में मौजूद अलग अलग कई प्रजातियों के पक्षियों को देखने और प्रकृति की गोद में बसा नागी डैम का लुत्फ उठाया। मंत्री ने बताा कि नागी पक्षी आश्रयणी केंद्र बिहार के जमुई जिले में अवस्थित है तथा मूल रूप से एक जलाशय है जिसे बरसात के मौसम में जल भंडारण और सिंचाई के लिए शुष्क मौसम के दौरान पानी की उपलब्धता बनाए रखने के लिए नागी नदी पर बनाया गया था। नागी बांध को वर्ष 1984 में पक्षी आश्रयणी घोषित किया गयाा जिसका क्षेत्रफल 191.51 हेक्टर है। जमुई एवं झाझा रेलवे स्टेशन से यह क्रमशः 31, 12 किलोमीटर की दूरी पर है। उन्होनें आगे बताया नागी पक्षी आश्रयणी को भारत के 81 वीं रामसर स्थल के रूप में घोषित किया गया है साथ ही ये महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र की सूची में स्थान रखते है। क्योकि यहां पर कई तरह की साइबेरियन पक्षी और जलीय पक्षी अपना स्थल बनाते है। इस स्थल को और विकसित करने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है ताकि यहां पर आने वाले सैलानियों को प्रकृति की गोद में बसा यह स्थल आकर्षित कर सके। वही आश्रयणी केंद्र पर पेयजल, ठहराव स्थल सहित बैट्री चालित नौका, दिव्यांग के लिए सुविधा जैसे पूछे गए सवालों पर उन्होनें कहा कि इस आश्रयणी केंद्र पर क्या क्या सुविधा पर्यटकों को होनी चाहिए इसका भी लिस्ट बनाया जा रहा है ताकि पर्यटकों को सुविधा दी जा सके। वही नागी पक्षी आश्रयणी केंद्र से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित नकटी डैम का भी निरीक्षण किया और बताया कि नकटी डैम की खूबसूरती भी धीरे धीरे चचाओं में आ रही है इसलिए वहां पर विकास का कार्य किया जाएगा। नकटी डैम पर जाने वाली जर्जर सड़क का भी निर्माण करवाया जाएगा। इसके अलावे दोनो नागी और नकटी स्थल पर पक्षियों के लिए भी कई तरह की सुविधा देने की बात उन्होनें कहा।

बिहार को विशेष राज्य और कोसी-सीमांचल को विशेष पैकेज मिले : पप्पू यादव

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा बीएन मंडल विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में शुक्रवार को पूर्णिया सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव का स्वागत सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सांसद बनने के बाद पहली बार मधेपुरा पहुंचे पप्पू यादव का लोगों को गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। पूरे शहर का भ्रमण के बाद शाम लगभग चार बजे वे बीएनएमयू के ऑडिटोरियम पहुंचे। जहां मौजूद लोगों ने उनपर फूलों की वर्षा कर उनका स्वागत किया। अपने संबोधन में पप्पू यादव ने कहा कि हमेशा बिहार की जनता राजनीति का शिकार रही है। राजनीतिक दुकान चलाने के लिए लोग विशेष राज्य और विशेष पैकेज की बात करते हैं। उन्होंने कहा कि बिहार को विशेष राज्य और कोसी-सीमांचल को विशेष पैकेज मिले यह उनकी पहली प्राथमिकता है। कोसी-सीमांचल में दो दर्जन से अधिक फैक्ट्री मक्का, मखान और फूड प्रोसेसिंग की आवश्यकता है। कोसी-सीमांचल से बाढ़ की मुक्ति और हाईडैम का निर्माण उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। इस इलाके से डेढ़ करोड़ लोगों का पलायन रोकना होगा। इसके लिए इसी क्षेत्र में लोगों को रोजगार का अवसर उपलब्ध करवाना होगा। पप्पू यादव ने कहा कि भ्रष्टाचार मुक्ति के लिए अभियान चलाया जाएगा। आमजनों के लिए निःशुल्क रामजानकी अस्पताल की शुरूआत करने जा रहे हैं। सभी जिला मुख्यालय में एक-एक अस्पताल का निर्माण करवाया जाएगा।

सम्पादकीय

निशाने पर प्रधानमंत्री

संदर्भ मई, 2014 का है। लोकसभा चुनाव के प्रचार में 10-12 दिन शेष थे। जाहिर है कि न तो जनादेश सार्वजनिक हुआ था और न ही नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने थे। अलबत्ता मीडिया से संवाद और साक्षात्कार के दौरान उन्होंने यह जरूर कहा था कि यदि हमारी सरकार बनी, तो 1993 के मुंबई सांप्रदायिक दंगों के आरोपियों को भारत लाएंगे। भाजपा के तत्कालीन प्रधानमंत्री उम्मीदवार मोदी ने अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहीम का भी जिक्र किया था कि उसे भी भारत लाएंगे और कानूनी कार्रवाई करेंगे। ऐसे बयान सुनकर एक अन्य डॉन ने मीडिया के जरिए मोदी को मारने की धमकी दी थी। यह भी कहा था कि दाऊद को तब भारत ला पाएंगे, जब जिंदा बचेंगे। मीडिया के जिन चेहरों के जरिए वह धमकी दी गई थी, उन्होंने भारत सरकार में संबद्ध अधिकारियों को खुलासा कर दिया था। उसके बाद मोदी बीते 10 साल से देश के प्रधानमंत्री हैं और दाऊद को अभी तक भारत नहीं लाया जा सका है। हमारा विश्लेषण अंडरवर्ल्ड डॉन को लेकर नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी की सुरक्षा हमारा चिंतित सरोकार है। प्रधानमंत्री की सुरक्षा का मुद्दा तो सार्वकालिक है, लेकिन अब यह अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर किए गए हमले के संदर्भ में ज्यादा प्रासंगिक है। उप्र के पूर्व पुलिस महानिदेशक विक्रम सिंह ने एक अंग्रेजी अखबार में लेख लिखकर प्रधानमंत्री मोदी की सुरक्षा पर चिंता जताई है। उसके लिए मौजूदा नफरती राजनीति को ही बुनियादी कारण माना है कि प्रधानमंत्री लगातार निशाने पर रहते हैं। वरिष्ठतम आईपीएस अधिकारी की सलाह है कि प्रधानमंत्री को निशाना बनाकर हिंसा, हत्या, मौत सरीखे शब्दों का इस्तेमाल न किया जाए, क्योंकि ये किसी भी नागरिक को उकसा, भडका सकते हैं। राजनीति में यह हिंसक प्रवृत्ति बीते एक दशक के दौरान ज्यादा बढ़ी है।

सहिष्णुता और सद्भाव नगण्य-से होते जा रहे हैं। विपक्ष भाजपा-एनडीए की नीतियों का विरोध करने के बजाय प्रधानमंत्री मोदी को निजी तौर पर निशाना बना रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आम चुनाव के दौरान जून में, वाराणसी में, प्रधानमंत्री के काफिले पर किसी ने चप्पल फेंकने का दुस्साहस किया। वह बम या ग्रेनेड भी हो सकता था। इस संदर्भ में राहुल गांधी की टिप्पणी थी कि अब लोग मोदी से डरते नहीं हैं। जब राहुल गांधी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बन गए, तो उन्होंने अपने पहले भाषण में ही हिंसा और हत्या सरीखे शब्दों का कई बार इस्तेमाल किया। चप्पल फेंकना भी प्रधानमंत्री की चाक-चौबंद और अति प्रशिक्षित सुरक्षा-व्यवस्था पर गंभीर सवाल है। पंजाब के फिरोजपुर इलाके में प्रधानमंत्री के काफिले को एक हाईवे पर अटक जाना पड़ा, तो उस स्थान पर पाकिस्तान की तरफ से हमला किया जा सकता था ! इन कथनों और घटनाओं के अलावा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय ने बयान दिया था कि मोदी हिटलर की मौत मरेगा। मोदी की बोटी-बोटी करने का बयान देने वाला शख्स आज लोकसभा में कांग्रेस सांसद है। किसी ने यहां तक बयान दिया कि मोदी के सिर पर डंडे मारने चाहिए। प्रधानमंत्री के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल किया गया है, उसकी एक लंबी सूची है। राजनीति में आजकल निजी प्रहार खूब किए जाते हैं। नरेंद्र मोदी ने भी राजनेता की हैसियत से कुछ आपत्तिजनक शब्द कहे थे, लेकिन उनके भाव मारने-काटने, हत्या कर देने या बेरोजगार युवा डंडे से पीटेंगे आदि नहीं थे। गौरतलब है कि मोदी देश के निर्वाचित प्रधानमंत्री हैं। देश पहले भी दो प्रधानमंत्रियों की हत्या देख और झेल चुका है। दरअसल ये शब्द किसी को भी भडका और उत्तेजित कर सकते हैं। उस मनोस्थिति में वह प्रधानमंत्री पर हमला कर सकता है। कई धमकीपूर्ण बयान किसान आंदोलन के दौरान भी प्रधानमंत्री मोदी के लिए कहे गए। कई राजनीतिक दल उन धमकीवालों के साथ खड़े रहे। 26 जनवरी, 2021 को तो दिल्ली में ऐसा उपद्रव मचाया गया, माना दिल्ली पर ही किसी बाहरी शक्ति ने आक्रमण किया हो ! प्रधानमंत्री की सुरक्षा तो चिंतित सरोकार है, लेकिन हमारी राजनीति की गरिमा, सभ्यता और शालीन व्यवहार भी दांव पर हैं कि हमारी राजनीति कितना नीचे तक गिर सकती है। इसे रोका जाना चाहिए और राजनीति मुद्दों, तथ्यों के आधार पर की जानी चाहिए। वही लोकतंत्र का सौंदर्य है।

व्यंग्य : भांति-भांति के बाबा जी

विवेक रंजन श्रीवास्तव

बचपन में हम भी बाबा हुआ करते थे ! हर वह शख्स जो हमारा नाम नहीं जानता था, हमें प्यार से बाबा कह कर पुकारता था। इस बाबा गिरी में हमें लाड़, प्यार और कभी जभी चाकलेट वगैरह मिल जाया करती थी। बाबा शब्द से यह हमारा पहला परिचय था। अपनी इसी उमर में हमने बा बा ब्लैक शीप वाली राइम भी सीखी थी। जब कुछ बड़े हुये तो बालभारती में सुदर्शन की कहानी हार की जीत पढ़ी। बाबा भारती और डाकू खड़गसिंग के बीच हुये संवाद मन में घर कर गये। बाबा का यह परिचय संवेदनशील था। कुछ और बड़े हुये तो लोगों को राह चलते अपरिचित बुजुर्ग को भी बाबा का सम्बोधन करते सुना। इस वाले बाबा में किंचित असहाय होने और उनके प्रति दया वाला भाव दिखा। कुछ दूसरे तरह के बाबाओं में कोई हरे कपड़ों में मयूर पंखो से लोभान के धुंयें में भूत, प्रेत, साये भगाता मिला तो कोई काले कपड़ों में शनिवार को तेल और काले तिल का दान मांगते मिला। कुछ वास्तविक बाबा आत्म उन्नति के लिये खुद को तपाते हुये भी मिले। कुछ तंत्र मंत्र के ज्ञानी निरभिमानी थे तो कुछ वेश भूषा आचार व्यवहार की मनमानी करते मिले। कुछ के पीछे दुनियां दीवानी मिली तो कुछ दोहरे चरित्र से माया के दीवाने बाबा भी मिले। कष्टों दुखों से घिरे दुनिया वालो को बाबाओं की बड़ी जरूरत है। किसी की संतान नहीं है, किसी की संतान निकम्मी है, किसी को रोजगार की तलाश है, किसी को पत्नी या प्रेमिका पर भरोसा नहीं है, किसी को लगता है कि उसे वह सब नहीं मिलता जिसके लायक वह है, कोई असाध्य रोग से पीड़ित है तो किसी की असाधारण महत्वाकांक्षा वह साधारण तरीकों से पूरी कर लेना चाहता है, वगैरह वगैरह। हर तरह की समस्याओं का एक ही शार्ट कट निदान होता है बाबा। बाबा भस्म, पानी, भभूत, फूल, धूप, प्रसाद से कठिनाई का हल ढूंढने का मनोविज्ञान जानते हैं, इसलिये प्रायः लोगों को एक बाबा की तलाश होती है, जो उन्हें विभ्रम की स्थिति में राह बता सके, थोड़ा ढाढ़स बंधा सके। एक अच्छे बाबा को किंचित कालिदास की तरह का गुणवान होना चाहिए, अच्छा हो कि वह कुछ वाचाल हो, दुनियादारी से थोड़ा बहुत वाकिफ हो, कुछ जुमले कहावतें उसे कंठस्थ हों, टेक्टफुल हो, थोड़ा बहुत आयुर्वेद और ज्योतिष जानता हो तो बेहतर, चाल चरित्र में ठीक ठाक हो तो बात ही क्या। ऐसा बंदा सरलता से बाबा के रूप में महिमा मण्डित हो सकता है। बाबा बाजी वाले बाबाओं के रूप में चकाचौंध होती है। बड़े-बड़े आश्रम, लकदक गाडिं का काफिला भगवा वस्त्रों में चेले चेलियों की शिष्य मंडली बन ही जाती है। ऐसे बाबाओं के प्रवचन के पंडाल होते हैं, पंडालो के बाहर बाबा जी के प्रवचनों की डी वी डी, किताबें, देसी दवाईयां विक्रय करने के स्टाल लगाते हैं। टी वी चैनलों पर इन बाबाओं के टाइम स्लाट होते हैं। इन बाबाओं को दान देने के लिये बैंको के एकाउंट नम्बर होते हैं। कोई बाबा हवा से सोने की चेन और घड़ी निकाल कर भक्तों में बांटने के कारण चर्चित रहे तो कोई जमीन में हफ्ते दो हफ्ते की समाधि लेने के कारण, कोई योग गुरु होने के कारण तो कोई आयुर्वेदाचार्य होने के कारण सुर्खियों में रहते हैं। बड़े बड़े मंत्री संत्री, अधिकारी, व्यापारी इन बाबाओं के चक्कर लगाते हैं। ही बाबा और श्री बाबा के अपने अपने छोटे बड़े ग्रुप सुर्खियों में रहे हैं। बाबाओं के रहन सहन आचार विचार के गहन अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि किसी को बाबा बनाने के लिये प्रारंभिक रूप से कुछ सकारात्मक अफवाह फैलानी होती है। आम आदमी की भीड़ चमत्कार को नमस्कार करते आई है। कुछ महिमा मण्डन, झूठा सच्चा गुणगान करके दो चार विदेशी भक्त या समाज के प्रभावशाली वर्ग से कुछ भक्त जुटाने पड़ते हैं। एक बार भक्त मण्डली जुटनी शुरू हुई तो फिर क्या है, कुछ के काम तो गुरु भाई होने के कारण ही आपस में निपट जायेंगे, जिनके काम न हो पा रहे होंगे बाबा जी के रिफरेंस से मोबाईल करके निपटवा देंगे। हमारे द्वारा दीक्षित बाबा जी को हम स्पष्ट रूप से समझा देंगे कि उन्हें सदैव शाश्वत सत्य ही बोलना है, कम से कम बोलना है। गीता के कुछ श्लोक, और रामचरित मानस की कुछ चौपाईयां परिस्थिति के अनुरूप बोलनी है। जब संकट का समय निकल जायेगा और व्यक्ति की समस्या का अच्छा या बुरा समाधान हो जायेगा तो बोले गये वाक्यों के गूढ़ अर्थ लोग अपने आप निकाल लेंगे। बाबाओं के पास लोग इसीलिये जाते हैं क्योंकि वे दोराहे पर खड़े होते हैं और स्वयं समझ नहीं पाते कि कहां जायें, वे नहीं जानते कि उनका ऊंट किस करवट बैठेगा, यह तो कोई बाबा जी भी नहीं जानते कि कौन सा ऊंट किस करवट बैठेगा, पर बाबा जी, ऊंट के बैठते तब भक्त को दिलासा और ढाढ़स बंधाने के काम आते हैं। यदि ऊंट मन माफिक बैठ गया तो बाबा जी की जय जय होती है, और यदि विपरीत दिशा में बैठ गया तो पूर्वजन्मों के कर्मो का परिणाम माना जाता है।

कारगिल विजय दिवसः याद रखना, भूल ना जाना वतन पर मरने वालों को

कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच हुआ था। परवेज मुशर्रफ की सरपरस्ती में पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हो गया था कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार घुसपैठ को छोड़, अपने वतन में वापिस जाने को मजबूर किया। कारगिल युद्ध ऊँचाई वाले इलाके पर हुआ था और भारतीय सेनाओं को पहाड़ियों के नीचे से लड़ने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। अंततः 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इसलिए 26 जुलाई हर वर्ष कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस करीब दो महीने तक चले युद्ध में भारतीय सेना ने लगभग 527 से अधिक वीर योद्धाओं को खोया था वहीं 1300 से ज्यादा घायल हुए थे। युद्ध में 2700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे। उन शहीदों के नाम कोई भी राजधानी के राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में जाकर देख सकता हैं। उस जंग में दुश्मन के दांत खट्टे करने वाले शहीद कैप्टन अनुज नैयर की शौर्यगाथा को किसने नहीं सुना? राजधानी के दिल्ली पब्लिक स्कूल, धौला कुआं के छात्र रहे कैप्टन अनुज नैयर जाट रेजिमेंट में थे।

आर.के. सिन्हा
लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं

अब कुछ दिनों के बाद ही 26 जुलाई को सारा देश कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाएगा। उस युद्ध में भारतीय सेना ने सभी बाधाओं को पार करते हुए भारी बलिदान देते हुये भी कारगिल क्षेत्र के बर्फीले पहाड़ों से पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ दिया था। यह भारत का पहला टेलीविजन युद्ध भी था जिसके दौरान टोलोलिंग और टाइगर हिल जैसे अज्ञात निर्जन शिखर सारे देश की जुबान पर आ गए थे।

कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच हुआ था। परवेज मुशर्रफ की सरपरस्ती में पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हो गया था कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार घुसपैठ को छोड़, अपने वतन में वापिस जाने को मजबूर किया। कारगिल युद्ध ऊँचाई वाले इलाके पर हुआ था और भारतीय सेनाओं को पहाड़ियों के नीचे से लड़ने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। अंततः 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इसलिए 26 जुलाई हर वर्ष कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस करीब दो महीने तक चले युद्ध में भारतीय सेना ने लगभग 527 से अधिक वीर योद्धाओं को खोया था वहीं 1300 से ज्यादा घायल हुए थे। युद्ध में 2700 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए थे। उन शहीदों के नाम कोई भी राजधानी के राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में जाकर देख सकता हैं। उस जंग में दुश्मन के दांत खट्टे करने वाले शहीद कैप्टन अनुज नैयर की शौर्यगाथा को किसने नहीं सुना? राजधानी के दिल्ली पब्लिक स्कूल, धौला कुआं के छात्र रहे कैप्टन अनुज नैयर जाट रेजिमेंट में थे। कैप्टन अनुज नायर ने कारगिल जंग में टाइगर हिल्स सेक्टर में अपने साथियों के घायल होने के बाद भी मोर्चा सम्भाले रखा था। उन्होंने दुश्मनों को धूल में मिलाकर इस सामरिक चोटी टाइगर हिल्स को शत्रु के कब्जे से मुक्त करवाया था। अब बात करें कैप्टन हनीफ़ुद्दीन की। कैप्टन हनीफ़ुद्दीन राजपूताना राइफल्स के अफसर थे। कैप्टन हनीफ़ुद्दीन ने कारगिल की जंग के समय तुरतुक में शहादत हासिल की थी। कारगिल के तुरतुक की ऊंची बर्फ से ढंकी पहाड़यों पर बैठे दुश्मन को मार गिराने के लिए हनीफ़ुद्दीन ऊपर से हो रहे गोलाबारी के बावजूद आगे बढ़ते रहे थे।

उत्तर प्रदेश के नोएडा के सेक्टर 18 में कैप्टन विजयंत थापर मार्ग है। कैप्टन थापर कारगिल युद्ध में देश के लिए कुबार्नी देने वाले सबसे कम उम्र के जांबाज थे। जून 1999 में कैप्टन विजयंत थापर ने तोलोनिंग पहाड़ी पर विजय हासिल की और भारत का तिरंगा लहराया। ये तो छोटी सी शौर्य गाथाएं हैं हमारे कुछ वीरों की। ये और बाकी तमाम वीरों को इसलिए रणभूमि में अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा, क्योंकि परवेज मुशर्रफ पर एक तरह से पागलपन सवार था। अंततः उसका उसे नुकसान ही हुआ। आजादी के बाद देश की सेनाओं ने चीन के खिलाफ 1962 में और पाकिस्तान के खिलाफ 1948, 1965, 1975 और 1999 में जंग लड़ी। ये सारी लड़ाईयां हम पर थोपी गईं। हमने तो कभी आक्रमण किया ही नहीं। 1987 से 19990 तक श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान भारतीय शांति सेना के शौर्य को भी नहीं भुलाया जा सकता है। 1948 में 1, 110 जवान, 1962 में सबसे ज्यादा 3, 250 जवान, 1995 में 3, 64 जवान, श्रीलंका में 1, 157 जवान और 1999 में 522 जवान शहीद हुए। हमारी सेना में ऐसे जवानों की भी कमी नहीं है जो अलगाववादियों को पस्त करते हुए शहीद हुए।

इस बीच, पिछले सप्ताह जम्मू कश्मीर में आतंकियों से लड़ते हुए शहीद पांचों जवानों के शव विगत मंगलवार को देहरादून के जौलीग्रांट एयरपोर्ट लाए गए। उत्तराखण्ड की समृद्ध सैन्य परंपरा को अपने अदम्य साहस और पराक्रम से गौरवान्वित करने वाले अमर शहीदों की शहादत को कोटिशः नमन और अश्रुपूरित श्रद्धांजलि। इन शहीदों में जूनियर कमीशन अधिकारी (जेसीओ) समेत पांच जवान शहीद और पांच अन्य घायल हो गए थे। शहीद होने वाले जवानों में सूबेदार आनंद सिंह, हवलदार कमल सिंह, राइफलमैन अनुज नेगी, राइफलमैन आदर्श नेगी, नायक विनोद सिंह शामिल हैं।

गुस्ताखी माफ, कभी-कभी तो लगता है कि रणबांकुरों को लेकर समूचे भारतीय समाज का रुख ठंडा ही रहा है। इससे अधिक निराशाजनक बात क्या हो सकती है कि पाठ्यपुस्तकों में उन युद्धों पर अलग से अध्याय तक नहीं हैं, जिनमें हमारे जवानों ने जान की बाजी लगा दी। हमारे बच्चे आज भी मुगलों और अंग्रेजों के इतिहास ही पढ़ रहे हैं। हां, हम गणतंत्र दिवस और स्वाधीनता दिवस के मौके पर जवानों को याद करने की रस्म अदायगी जरूर कर लेते हैं। कुछ समय पहले खबर आई थी कि पंजाब के लुधियाना शहर के मुख्य चौराहे पर 1971 की जंग के नायक शहीद फलाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेंखो की आदमकद मूर्ति के नीचे लगी पट्टिका को ही उखाड़ दिया गया। लुधियाना सेखों का गृहनगर था। उन्हें अदम्य साहस और शौर्य के लिए मरणोप्रांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। यह सिलसिला यहीं नहीं थम जाता। मोदीनगर (उत्तर प्रदेश) में 1965 युद्ध के नायक शहीद मेजर आशा राम त्यागी की मूर्ति देखकर तो किसी भी सच्चे भारतीय का कलेजा फटने लगेगा। इस तरह से दिल्ली सरकार ने भी शायद ही कभी कोशिश की हो कि 1971 की जंग के नायक अरुण खेत्रपाल के नाम पर किसी सडक या अन्य स्थान का नामकरण किया जाए। मुगल और अंग्रेज शासकों के नाम पर सड़कों की भरमार है। कौन कहता है कि दिल्ली बेदिल है। ये अपने शूरवीरों को याद रखती है। अब बातें-याद करें मेजर (डॉ.) अश्वनी कान्वा की। वे भारतीय शांति रक्षा सेना (आईपीकेएफ) के साथ 1987 में जाफना, श्रीलंका गए थे। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज के स्टुडेंट रहे थे मेजर अश्वनी कान्वा। हमेशा टॉपर रहे। मेजर कान्वा 3 नवंबर, 1987 को अपने कैंप में घायल भारतीय सैनिकों के इलाज में जुटे हुए थे। उस मनहूस दिन शाम के वक्त उन्हें पता चला कि हमारे कुछ जवानों पर कैंप के बाहर ही हमला हो गया है। वे फौरन वहां पहुंचे। वे जब उन्हें फर्स्ट एड दे रहे थे तब छिपकर बैठे लिट्टे के आतंकियों ने उन पर गोलियां बरसा दीं। अफसोस कि दूसरों का इलाज करने वाले डॉ. मेजर कान्वा को फर्स्ट एड देना वाला कोई नहीं था। बेहद हैंडसम मेजर अश्वनी की शादी के लिए लड़की ढूंढी जा रही थी जब वे शहीद हुए। वे तब 28 साल के थे। आपको इस तरह के न जाने कितने ही उदाहरण मिल जाएँगे। जरूरत है कि वतन के लिए अपनी जान का नजराना देने वालों को सदा याद रखे भात।

मिट्टी में मिलते जा रहे, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हारों के अरमान

हमारे पूर्वज अपने समय में मिट्टी, लोहे व काँसे के बने बर्तनों का उपयोग करते थे। इसलिए उन्हें मौजूदा दौर की बीमारियाँ नहीं हुई। यदि आप भी, अपने पूर्वजों की भाँति स्वस्थ्य जीवन-यापन करना चाहते हैं तो, मिट्टी के बने बर्तनों का उपयोग भोजन बनाने के लिए करें, ताकि आपके स्वस्थ्य के साथ ही इन कुम्हारों की माली हालत में सुधार हो सके.....आधुनिक फ्रिज और एसी ने मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के सपनों को भी चकनाचूर कर दिया है। ये मिट्टी के बर्तन बनाकर रखतें हैं लेकिन बिक्री न होने की वजह से खाने के भी लाले पड़ जाते हैं। परिवार कैसे चलेगा। कोई भी मटके खरीदने नहीं आ रहा है। धंधे से जुड़े लोगों ने ठेले पर रखकर मटके बेचने भी बंद कर दिए हैं। देश भर में प्रजापति समाज के लोग मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं। कुम्हार अपना पुश्तैनी काम छोड़ नहीं सकते. इसलिए उनके पास मिट्टी के बर्तन और गर्मी के दिनों में घड़े बेचने के अलावा कमाई का दूसरा विकल्प नहीं है. हालात ये हैं कि अब कुम्हार परिवार अपने काम को जिंदा रखने के लिए कर्ज लेकर व्यवसाय कर रहे हैं. लेकिन इससे भी इनकी लागत नहीं निकल रही. कुम्हार (कुंभकार) जाति के लोग मिट्टी से ही अपना रोजी-रोटी एवं जीवन-यापन करते हैं। कुम्हार शब्द, कुम्भकार से निकला हुआ प्रतीत होता है, जिसका अर्थ कुम्भ, यानि घड़ा बनाने वाला होता है। इन्हें कुम्भार, प्रजापति, प्रजापत, घूमियार, घूमर, कुमावत, भांडे, कुलाल या कलाल आदि नामों से भी अलग-अलग प्रदेशों में जाना जाता है। कुम्हारों की हस्तकला ही, उनके रोजगार का साधन होता है। कुम्हार अपने हाथों से मिट्टी की वस्तुएं बनाते हैं।

प्रियंका सौरभ
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

मिट्टी के बर्तन बनाने के अलावा इनके पास और कोई दूसरा रोजगार नहीं है, न ही कृषि करने के लिए इनके पास भूमि है। और न अन्य साधन, जिससे आय का आवक हो पाए। यह जैसे-तैसे करके अपने परिवार को पाल रहे हैं। मौजूदा दौर में एल्युमीनियम, थमाकोल व प्लास्टिक बर्तनों का खूब चलन चला है, जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। हमारे पूर्वज अपने समय में मिट्टी, लोहे व काँसे के बने बर्तनों का उपयोग करते थे। इसलिए उन्हें मौजूदा दौर की बीमारियाँ नहीं हुईं। यदि आप भी, अपने पूर्वजों की भाँति स्वस्थ्य जीवन-यापन करना चाहते हैं तो, मिट्टी के बने बर्तनों का उपयोग भोजन बनाने के लिए करें, ताकि आपके स्वस्थ्य के साथ ही इन कुम्हारों की माली हालत में सुधार हो सके.... आधुनिक फ्रिज और एसी ने मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के सपनों को भी चकनाचूर कर दिया है। ये मिट्टी के बर्तन बनाकर रखतें हैं लेकिन बिक्री न होने की वजह से खाने के भी लाले पड़ जाते हैं। परिवार कैसे चलेगा। कोई भी मटके खरीदने नहीं आ रहा है। धंधे से जुड़े लोगों ने ठेले पर रखकर मटके बेचने भी बंद कर दिए हैं। देश भर में प्रजापति समाज के लोग मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं। कुम्हार अपना पुश्तैनी काम छोड़ नहीं सकते. इसलिए उनके पास मिट्टी के बर्तन और गर्मी के दिनों में घड़े बेचने के अलावा कमाई का दूसरा विकल्प नहीं है. हालात ये हैं कि अब कुम्हार परिवार अपने काम को जिंदा रखने के लिए कर्ज लेकर व्यवसाय कर रहे हैं. लेकिन इससे भी इनकी लागत नहीं निकल रही. कुम्हार (कुंभकार) जाति के लोग मिट्टी से ही अपना रोजी-रोटी एवं जीवन-यापन करते हैं। कुम्हार शब्द, कुम्भकार से निकला हुआ प्रतीत होता है, जिसका अर्थ कुम्भ, यानि घड़ा बनाने वाला होता है। इन्हें कुम्भार, प्रजापति, प्रजापत, घूमियार, घूमर, कुमावत, भांडे, कुलाल या कलाल आदि नामों से भी अलग-अलग प्रदेशों में जाना जाता है। कुम्हारों की हस्तकला ही, उनके रोजगार का साधन होता है। कुम्हार अपने हाथों से मिट्टी की वस्तुएं बनाते हैं।

कुम्हार मिट्टी से वस्तुएं बनाने के लिए काली मिट्टी, लाल मिट्टी, रेत व राख आदि को एक साथ मिलाकर, पानी डाल कर अच्छे से मिक्स करते हैं। उसके बाद चाक (चकरी) में मिट्टी को रखकर उनको आकार देते हैं, और भिभिन्न-भिभिन्न वस्तुओं का निर्माण करते हैं। देवी-देवताओं की मूर्तियां, दीया, बोरा, बैल, करसा, क्लास, ठेकुआ, पुरा, मर्की, ओम, देवा, चूल्हा व बच्चों के खिलौने। मिट्टी के बर्तन पकने के बाद, उनको नजदीकी बाजार एवं चौक-चौराहों में बेचने के लिए ले जाते हैं। और उसके बाद, उसी वस्तुओं के पैसे से जो आमदनी उनको प्राप्त होती है, उसी से यह अपना जीवन-यापन और अपने बच्चों का पालन पोषण करते हैं। लेकिन इन मिट्टी के बर्तन या खिलौने का मूल्य उतना ज्यादा नहीं रहता, जीतना उसमें मेहनत लगता है। और-तो-और लेने वाला व्यक्ति भी, वस्तुएं लेने पर मोलभाव करके, उसमें पैसा कम करवा ही लेता है। इन कुम्हारों का रोजगार उतना अच्छा नहीं रहता। क्योंकि, पहले के समय में, सभी लोग मिट्टी के बर्तन व मिट्टी के वस्तुएं उपयोग करते थे। लेकिन अभी, वर्तमान के समय में, मिट्टी के बर्तनो को लोग नहीं के बराबर इस्तेमाल करते हैं। क्योंकि, सभी लोग स्टील के बर्तन, फाइबर के बर्तन आदि का अधिक यूज करते हैं। जिससे इनकी आमदनी, पहले के समय से कम होती है। गणेश पक्ष, दुर्गा पक्ष व विश्वकर्मा पक्ष आदि में ही इन लोगों को थोड़ी आमदनी हो पाती है और बाकी समय में इनको एक दिन में 100 से 200 रुपये भी मिलना मुश्किल हो जाता है। बहुत से कुम्हार, आमदनी अच्छी ना होने के कारण, मिट्टी के वस्तु बनाना छोड़ दिए हैं। और कुछ अन्य काम, अपने जीवन-यापन करने के लिए पकड़ लिए हैं और उसी में लगे हुए हैं। वह लोग इस काम को और करना नहीं चाहते। क्योंकि, इसमें मेहनत अधिक और आमदनी कम है।

वर्तमान में कुम्हारों का स्थिति बहुत ही खराब है। क्योंकि, पहले जैसा अभी के समय में लोग मिट्टी के समान उपयोग करना बंद कर दिए हैं। इस कारण, इनके पास जो बना हुआ वस्तु भी रहता है। वह भी बिक नहीं पाता है, जिससे इनको नुकसान ही उठाना पड़ता है। बाकि मिट्टी के वस्तुएं, अपने सीजन में ही बिक पाते हैं। बाकी समय इनका बिकना मुश्किल हो जाता है। मिट्टी व पानी की समस्या ने इस धंधे की कमर तोड़ दी है। पहले इस व्यवसाय के लिए यह गांव काफी चर्चित था। लेकिन समय बीतते के साथ सब कुछ खत्म होने लगा है। गांव में कच्चे मकान की संख्या काफी कम हो गई है। जिस कारण छत में लगने वाले खपड़े की बिक्री नहीं के बराबर होती है। अब इस धंधे से लाभ नहीं है। सबसे ज्यादा परेशानी मिट्टी के लिए होती है। पहले वर्षों से मिट्टी वन विभाग की जमीन से लाई जाती थी। लेकिन वर्तमान में इस पर रोक लगा दी गई है। पानी की समस्या एवं कोयले के दाम में बढ़ोत्तरी। जिसने इस धंधे की कमर तोड़ कर रख दी है। परिवार के चार सदस्यों की कड़ी मेहनत के बाद एक दिन में ढाई सौ खपड़े का निर्माण

बढ़ती रेल दुर्घटनाओं से सबक लेना आवश्यक

मनोज कुमार अग्रवाल

भारतीय रेलवे विश्व के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क में से एक है, जहाँ लाखों लोग प्रति दिन परिवहन के लिये इस पर निर्भर करते हैं। आँकड़े बताते हैं कि पिछले दो दशकों में पटरी से गाड़ी उतरने के मामले (जो अधिकांश दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं) सहस्राब्दी के अंत में प्रति वर्ष लगभग 350 से घटकर वर्ष 2021-22 में मात्र 22 रह गए लेकिन बीते साल बालासोर के बहनागा बाजार रेलवे स्टेशन पर हुई दुर्घटना में बड़ी जनहानि हुई जिससे हमारे रेलवे संचालन तंत्र में छिपी तमाम सुरक्षा कमजोरियां उजागर हो गई। ऐसे मामले बेहतर सुरक्षा उपायों और अधोसंरचना की आवश्यकता को उजागर करते हैं। इस दुर्घटना में बड़ी संख्या में लोगों की मौत यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कारण है कि रेलवे उन सभी लोगों के लिये सुरक्षित नहीं है जो इसका उपयोग करते हैं। सार्वजनिक परिवहन होने के नाते इसके सस्ता और सुरक्षित होने की अपेक्षा की जाती है परंतु लगातार किराए बढ़ाने के बावजूद सुविधाओं और सुरक्षा के मामले में अक्सर रेलवे में लापरवाही के मामले सामने आते रहते हैं। पिछले एक महीने में ही खई हादसे हुए हैं जिनकी समीक्षा करने से पता चलता है कि अभी भी हमारे रेलवे सिस्टम में भारी तकनीकी कमजोरी है जिनके रहते सुरक्षित यात्रा का सपना संजोने वाले हकीकत से दूर हैं। ताजा हादसा 18 जुलाई को मनकापुर-गोंडा के बीच झिलाही स्टेशन के पास हुआ है। चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस को चला रहे लोको पायलट ने खुलासा किया है कि हादसे के पहले उन्होंने धमाके की आवाज सुनी थी। इसकी पुष्टि पूर्वोत्तर रेलवे के सीपीआरओ पंकज कुमार सिंह ने की है।

दुर्घटना की कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी ने जांच के आदेश दिए हैं। वहीं, इस हादसे में अभी तक चार यात्रियों के मरने की पुष्टि की गई है, जबकि 31 यात्री घायल हुए हैं। इसी तरह बीते माह 17 जून को बिहार में ह्यकंचनजंगा एक्सप्रैस रेल दुर्घटना, जिसमें 14 यात्री मारे गए थे, इसके बाद से पिछले मात्र 2 सप्ताह में कई रेल हादसे सामने आ चुके हैं। 2 जुलाई को अम्बाला-दिल्ली ट्रैक पर ारावड़ी रेलवे स्टेशन के निकट चलती मालगाड़ी से 9 कंटेनर गिरने के परिणामस्वरूप 4 पहिए ट्रैक से उतर गए और 3 किलोमीटर तक का ट्रैक क्षतिग्रस्त हो गया। 4 जुलाई को जालंधर से जम्मू तवी जा रही मालगाड़ी कठुआ से 2 किलोमीटर पहले खराब हो गई। बताया जाता है कि माधोपुर रेलवे स्टेशन को क्रॉस करने के दौरान चढ़ाई के कारण इंजन आगे नहीं चढ़ पाया और ड्राइवर ने नीचे उतर कर देखा तो पहिए स्लिप कर रहे थे। 6 जुलाई को नासिक और मुम्बई के बीच चलने वाली पंचवटी एक्सप्रेस के डिब्बे ठाणे के कसारा में इंजन से अलग हो गए। इसी 12 जुलाई को बिहार के पटना जिले में दानापुर मंडल के दनियावां स्टेशन के निकट एक मालगाड़ी के 6 डिब्बे पटरी से उतर जाने के कारण फतुहा इस्लामपुर डिवीजन पर रेल यातायात अवरुद्ध हो गया। 15 जुलाई को महाराष्ट्र के ठाणे जिले में लोकमान्य तिलक टर्मिनस-गोरखपुर एक्सप्रेस के एक डिब्बे के ब्रेक जाम हो जाने के कारण पहियों के निकट आग लग गई जिसे अग्निशमन यंत्रों की सहायता से बुझाया गया और अब 18 जुलाई को उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में मोतीगंज थाना क्षेत्र के पिकौरा गांव के निकट जोरदार झटका लगने से चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ साप्ताहिक एक्सप्रैस ट्रेन के 14 डिब्बे पटरी से उतर जाने से 4 व्यक्तियों की मौत तथा 31 घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रेन से बाहर निकलने के बाद यात्रियों को निकट की सड़क तक पहुंचने के लिए ट्रैक के दोनों ओर खेतों में घुटनों तक भरे पानी से गुजरना पड़ा। मौके पर पहुंचे जिलाधिकारियों ने यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की। दुर्घटना के कारण कटिहार-अमृतसर एक्सप्रैस, आम्रपाली एक्सप्रैस, जम्मू- तवी अमरनाथ एक्सप्रैस और गुवाहाटी-श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रैस समेत 10 रेलगाड़ियों को मार्ग बदलकर संचालित करना पड़ा।

संक्षिप्त खबरें

खनन छापेमारी के फरार अभियुक्त पुलिस के हत्थे चढ़ा

बगहा। बगहा पुलिस जिला के नौरंगिया थाना का कांड 23/24 का फरार अभियुक्त पुलिस के हत्थे चढ़ गया। बतादें की नौरंगिया निवासी 36 वर्षीय गोविंद मुसहर वीटीआर जंगल से बालू खनन करते समय पुलिस और वन विभाग की संयुक्त छापेमारी के समय फरार हो गया था। इसी कांड में गोविंद पर धारा 147, 149, 341, 332, 323, 186, 504 व 506 दर्ज कर तलाश की जा रही थी। थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली कि उक्त अभियुक्त घर में छुपा हुआ है। एसआई राणा रणजीत सिंह के नेतृत्व में छापेमारी कर घर से धरदबोच लिया गया है।

आर्केस्ट्रा से नाबालिग युवती बरामद

लहलादपुर: जनता बाजार स्थित एक आर्केस्ट्रा संचालक के कब्जे से एक नाबालिग युवती को स्थानीय प्रशासन ने मुक्त कराया. बाल अधिकार हनन एवं मानव दुर्व्यापार अभियान के तहत भारत सरकार के राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सौजन्य से मिशन मुक्ति फाउंडेशन, दिल्ली एवं नारायणी सेवा संस्थान, छपरा तथा जनता बाजार थाना की पुलिस ने श्रीढोंढ़नाथ मंदिर के समीप एक आर्केस्ट्रा संचालक के यहां छापामारी कर एक नाबालिक युवती को मुक्त कराया. मुक्त हुई युवती ने बताया कि उससे अश्लील नृत्य करने तथा आर्केस्ट्रा में नाचने के लिये प्रताडित किया जाता था. प्रशासन ने उस युवती को पूनर्वास के लिये बाल कल्याण समिति, छपरा को सौंप दिया.

लड़की ने युवक पर किया हमला

छपरा कार्यालय। खैरा थाना अंतर्गत मानपुर गांव में बीती रात्रि एक लड़की ने नर्सिंग होम से घर लौट रहे एक युवक पर लाठी-डंडे और चाकू से हमला करवा दिया. उस दौरान चाकू लगने से वह युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया, जिसे गांव के ही कुछ युवकों के द्वारा छपरा सदर अस्पताल लाया गया, जहां उसका उपचार किया गया. जख्मी युवक खैरा थाना क्षेत्र के ही मानपुर गांव निवासी स्वर्गीय अर्जुन प्रसाद 19 वर्षीय पुत्र प्रेम सागर बताया गया है. छपरा सदन में उपचार के दौरान सदर अस्पताल में उपचार के दौरान उपयोग का स-र और सीटी स्कैन भी कराया गया जहां उसकी स्थिति खतरे से बाहर बताई गई है. जख्मी युवक ने बताया कि वह छपरा स्थित किसी नर्सिंग होम में काम करता है.

“हिट एंड रन” मामले में पूरी संवेदनशीलता के साथ घायलों की बचाएं जान : जिलाधिकारी

खतरनाक ड्राइविंग, ट्रिपल राइडिंग, बिना हेलमेट के बाइक चालन, बिना सीट बेल्ट के वाहन चालन के प्रति रोको-टोको अभियान चलाने का निर्देश

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम) सड़क सुरक्षा के उपायों पर विचार, क्रियान्वयन तथा अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर निर्णय लेने के उद्देश्य से शनिवार को जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। इसके साथ ही हिट एंड रन के मामलों की समीक्षा हेतु जिलास्तरीय समिति की बैठक जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि हिट एंड रन मामले में घायल व्यक्ति का समुचित ईलाज तुरंत हो, इसे सुनिश्चित किया जाय। घायलों की जान बचाने के लिए हर संभव प्रयास करना है। हिट एंड रन मामले में डॉक्टर एवं पुलिस अधिकारी पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्य करें। जिलाधिकारी ने कहा कि एक-एक जान महत्वपूर्ण है, इसलिये विशेष ध्यान देकर घायलों का समुचित इलाज करना है। हिट एवं रन मामले में घायल के लिए 50000.00 रुपये तथा मृत्यु के लिए 200000.00 रुपये मुआवजा देने का सरकारी प्रावधान है। उन्होंने निर्देश दिया कि हिट एंड रन योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाय, ताकि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ ले सकें। अभी भी काफी संख्या में आवेदन प्राप्त होना लंबित है, जो दशार्ता है कि लोगो को इस योजना की विशेष जानकारी नहीं है। उन्होंने अधीक्षक, जी एम सी एच को निर्देशित किया गया कि स्पष्ट एवं त्वरित पोस्टमार्टम रिपोर्ट तैयार किया जाय। साथ ही पुलिस अधिकारी को निर्देश दिया गया कि सुलभता से समय पर प्राथमिकी दर्ज किया जाय। आवश्यकतानुसार आवेदन जमा कराने में दावेदारों को उचित मार्गदर्शन दिया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि ब्लैक स्पॉट को चिन्हित करते हुए इसकी रोकथाम का प्रॉपर उपाय किया जाय। अवैध वाहन पड़ाव को चिन्हित करते हुए आवश्यक कार्रवाई करें। जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क दुर्घटना पर रोकथाम लगाने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को सार्थक प्रयास करना होगा। वाहन चालकों को समय-समय पर ट्रेनिंग देना होगा। जिला परिवहन पदाधिकारी इसे सुनिश्चित कराएंगे। उन्होंने निर्देश दिया कि खतरनाक ड्राइविंग, ट्रिपल राइडिंग, बिना हेलमेट के बाइक चालन, बिना सीट बेल्ट के वाहन चालन के प्रति रोको-टोको अभियान चलाया जाय। हेलमेट एवं सीट बेल्ट के प्रति विशेष अभियान चलाया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि ब्लैक स्पॉट/एक्सिडेंटल एरिया को चिन्हित करते हुए सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित किया जाय। रोड सेफ्टी ऑडिट (आरएएस) नियमित किया जाय। इसके साथ ही समुचित तरीके से साईनेज लगाया जाय। दुर्घटना प्रवण स्थलों पर रम्बल स्ट्रिप्स का अधिष्ठापन कराया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि सड़क सुरक्षा नियमों का वृहत प्रचार-प्रसार कराया जाय। रात्रि दुर्घटना रोकने के लिए स्ट्रीट लाइट, कैट्स आई/स्टड्स का अधिष्ठापन कराया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि सड़क के किनारे पेड़ पर रिफ्लेक्टिव टेप्स का अधिष्ठापन कराया जाय। उन्होंने कहा कि वाहन चालकों से सड़क सुरक्षा नियमों का सख्ती से अनुपालन कराना सुनिश्चित किया जाय। साथ ही मानक के अनुरूप वाहन की गति को सीमित कर संचालन कराना सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि ओवरलोडेड वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई की जाय। बढ़ते सड़क दुर्घटना को देखते हुए व्यावसायिक वाहन चालकों के आँख जाँच हेतु शिविर का आयोजन किया जाय। उन्होंने निर्देश दिया कि सड़क के किनारे वाहनों के अनावश्यक पड़ाव के विरुद्ध कार्रवाई की जाय और जुर्माना भी वसूल किया जाय। इसके साथ ही संवेदनशील स्थलों पर सीसीटीवी कैमरा का अधिष्ठापन कराना सुनिश्चित किया जाय।समिति की बैठक में सदस्यों द्वारा सड़क सुरक्षा तथा हिट एण्ड रन मामले में अपने-अपने सुझाव प्रदान किए गए।इस अवसर पर अपर समाहर्ता-सह-जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी अनिल कुमार सिन्हा, जिला परिवहन पदाधिकारी ललन प्रसाद सहित समिति के सदस्य उपस्थित थे।

हत्याकांड का प्राथमिकी अभियुक्त हुआ गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) मझौलिया थाना कांड संख्या 809 ऑब्लिक 2023 के नाम जद अभियुक्त शिवसागर यादव उर्फ जटा यादव को गिरफ्तार कर पुलिस ने न्यायिक हिरासत में भेज दिया। उक्त जानकारी प्रशिक्षु डीएसपी अमरकांत और थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार मिश्र ने दी। उन्होंने बताया कि दिनांक 17 सितंबर 2023 को थाना क्षेत्र के महनवा निवासी राम कृत यादव की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जिस मामले में कुल छह व्यक्तियों को नामजद अभियुक्त बनाया गया था। इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने तीन प्राथमिकी नामजदों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वहीं गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर पूर्वी चंपारण जिले के तुरकौलिया थाना क्षेत्र में छिपे हुए शिवसागर यादव उर्फ जटा यादव को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। उन्होंने बताया कि इस कांड के शेष दो अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस हर संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। बताते चले की मामला पूर्व से चले आ रहे भू विवाद का था।

कार्यकर्ता सह मतदाता आभार समारोह का हुआ आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

लहलादपुर: कार्यकर्ता संगठन के रीढ़ होते हैं तथा मतदाता आधार. इसलिए वे सभी सदैव सम्मान के पात्र हैं. खासकर वैसे कार्यकर्ता जिन्होंने पार्टी को अपने परिश्रम के बल पर सींच कर इतना बड़ा रूप दिया है. उक्त बातें महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिँह सीग्रीवाल ने जनता बाजार स्थित डीएवी स्कूल के हॉल में भाजपा के वरिष्ठ कार्यकताओं के सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कही. उन्होंने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं अटल जी, आडवाणी आदि जैसे लोगों के परिश्रम का ही परिणाम है कि आज भाजपा का स्वरूप इतना बड़ा हुआ है. विपक्ष नागरिकता संशोधन कानून को ले लोगों को दिग्भ्रमित कर रहा है. इसलिए भाजपा कार्यकताओं का नैतिक जवाबदेही है कि लोगों को नागरिकता संशोधन कानून के संदर्भ में समझाएं. कार्यक्रम की शुरूआत श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं अटलबिहारी वाजपायी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर की गई. समारोह की अध्यक्षता जदयू प्रदेश सचिव डॉङ्क दिनेश प्रसाद तथा मंच संचालन पंङ्क संदीपाचार्य ने किया. समारोह को अजय राय, ब्रजमोहन सिंह, चैतन्यद्रनाथ सिँह, राजबल सिँह कुशवाहा, शंकरदयाल राय, वीरेंद्र कुमार मिश्र ह्लअभयह्व, अखिलेश शर्मा, संजय सिँह, हरिशंकर सिँह आदि ने सम्बोधित किया.

मुंबई सेंट्रल -बरौनी-मुंबई सेंट्रल ट्रेन का संचलन 22 से

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। रेलवे प्रशासन द्वारा ग्रीष्मकाल में यात्रियों की होने वाली अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये 09145/09146 मुम्बई सेन्ट्रल-बरौनी-मुम्बई सेन्ट्रल साप्ताहिक ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी वाया गोरखपुर का संचलन मुम्बई सेन्ट्रल से 22, 29 जुलाई, 05, 12, 19 एवं 26 अगस्त, 2024 दिन प्रत्येक सोमवार को तथा बरौनी से 25 जुलाई, 01, 08, 15, 22 एवं 29 अगस्त, 2024 दिन प्रत्येक वृहस्पतिवार को 06 फेरों के लिये किया जायेगा। 09145 मुम्बई सेन्ट्रल-बरौनी साप्ताहिक ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी 22, 29 जुलाई, 05, 12, 19 एवं 26 अगस्त, 2024 दिन प्रत्येक सोमवार को मुम्बई सेन्ट्रल से 10.30 बजे प्रस्थान कर बोरीवली से 11.01 बजे, वापी से 12.56 बजे, सूरत से 14.36 बजे, भरूच से 15.21 बजे, वडोदरा से 16.31 बजे, रतलाम से 20.20 बजे, उज्जैन से 22.50 बजे, दूसरे दिन संत हरदाराम नगर से 03.05 बजे, विदिशा से 04.10 बजे, बीना से 05.55 बजे, वीरांगना लक्ष्मीबाई जं. से 08.15 बजे, कानपुर सेन्ट्रल से 12.35 बजे, लखनऊ से 14.25 बजे, गोण्डा से 16.30 बजे, मनकापुर से 17.12 बजे, बस्ती से 18.05 बजे, खलीलाबाद से 18.55 बजे, गोरखपुर से 20.00 बजे, देवरिया सदर से 21.05 बजे, सीवान से 22.20 बजे, छपरा से 23.50 बजे तीसरे दिन हाजीपुर से 00.45 बजे, मुजफ्फरपुर से 01.50 बजे तथा समस्तीपुर से 02.55 बजे छूटकर बरौनी 04.00 पहुँचेगी। वापसी यात्रा में 09146 बरौनी-मुम्बई सेन्ट्रल साप्ताहिक ग्रीष्मकालीन विशेष गाड़ी 25 जुलाई, 01, 08, 15, 22 एवं 29 अगस्त, 2024 दिन प्रत्येक वृहस्पतिवार को बरौनी से 01.00 बजे प्रस्थान कर समस्तीपुर से 02.05 बजे, मुजफ्फरपुर से 03.35 बजे, हाजीपुर से 05.00 बजे, छपरा से 06.55 बजे, सीवान से 07.20 बजे, देवरिया सदर से 08.50 बजे, गोरखपुर से 10.45 बजे, खलीलाबाद से 11.25 बजे, बस्ती से 12.01 बजे, मनकापुर से 12.42 बजे, गोण्डा से 13.25 बजे, लखनऊ से 16.10 बजे, कानपुर सेन्ट्रल से 18.40 बजे, वीरागंना लक्ष्मीबाई जं. से 23.00 बजे, दूसरे दिन बीना से 01.35 बजे, विदिशा से 02.40 बजे, संत हरदाराम नगर से 03.55 बजे, उज्जैन से 05.50 बजे, रतलाम से 08.00 बजे, वडोदरा से 11.38 बजे, भरूच 12.37 बजे, सूरत 13.41 बजे वापी से 15.06 बजे तथा बोरीवली से 17.40 बजे छूटकर मुम्बई सेन्ट्रल 18.40 बजे पहुँचेगी। इस गाड़ी में शयनयान श्रेणी के 16, साधारण द्वितीय श्रेणी के 02 तथा एस.एल.आर./डी. के 02 कोचों सहित कुल 20 कोच लगाये जायेंगे।

पर्यटन नगरी का सदर अस्पताल भगवान भरोसे आयुष और जीएनएम के भरोसे चल रहा है सीएससी

प्रात : किरण, संवाददाता

बगहा ।इंडो नेपाल सीमा पर अवस्थित पर्यटन नगरी वाल्मीकिनगर वीटीआर के जंगलों से घिरा क्षेत्र है ।यहां के लोग जंगली जीवो का शिकार होते रहते हैं ।बंदर, भालू,सांप आदि से घायला मरीजों का इलाज इसी एक मात्र अस्पताल के भरोसे है लेकिन विडंबना है कि सदर अस्पताल सीएससी भगवान भरोसे चल रहा है। बतादें की इस अस्पताल में एक भी एमएस,एम बी बी एस डॉक्टर की पोस्टिंग नहीं है। एक एम बी बी एस महिला डॉक्टर की पोस्टिंग है लेकिन वह भी नाम के लिए। ये माह में आध एक बार हॉस्पिटल में दिख जाती हैं,प्रायः अनुपस्थित ही रहती हैं। अगर एक्सीडेंटल केस आ जाए तो फौरन उसे बाहर रेफर कर दिया जाता है। बतातें चलें कि आयुष डॉक्टर और जीएनएम के भरोसे ही पर्यटन नगरी का सरकारी अस्पताल चल रहा है। समाजसेवी अमित कुमार सिंह ने कहा कि यहां बाहर से पर्यटक आते हैं जिन्हें स्वास्थ सम्बंधी परेशानी के लिए एक कुशल एम बी बी एस फिजिशियन डॉक्टर की जरूरत है इसलिए इनकी स्थायी पोस्टिंग होना चाहिए और एक सर्जन डॉक्टर की भी जरूरत है ताकि आए दिन हो रहे एक्सीडेंट के पीड़ितों को फर्दर इलाज मिल सके। वाल्मीकिनगर वीटीआर जंगल से घिरा इलाका है ।यहां सर्प दंश के केस वाले मरीजो को इलाज के लिए नेपाल स्थित 70 किलोमीटर दूर भैरहवा या फिर 40 किलोमीटर बगहा की दूरी तैय करनी पड़ती है । कभी कभी तो दूरी तैय करने में मरीज की जान चली जाती है। इसलिए वाल्मीकिनगर सीएससी सदर अस्पताल में एक सर्प दंश स्पेशलिस्ट डॉक्टर की भी पोस्टिंग होना चाहिए। बतातें चलें कि वाल्मीकिनगर अस्पताल को एपीएचसी से बढ़ाकर फिलहाल दर्जा सीएससी कर दिया गया है लेकिन सुविधा के नाम पर सिफर है ।समाजसेवी अमित कुमार सिंह ने स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन से उपर्युक्त बातों पर ध्यान देते हुए अतिशीघ्र कार्यवाई करने का आग्रह किया है।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने समारोहपूर्वक मनाया अपना 117वां स्थापना दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल।।विश्वास के साथ, बेहतर कल की बात हमारे इस वादे का प्रतीक है जिसमें हम विश्वास और विश्वसनीयता को बनाए रखते हुए हर ग्राहक को बेहतर बैंकिंग सेवा प्रदान करने का प्रयास करते हैं। उक्त बातें बैंक ऑफ बड़ौदा के 117वें स्थापना दिवस के अवसर पर रक्सौल शाखा के शाखा प्रबंधक राहुलदेव कुमार ने कही। उन्होंने सभी ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त किया जिन्होंने इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें पर्यावरणविद प्रो. (डॉ.) स्वयंभू शलभ की उपस्थिति में शाखा प्रबंधक राहुल देव, सहायक शाखा प्रबंधक ऋतुराज समेत शाखा के सभी सदस्यों ने वृक्षारोपण किया। इस मौके पर श्री राहुल ने बताया कि बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय ने 20 जुलाई 1908 को गुजरात के रियासत बड़ौदा में बैंक ऑफ बड़ौदा की स्थापना की थी। आज भारत समेत अन्य देशों में अपनी बेहतर कार्य संस्कृति के बदौलत इस बैंक की अपनी अलग पहचान है। आज रक्सौल शाखा 56 हजार से भी अधिक खाताधारियों को बैंकिंग सेवा प्रदान कर रही है। इस मौके पर ग्राहकों से सुझाव भी लिए गए। इस अवसर पर प्रभाकर कुमार, अग्निवेश कुमार, अनिल गिरी, अरविंद कुमार, अजय कुमार, ई. सौरभ कुमार समेत बैंक के ग्राहक उपस्थित थे।

उर्वरक बिक्री में गड़बड़ी पर की जाएगी सख्त कार्रवाई : जिलाधिकारी

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम) ।जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने कहा कि जिले के किसानों को सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर सही मात्रा में उर्वरक आदि की उपलब्धता हर हाल में सुनिश्चित किया जाय। इस कार्य में किसी भी स्तर पर गड़बड़ी करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उर्वरक बिक्री में किसी प्रकार की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए।शिकायत मिलने पर तुरंत जाँच करायी जाएगी और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिले के किसानों को परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े, इसके लिए कृषि विभाग के अधिकारियों को तत्परतापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है।जिलाधिकारी समाहरणालय सभाकक्ष में आयोजित जिला उर्वरक निगरानी समिति की बैठक में अधिकारियों, विक्रेताओं आदि को निर्देशित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उर्वरक को लेकर किसानों की परेशानियों को दूर किया जाय। समय-समय पर उर्वरक प्रतिष्ठानों का निरीक्षण एवं औचक छापेमारी कराना सुनिश्चित किया जाय। उर्वरक का उठाव एवं वितरण ससमय कराना सुनिश्चित किया जाय। जिलास्तरीय उर्वरक निगरानी समिति की बैठक में सांसद, उर्वरक बिक्री में गड़बड़ी पर की जाएगी सख्त कार्रवाई : जिलाधिकारी। किसानों को सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर सही मात्रा में उर्वरक आदि की उपलब्धता हर हाल में कराएं सुनिश्चित। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला उर्वरक निगरानी समिति की बैठक सम्पन्न। अनियमितता के मामले में 01 प्रतिष्ठान के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। 01 प्रतिष्ठान की अनुज्ञप्ति रद्द की गई है। साथ ही 05 मामलों में स्पष्टीकरण की मांग की गई है। बेतिया(कुमार अभिजितम) ।जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने कहा कि जिले के किसानों को सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर सही मात्रा में उर्वरक आदि की उपलब्धता हर हाल में सुनिश्चित किया जाय। इस कार्य में किसी भी स्तर पर गड़बड़ी करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उर्वरक बिक्री में किसी प्रकार की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए।शिकायत मिलने पर तुरंत जाँच करायी जाएगी और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिले के किसानों को परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े, इसके लिए कृषि विभाग के अधिकारियों को तत्परतापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है।जिलाधिकारी समाहरणालय सभाकक्ष में आयोजित जिला उर्वरक निगरानी समिति की बैठक में अधिकारियों, विक्रेताओं आदि को निर्देशित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उर्वरक को लेकर किसानों की परेशानियों को दूर किया जाय। समय-समय पर उर्वरक प्रतिष्ठानों का निरीक्षण एवं औचक छापेमारी कराना सुनिश्चित किया जाय। उर्वरक का उठाव एवं वितरण ससमय कराना सुनिश्चित किया जाय। जिलास्तरीय उर्वरक निगरानी समिति की बैठक में सांसद डॉ0 संजय जायसवाल विधायक उमाकांत सिंह,विनय बिहारी ने उर्वरक की उपलब्धता, वितरण एवं बिक्री को लेकर अपने-अपने सुझाव दिए। जिला कृषि पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि जिले में पर्याप्त मात्रा में उर्वरक की उपलब्धता है। उन्होंने बताया कि खरीफ वर्ष 2024-25 में अबतक 23 उर्वरक प्रतिष्ठानों पर छापेमारी की गई है। 07 मामलों में प्रतिष्ठान बंद, बिक्री पंजी एवं कैशमेमो अपडेट नहीं आदि पाया गया।

महाराजा स्टेडियम के नव निर्माण का नगर निगम बोर्ड भेजेगा सरकार को प्रस्ताव: गरिमा

बोर्ड की आगामी बैठक में इस पर चर्चा और विचार के बाद प्रारूप निर्धारित करते हुए तेज होगी पहल

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम)। नगर निगम की महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने कहा कि नगर में वर्षों से बदहाल और जर्जर महाराजा स्टेडियम का नव निर्माण कराया जायेगा। इसका एक विस्तृत डीपीआर (डिटेल और प्रोजेक्ट रिपोर्ट) शीघ्र ही नगर विकास एवम आवास विभाग और सरकार को भेजा जाएगा। इसको लेकर नगर निगम बोर्ड की आगामी बैठक में एक विशेष प्रस्ताव विचार, चर्चा के बाद पारित करते हुए अंतिम स्वीकृति के लिए प्रस्ताव विभाग और सरकार को भेजा जाएगा। इससे पूर्व जिला स्तर के अनेक खेल संघ और संगठन पदाधिकारी गण के साथ अनेक पूर्व क्रिकेटर, फुटबॉलर, धावक आदि खिलाड़ी और खेल प्रेमी प्रबुद्धजनों के एक शिष्टमंडल ने शनिवार को महापौर श्रीमती सिकारिया के कार्यालय कक्ष में मुलाकात के साथ संबंधित समस्याओं और खेल जनित विकास कार्यों को पूरा करने/कराने के लिए महापौर श्रीमती सिकारिया को संयुक्त तौर पर ज्ञापन सौंपा। इस शिष्ट मंडल को महापौर ने यह भी बताया कि इससे पूर्व उनके प्रस्ताव पर सरकार से जिला मुख्यालय में ढाई ढाई करोड़ की लागत वाले तीन चिल्ड्रेन पार्क के प्रस्ताव को स्वीकृति मिल चुकी है। जिसमें से एक योजना बड़ा रमना मैदान के दक्षिण पश्चिम छोर के भूखड पर बनना स्वीकृत हुआ है। जिसकी निविदा विभाग स्तर से शीघ्र ही जारी होने वाली है। महापौर से मिले शिष्टमंडल में जिला फुटबाल संघ के सचिव डॉ. आई हक, बुद्धिजीवी डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना, एकबाल सब्बा कार्यालय सचिव, नरेंद्र सिंह क्रिकेट संघ, अभिनाश कुमार उपाध्यक्ष क्रिकेट संघ, मुहम्मद शहाबुद्दीन पूर्व कप्तान, अभिजीत बनर्जी पूर्व क्रिकेटर, मुहम्मद फिरोज पूर्व क्रिकेटर आदि शामिल रहे।

विश्वविद्यालय से मिलेगी डीबीएसडी कॉलेज के परीक्षार्थियों का एडमिट कार्ड

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर ।जयप्रकाश विश्वविद्यालय की स्नातक सीबीसीएस सत्र 2023-27 प्रथम सेमेस्टर के परीक्षा 25 जुलाई 2024 से प्रारंभ हो रही है। इस परीक्षा में शामिल होनेवाले देवराहा बाबा श्रीधर दास डिग्री महाविद्यालय, कदना, गरखा, सारण में नामांकित परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र 22 जुलाई से 24 जुलाई 2024 तक दिन 11 बजे से 4 बजे तक विश्वविद्यालय परिसर में वितरित किए जाएंगे। अन्य सभी महाविद्यालयों के एडमिट कार्ड संबंधित महाविद्यालयों में भेजे जा चुके हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ दिलीप कुमार ने बताया कि डीबीएसडी कॉलेज, कदना, गरखा, सारण में नामांकित परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र विश्वविद्यालय के मुख्य प्रशासनिक भवन स्थित काउंटर संख्या-3 पर वितरित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए आवश्यक संख्या में कर्मियों की तैनाती कर दी गई है। उन्होंने बताया कि एडमिट कार्ड प्राप्त करने के लिए परीक्षार्थियों को स्वयं आना होगा, किसी अन्य को एडमिट कार्ड नहीं दिया जाएगा। साथ ही नामांकन रसीद, परीक्षा फॉर्म (जिसे अभ्यर्थियों द्वारा पूर्व में भरा गया है) तथा आधार कार्ड या अन्य किसी फोटोयुक्त पहचान पत्र की मूल प्रति एवं एक सेट छायाप्रति परीक्षार्थियों को अपने साथ अवश्य लाना है।

नीतीश की सुशासन व विकास की तथाकथित छवि ढह रही है:विधायक

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया। महागठबंधन के दलों (भाकपा माले, राजद, कांग्रेस, सीपीआई, सीपीएम, वीआईपी) के बैनर तले दलित-गरीबों-महिलाओं-अल्पसंख्यकों पर हो रहे दमन, चौतरफा हिंसा और अपराध के खिलाफ शहिद पार्क से जो आक्रोश मार्च निकाला जो सोवा बाबू चौक, लाल बाजार, तीन लालटेन चौक, मुहर्रम चौक होतें बेतिया जिला समाहरणालय गेट पर सभा में तब्दील हो गया। सभा की अध्यक्षता कांग्रेस नेता शेख कामरान ने किया, सभा को संबोधित करते हुए भाकपा माले केन्द्रीय कमिटी सदस्य सह सिकटा विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि वीआईपी प्रमुख श्री मुकेश सहनी के पिता की नृशंस हत्या स्तब्ध करने वाली है. उन्होंने कहा कि गया, नवादा, सिवान, मुजफ्फरपुर, सारण, पूर्वी चंपारण, सासाराम, गोपालगंज आदि जिलों में अपराध की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि हुई है. हालत यहां तक पहुंच गई है कि राजधानी पटना और उसके आस-पास के इलाकों में भी अपराधी पूरी तरह बेलगाम हो गए हैं. विगत कुछ दिनों में दो दर्जन से अधिक हत्या के मामले सामने आए हैं. आगे कहा कि मुर्हरम के मौके पर नरकटियागंज में मुहर्रम के दिन फिलिस्तीनी झंडा लहराने के तथाकथित जुर्म में अभी तक चार लोगों को जेल में डाला गया है और कुल 16 लोगों पर मुकदमा दर्ज कर दमन किया जा रहा है, फिलिस्तीनी जानत अपने ही धरती पर मारे जा रहें है अभी तक एक लाख 66 हजार से अधिक महिला बच्चे मारे गए हैं, पूरी दुनिया इस जनसंहार का विरोध कर रहा है, हमारा देश हमेशा से पीड़ित देशों के साथ खड़े रहा है,

तब कैसे अपराध हो गया, माले विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने सभी गिरफ्तार लोगों को रिहाई करने तथा मुकदमा को खारिज करने की मांग किया, उन्होंने कहा कि इस सवाल को विधानसभा में भी उठाया जाएगा। माले नेता सुनील कुमार राव ने कहा कि बिहार में एक तरफ अपराधी बेलगाम हैं, तो दूसरी ओर सामंती ताकतों का भी मनोबल सर चढ़कर बोल रहा है. दलितों-महिलाओं और अल्पसंख्यक समुदाय को खासतौर पर निशाना बनाया जा रहा है. गया जिले के टिकारी प्रखंड के चिरैला मांझी में संजय मांझी का सामंतों-भूस्वामियों ने उस वक्त तलवार से हाथ काट डाला, जब वे गरीबों की जमीन पर भूस्वामियों के कब्जे का विरोध कर रहे थे. मुजफ्फरपुर में भाजपा समर्थित सामंती ताकतों ने संजीत मांझी पर जानलेवा हमला किया, उनके शरीर को चाकू से गोद दिया और उसका विरोध करने पर उनकी पत्नी को भद्दी-भद्दी गालियां देते हुए निर्वस्त्र करने का प्रयास किया. भूस्वामियों ने संजीत मांझी के मुंह में पेशाब करने का पाशविक काम किया. नवादा जिले में 50 वर्षीय पप्पू मांझी की भी हत्या का मामला सामने आया है। इंसाफ मंच जिला सचिव सह इंकलाबी नौजवान सभा जिला अध्यक्ष फरहान राजा ने कहा की मुकेश सहनी के 67 वर्षीय वृद्ध पिता की जिस नृशंसता से हत्या की गई, वह साबित करता है कि कानून-व्यवस्था का कोई खौफ अपराधियों को नहीं रह गया है।

प्रखंड अध्यक्षों का नागरिक अभिनंदन सह सम्मान समारोह हुई आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

एकमा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा सारण जिले एकमा व मांझी प्रखंड के मनोनीत प्रखंड अध्यक्षों का नागरिक अभिनंदन सह सम्मान समारोह का आयोजन ब्लॉक रोड स्थित शंकर विवाह उत्सव के प्रांगण में कांग्रेस नेता नरेंद्र प्रताप मिश्रा कि अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें एकमा प्रखंड के मनोनीत प्रखंड अध्यक्ष अमावस मांझी एवं मांझी प्रखंड के प्रखंड अध्यक्ष सत्येंद्र महतो को फूल माला पहनकर उन्हें अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान कांग्रेस नेता नरेंद्र प्रताप मिश्रा ने ये दोनों मनोनीत अध्यक्षों से पार्टी में मजबूती बढ़ेगी आगामी बिहार विधानसभा के चुनाव में इनकी अहम भूमिका रहेगी। एकमा व मांझी विधानसभा राजनीतिक धूमिल हो रही राजनीति में बड़े पैमाने पर बदलाव आयेगा। अफसर कि मनमानी चरम सीमा पर पहुंच गया है। कुछ लोग मठ के मठाधीश जैसी पकड़ कर बैठ गये है। जानता मैं नेता व प्रतिनिधि के प्रति विश्वास उठ गई है। देश की जनता का पैसा केंद्र में बैठी सरकार अडानी व अंबानी में लूटा रही है ।उनके बाल बच्चों की शादी में 5000 करोड़ खर्च हो रही है देश में सबके लिए एक कानून होने चाहिए लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है ।एक सघन अपराध करने वाला छूट जाता है वही एक तरफ जेल का सजा काट रहा है। किसानों के हित में सरकार काम नहीं करती किसन की कड़ी मेहनत की उगाई गई फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। सरकार उचित मूल्य तय कर अनाज की खरीदारी करें अगर उसे कोई कम दाम में ले रहा है तो उसे पर कठोर कार्रवाई की जाए। देश में महंगाई भ्रष्टाचार अत्याचार चरम पर है सिर्फ हिंदू मुस्लिम मंदिर मस्जिद के नाम पर राजनीति कर रही है ।

भाकपा कार्यकर्ताओं ने निकाला प्रतिरोध मार्च

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। हत्या, अपराध, कानून व्यवस्था की बदतर स्थिति के खिलाफ शनिवार को महागठबंधन के तत्वावधान मे छपरा मे प्रतिरोध मार्च निकला और इससे संबंधित ज्ञापन सौंपा गया। प्रतिरोध मार्च मे सीपीआई, सीपीएम, माले , राजद, कांग्रेस तथा वीआईपी के कार्यकताओं ने जुलूस निकाला और जिला परिषद परिसर मे सभा की। सभा को सीपीआई के राज्य कार्यकारिणी सदस्य सुरेंद्र सौरभ, जिला सचिव रामबाबू सिंह, सीपीएम के बटेश्वर महतो, राजद अध्यक्ष सुनील राय, कांग्रेस अध्यक्षा अजय सिंह,विधायक तथा पूर्व मंत्री जितेन्द्र राय, सुरेन्द्र राम, सत्येंद्र यादव के अलावे ड़ॉ महात्मा प्रसाद गुप्ता, नागेन्द्र राय, हरिबालम सिंह,चुलाहन सिंह, बीरेंद्र सिंह, सुग्रीव गुप्ता, पप्पू कुशवाहा, नरेन्द्र राय, शिवजी मांझी , सुरेश वर्मा परमात्मा गुप्ता आदि ने भी संबोधित किया।

संक्षिप्त खबरें

महागठबंधन के कार्यकर्ताओं ने निकाला प्रतिरोध मार्च

रोहतास (बिहार)। रोहतास जिला मुख्यालय सासाराम में आज महागठबंधन के बैनर तले विभिन्न विपक्षी दलों ने प्रतिरोध मार्च निकालकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदेश में बढ़ रहे आपराधिक वारदातों को लेकर चिंता जाहिर करते हुए इन लोगों ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।इस प्रतिरोध मार्च में कांग्रेस,राजद, वीआईपी पार्टी सहित विभिन्न संगठनों के लोग शामिल हुए। इन लोगों का कहना है कि प्रदेश में लगातार आपराधिक वारदात बढ़ रही है। इसके बावजूद सरकार इस पर अंकुश लगाने में सफल है।प्रतिदिन विभिन्न जिलों में हत्याएं हो रही है। लेकिन पुलिस कार्रवाई नहीं कर रही है।ऐसे में अपराधियों का मनोबल बढ़ गया है। और प्रदेश की जनता व्यवसायिक सभी लोग भयभीत है। जिसके खिलाफ पूरे प्रदेश में महागठबंधन के लोग सड़क पर उतरे हैं तथा अपना विरोध दर्ज कर रहे हैं।वहीं महागठबंधन के नेताओं ने कहा कि बिहार में सुशासन बाबू की सरकार जो सुशासन का दावा कर रही थी।नीतीश कुमार के राज में अफसर शाही चरम पर है वही अपराधी बेलगाम हो गए है जिस पर लगाम लगाने में पुलिस और सरकार पूरी तरह से सफल है।जब तक बिहार सरकार अपराध पर पूर्णतः लगाम नहीं लगाती तब तक महागठबंधन सरकार के खिलाफ प्रदर्शन जारी रहेगी।

जेनरल नॉलेज प्रतियोगिता में दस छात्र पुरस्कृत

गया।चाणक्य विद्यालय बाराचट्टी के प्रांगण में जेनरल नॉलेज व अंग्रेजी समूह चर्चा का विद्यालय के प्रांगण में किया गया है जिसमें विद्यालय के उत्कृष्ट 10 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त किये है इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधन की ओर से इन सभी उत्कृष्ट बच्चों को पुरस्कृत किया गया है।

दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल में 151 पौधा लगाएं गए

गया।इनरव्हील क्लब गया ने दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, शेखवाड़ा बोध गया एक सौ एकावने पौधे लगाये जिसमे महोगनी,नारियल,ऐलोवेरा,तुलसी, रंजन, फूल के पौधे इत्यादि थे।यह कार्यक्रम पी पी उपाराज की सौजन्य से हुआ जिसमें उन्होंने ने बच्चों के साथ पेड़ लगाये और पर्यावरण संबंधित जानकारी भी दी है।उन्होंने बताया की पौधे लगाने से न केवल हमारा पर्यावरण शुद्ध होगा बल्कि हमें गर्मी से भी काफी राहत मिलेगी। इस मौके पर स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाएं -शिक्षिका और लगभग 500 बच्चे शामिल हुए हैं।इस कार्यक्रम में वन विभाग के डी एफ ओ विशेष अतिथि रहे हैं।

पत्नी और सास के साथ बाजार में सामान खरीद रहे युवक की अचानक हुई मौत

मधेपुरा।मधेपुरा जिले के मुरलीगंज बाजार में समान खरीदारी के दौरान अचानक एक युवक की मौत हो गई जिसके बाद मौके पर अफरा तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया। मृतक युवक की पहचान पुरैनी थाना बबलू सहनी के 25 वर्षीय पुत्र रोशन सहनी के रूप में किया गया है। बताया जा रहा है कि महज सात दिन पहले ही 13 जुलाई को रोशन की शादी मुरलीगंज थाना क्षेत्र के रजनी पंचायत अंतर्गत प्रताप नगर निवासी शंकर पासवान की पुत्री से हुई थी जिसके बाद आज अपने सास और पत्नी के साथ मुरलीगंज बाजार सामान खरीदने आए थे इसी दौरान अचानक वह मूर्छित होकर गिर गया परिजनों ने उसे उठाकर आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुरलीगंज में भर्ती कराया जहां मौके पर मौजूद चिकित्सक ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

मारपीट कर महिला को किया जख्मी

बनियापुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के पैगम्बरपुर गाव मे आपसी विवाद मे महिला को चाकू से गोद कर जख्मी करने का मामला दर्ज कराया गया है,जख्मी महिला का इलाज रेफरल अस्पताल मे कराया जा रहा है,महिला के बयान पर तीन को नामजद किया गया है। घटना के संबंध मे प्राथमिकी मे पीड़िता शांति देवी ने बताया है कि दरवाजे पर बैठी थी तभी बगल के छोटन नट और आशा देवी अपने पतोहु को पीट रहे थे,उसकी पतोहू जान बचाने हमारे पास आ गयी,इसी बात को लेकर उक्त दोनो हमें गाली गलौज करने लगे,विरोध की तो उसका बेटा लड्न नट चाकू से तबाड़तोड़ हमला कर जख्मी कर दिया आरोपियों ने लाठी डंडे से पीटा और गले से चांदी की सिकड़ी भी छीन लिया।

श्रावणी मेला की व्यवस्था को लेकर जिलाधिकारी ने सोनपुर में विभिन्न घाटों का किया निरीक्षण

बाबा गरीबनाथ मंदिर जाने वाले डाक बम को लालू यादव चौक स्थित नियंत्रण कक्ष से दिया जायेगा विशेष टोकन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। श्रावणी मेला को लेकर सोनपुर में सभी निर्धारित घाटों, मंदिरों एवं रास्तों में आवश्यक तैयारी की गई है। जिलाधिकारी श्री अमन समीर ने आज सोनपुर में विभिन्न घाटों एवं अन्य स्थलों पर की गई तैयारियों का निरीक्षण किया तथा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने को लेकर संबंधित पदाधिकारियों को महत्वपूर्ण दिशा निदेश दिया।

पहलेजा घाट पर अलग अलग जगहों पर अतिरिक्त चेंजिग रूम बनाने का निदेश दिया गया। इस घाट पर अलग अलग प्रवेश एवं निकास द्वार बनाया गया है। तीन स्थलों पर वाच टावर बनाया गया है, इसे मजबूत ढंग से बनाने का निदेश दिया गया घाट पर पीएचईडी द्वारा 5 चापाकल लगाया गया है।सभी चापाकलों के पास स्पष्ट एवं बड़ा संकेत चिन्ह लगाने को कहा गया ताकि दूर से ही श्रद्धालुओं को दिख सके। घाट पर निर्मित यात्री शेड के पास स्थाई रूप से पानी की अतिरिक्त टंकी तथा अतिरिक्त शौचालय का निर्माण हेतु कार्रवाई का निदेश कार्यपालक अभियंता पीएचईडी को दिया गया। अंचलाधिकारी सोनपुर को घाट पर नाव एवं गोताखोर की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित रखने को कहा गया। जिलाधिकारी ने पहलेजा घाट से जहांगीर पुर अंडरपास-लालू यादव चौक तक कांवरिया मार्ग का निरीक्षण किया। जहांगीर पुर अंडरपास में जल जमाव को हटाने हेतु रेलवे प्रशासन द्वारा कार्रवाई की जाती है। जिलाधिकारी ने कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत सोनपुर को भी पम्पिंग सेट की वैकल्पिक व्यवस्था रखने का निदेश दिया। पहलेजा घाट से जल भरकर बाबा गरीब नाथ मंदिर जाने वाले डाक बम को लालू यादव चौक स्थित नियंत्रण कक्ष में विशेष टोकन दिया जायेगा।

घाट एवं संपूर्ण कांवरिया मार्ग पर रात्रि में भी लगातार पैदल एवं बाइक गश्ती सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया।बाबा हरिहरनाथ मंदिर तक जाने के लिये 4 प्रवेश द्वार बनाया गया है। महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं के लिये अलग अलग प्रवेश की व्यवस्था की गई है। काली घाट पर अच्छे से साफ सफाई कराने का निदेश कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत सोनपुर को दिया गया। घाट पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम की व्यवस्था का भी निदेश दिया गया। घाट पर सभी निबंधित नाव की व्यवस्था तथा नाविक का मोबाइल नंबर प्रशासन के पास उपलब्ध रखने को कहा गया। पुल घाट पर किये गये बैरिकेडिंग को हाथी घाट तक विस्तारित करने का निदेश दिया गया।

बिजली के सभी तारों के स्थिति पर निरंतर नजर रखने तथा बिजली के सभी पोल को प्लास्टिक आवरण से कवर करने का निदेश विद्युत अभियंता को दिया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक, अनुमंडल पदाधिकारी सोनपुर, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सोनपुर, भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता सोनपुर, प्रखंड विकास पदाधिकारी सोनपुर, अंचलाधिकारी सोनपुर एवं कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत सोनपुर आदि उपस्थित थे।

भोजपुर जिला कांग्रेस शहीद भवन से महागठबंधन के नेताओं ने निकाला प्रतिरोध मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के निदेर्शानुसार महागठबंधन (कांग्रेस,राजद,भाकपा माले,सीपीआई,सीपीएम और वीआईपी) के संयुक्त बैनर तले राज्य मे गिरती विधि व्यस्था के विरुद्ध प्रतिरोध मार्च जिला मुख्यालय शहीद भवन आरा से सुबह 11.00 बजे से निकाला गया। भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष अशोक राम के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में गगन भेदी नारों के साथ कार्यकताओं ने पैदल मार्च किया। प्रतिरोध मार्च शहीद भवन से निकलकर जिलाधिकारी, भोजपुर कार्यालय पहुचा जो बाद में सभा मे तब्दील हो गया।

सभा को सम्बोन्धित करते हुए जिलाध्यक्ष अशोक राम ने कहा कि आज की तिथि में नीतीश कुमार कुशासन बाबू बन कर रह गए है। वर्तमान में बिहार सरकार में अपराधी वेलगाम हो गए है। महंगाई और बेरोजगारी चरम पर है। चोरी और घूसखोरी प्रशासन के संरक्षण में खुलेआम उत्कर्ष पर है। पूरा बिहार में अराजक माहौल कायम हो चुका है। जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। यदि समय रहते सरकार इन सभी बिंदुओं पर सार्थक पहल नही किया तो आने वाले समय मे पार्टी (महागठबंधन) बहुत बड़ा जन आंदोलन खड़ा करने के लिए बाध्य हो जाएगी। प्रतिरोध मार्च में भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी अध्यक्ष अशोक राम, सत्य प्रकाश राय, डॉ अमित कुमार द्विवेदी, पूर्व जिलाध्यक्ष त्रिवेणी सिंह, श्रीधर तिवारी, रजि अहमद, संतोष पांडेय, प्रो. अरुण कुमार सिंह, बिरेन्द्र मिश्रा, अब्दुल शलाम कुरैसी, राकेश त्रिपाठी, अरबिंद सिंह, मनोज कुमार अंजनी, रबिन्द्र कुमार रवि, सूरज प्रकाश, आशुतोष ठाकुर, भानू प्रकाश सिंह, चितरंजन सिंह मुन्ना, बिजली बाबा, पन्नक त्रिपाठी, बिजेन्द्र राय, राजेश कुमार गौतम, लुटावन चौरसिया, हीरा लाल दुबे, नागेंद्र मिश्रा, घनश्याम चौधरी, रामानुज दुबे, उदय राम, डॉ शिव नाथ पासवान, मदन मोहन तिवारी, शिव शंकर चौबे, पप्पू पासवान, गजेंद्र चौधरी, इंद्रजीत राम, विकाश यादव, बुटन राम सहित सैकड़ों नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

रोगी कल्याण समिति की बैठक में कई एजेंडो पर लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

गया। जयप्रकाश नारायण सदर अस्पताल में रोगी कल्याण कार्यकारी समिति की बैठक सिविल सर्जन डॉ रंजन कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई,जिसमें सर्वप्रथम संशोधित दिशा-निर्देश 2024 बिहार सरकार द्वारा नव गठित सदस्यों के स्वागत करने के उपरांत महत्वपूर्ण एजेंडे पर विचार विमर्श किया गया है।

डीएम द्वारा नामित सदस्य डॉ जितेंद्र कुमार ने अस्पताल में रोगियों को हर हाल में सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं को उपलब्ध करने का अनुरोध किया है। डॉ कुमार ने कहा है समिति के देखरेख में ही कोई विकास का कार्य किया जाए।

डीएचएस द्वार नामित सदस्य अनंत धीश अमन ने कहा है कि अस्पताल के डॉक्टर,स्वास्थ्य कर्मी नियमित रूप से कार्यो में लगे रहते है ताकि रोगियों को किसी तरह से दिक्कत न हो ऐसे चिकित्सको एंव कर्मचारियों को समय समय पर समिति की और से सम्मानित किया जाए।

इसके साथ हीं सदर अस्पताल में नियमानूकूल बेडो की संख्या होनी चाहिए जो की अभी कम है इसपर विशेष रुप से ध्यान आकृष्ट करने की जरुरत है। एंव साफ सफाई पर विशेष ध्यान रखा जाए जिससे स्वच्छ गया स्वस्थ गया की और हम सभी अग्रसर हो। अस्पताल परिसर अतिक्रमण मुक्त रहे और अस्पताल के चारो और सरकार के रीगी कल्याणकारी योजनाओं का मुख्यता से उल्लेख हो जिससे लोग लाभान्वित एंव जागरुक हो सके। इस बैठक में और भी कई बिंदुओं पर नए निर्णय लिए गए जिसमें अस्पताल परिसर में पार्किंग की समस्या दूर करने, दवा वितरण काउंटर बढ़ाने, अस्पताल के पर्ची पर मोबाइल नंबर और शिकायत के लिए टोल फ्री नंबर देने, अस्पताल में शिकायत पेटी रखने, अस्पताल में मरीजों की सुविधा के लिए बेड बढ़ाने, अस्पताल परिसर में विशेष साफ सफाई रखने एवं केंद्रीय भंडार गृह का निर्माण करने पर विशेष जोर दिया गया है। इस बैठक में सदस्यों ने ओपीडी में रोगियों को बेहतर चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। सिविल सर्जन ने बताया कि जेपीएन अस्पताल मानक अस्पताल की श्रेणी में है।अस्पताल में जगह की कमी के कारण मरीजों को सुविधा देने में असमर्थ हैं। हालांकि सीमित संसाधन होने के बावजूद भी पहले से बेहतर सुविधाएं मिल रही है। इस बैठक के बाद सदस्यों ने सीएस के साथ अस्पताल परिसर का घूम-घूम कर निरीक्षण किया गया है।

जिला और देश के प्रमुख मुद्दे मजबूती के साथ उठाया जाएगा सदन में : सुदामा प्रसाद

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन समर्थित भाकपा - माले उमीदवार कॉमरेड सुदामा प्रसाद को भारी अंतर से विजयी बनाने के लिए जनता के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए भाकपा - माले ने 9 जुलाई से 19 जुलाई तक सभी प्रखंडो में जनता को धन्यवाद समारोह आयोजित किया जिसका कल समापन्न हुआ।

धन्यवाद समारोह के दौरान जनता ने अपने विभिन्न समस्याओं को रखा और निदान हेतु आवेदन भी दिया। जिसमें बिजली, स्वस्थ्य और इलाज, सिचाई, दाखिलखरीज , व्यवसाय सहित लगभह 37 तरह के सवाल हैं। 22 जुलाई से 12 अगस्त तक सत्र में जाने के पहले सांसद सुदामा प्रसाद ने अपने टीम के साथ विभागावार छंटनी किये। जिसके उपरांत सम्बंधित विभाग के अधिकारियों को देकर रिसीव कराया जाएगा और तत्काल सवालों को हल करने को निर्देशित किया जाएगा और 15 प्रगति रिपोर्ट मांगा जाएगा। इस मौके पर कॉमरेड सुदामा प्रसाद ने कहा कि कई दौर के वार्ता के बाद भी बिजली की समस्याएं लगतार बढ़ रही इसे ठीक किया जाए साथ ही उन्होंने कहा कि 6 जुलाई को प्रभारी मंत्री और पूर्व में विधानसभा में जीरो माइल के सड़क समस्या रखने के बाउजूद ठीक नही किया जा रहा है इसे तत्काल ठीक किया जाए। 22 जुलाई से 12 अगस्त तक मानसून सत्र में जिला और देश के प्रमुख मुद्दे मजबूती के साथ सदन में उठाया जाएगा।

अनुग्रह नारायण कॉलेज में एक पेड़ मां के नाम पर किया गया पोधोरोपण

गया ।अनुग्रह मेमोरियल महाविद्यालय,गया के राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई द्वारा क्षेत्रीय निदेशालय राष्ट्रीय सेवा योजना,पटना के निदेर्शानुसार एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ अनंत कुमार सिन्हा ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को वृक्षारोपण करने हेतु प्रोत्साहित करना है। जिससे कि पेड़ के द्वारा मनुष्य एवं जीव जंतुओं को ऑक्सीजन प्राप्त हो सके। पेड़ और जंगल ग्लोबल वार्मिंग को रोकने और प्रदूषण को कम करने में भी मदद करता है। डॉ श्वेता सिंह राष्ट्रीय सेवा योजना, कार्यक्रम पदाधिकारी ने कहा कि पेड़ लगाने से ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम किया जा सकता है।पेड़ लगाने से मृदा अपरदन कम होती है।

विकास कार्यों का जिला पदाधिकारी ने किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

गया। फल्गु नदी के पश्चिमी तट में बाईपास से देवघाट तक फल्गु में बन रहे पाथवे अप्रोच रोड एव अन्य कार्यो का जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने निरीक्षण किया है। जिला पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि निर्धारित समय सीमा तक में फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर बन रहे अप्रोच सड़क सहित सभी कार्यो को हर हालत में पूरा करा लेने का निर्देश कार्यपालक अभियंता गया जी डैम को दिया गया। विदित हो कि पितृपक्ष मेले में देश-विदेश से आने वाले तीर्थ यात्रियों को समुचित यातायात सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जल संसाधन सहित तीन अन्य सरकारी विभागों के सहयोग से निर्माण कार्य कराया जाना है । फल्गु नदी के पश्चिमी किनारे पर युद्ध स्तर पर पाथवे बनाने का काम जल संसाधन विभाग द्वारा किया जा रहा है। 450 मीटर लंबी व 12 मीटर चौड़ी सड़क के साथ साथ एकीकृत जल निकासी के लिए नाले के साथ पाथवे का निर्माण जल संसाधन विभाग की निगरानी में कराया जा रहा है। इसके अलावा पाथवे के किनारे ग्राउंड लेवल से ढाई मीटर ऊंची दीवार, सौ मीटर लंबी व आठ मीटर चौड़ी दो घाट भी बनाया जा रहा है।पर्याप्त मात्रा में लाइटिंग की भी व्यवस्था होगी.

पाथवे निर्माण होने से लोग ई-रिक्सा से सीधे घाट तक पहुच सकेंगे।घुघड़ीटांड़-बाइपास से मुक्तिधाम होते हुए विष्णुपद तक पहुंचने वाला अप्रोच पथ इस पितृपक्ष मेला तक पूर्ण करवाने को कहा है। नए पथ के निर्माण से गयाजी आने वाले तीर्थयात्रियों को काफी सुविधा मिलेगी। निरीक्षण के क्रम में जल संसाधन विभाग के अभियंता ने बताया कि इस पथ की लंबाई करीब 450 मीटर और चौड़ाई करीब 12 मीटर है। प्रत्येक दिन अधिकारियों की टीम निर्माण कार्य की जांच कर रहे हैं। विष्णुपद तक बन रहे नए अप्रोच पथ में आने वाले पर्यटकों व श्रद्धालुओं को उमदा पार्किंग की व्यवस्था मिलेगी। जिला पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि यहां घुघड़ीटांड़ बाइपास के पास वाहनों की पार्किंग के लिए एक बड़ा एरिया को तैयार किया जा रहा है। इसके लिए बायपास रोड के दक्षिण ओर पूल निर्माण निगम के खाली पड़े जमीन को समतलीकरण करवाते हुए पार्किंग के रूप में प्रयोग किया सके इसके साथ ही निगम को निर्देश दिया गया कि मिट्टी भरवाकर इसका समतलीकरण करवाये। समतलीकरण के पश्चात लोग सीधे पूल के नीचे होते हुए नदी के समानांतर आते हुए मंदिर पहुच सकते हैं। यह रास्ता बनने से मंदिर तक लोग आसानी से पहुंच सकेंगे तथा बुजुर्ग व लाचार श्रद्धालुओं को राहत मिलेगी। बाईपास पूल के ठीक नीचे वाले रास्ते को मोटरेबल बनाये।जल संसाधन विभाग गया के अभियंता ने बताया कि पथ के नीचे करीब 400 मीटर लंबा ड्रेनेज सिस्टम बनेगा, जो मनसरवा नाला को जोड़ेगा। इसके अलावे चहारदीवारी का निर्माण भी किया जाएगा। इस नए अप्रोच पथ का सीता पथ की तरह सौंदर्यीकरण होगा। नए अप्रोच पथ पर दो नए घाट भी बनेंगे। इन सभी कार्यो के लिए जल संसाधन विभाग के साथ आर सी डी, पुल निर्माण विभाग, पर्यटन विभाग द्वारा समग्र रूप से तैयार कार्य योजना के तहत कार्य कर रही है। इस निरीक्षण के दौरान डीएम ने अनुमण्डल पदाधिकारी सदर को निर्देश दिया है कि नदी के तल में बॉस बल्ला पर लगाये गए दुकानों को हटवाए। इसके साथ ही निर्माणधीन एप्रोच रोड के रास्ते मे कही कोई लकड़ी का ढेर या दुकान नही लगावे इसे सुनिश्चित करे। इसके साथ ही कहा कि विष्णुपद शमसान घाट पास फैले यत्र तत्र लकड़ियों को हटवाए। नदी के तल में कोई भी दाह संस्कार कार्य नही करवाये, पूर्व से बने शेड में ही दाह संस्कार कार्य करवाये।देवघाट से शमशान घाट निरीक्षण में डीएम ने निर्देश दिया कि घाट पर टूटे टाइल्स को ठीक करवाये। घाट पर आए गंगाजल के कनेक्शन को ठीक करवाये। सभी नल एव टॉयलेट्स को फंक्शनल बनाये। घाट को सफाई की पिरि व्यवस्था रखे। इस अवसर पर नगर आयुक्त गया नगर निगम, अनुमण्डल पदाधिकारी सदर, कार्यपालक अभियंता जल संसाधन विभाग, वरीय उप समाहर्ता गण, नगर निगम के अधिकारीगण सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

आदर्श ग्राम खुर्दा में पूर्णिया सांसद पप्पू यादव का अभिनंदन लोगों ने किया गर्म जोशी के साथ भव्य स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा)। कुमारखंड प्रखंड के आदर्श ग्राम खुर्दा में शुक्रवार को रात करीब दस बजे पूर्णिया के नव निर्वाचित सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव 4 माह बाद अपने पैतृक गांव पहुंचने पर स्थानीय लोगों ने सुभाष चंद्र बोस यूनिवर्सल स्कूल परिसर में नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया। सांसद पप्पू यादव का फूल माला, गुलदस्ता अंग वस्त्र भेंट कर भव्य स्वागत किया। युवाओं ने केवटगामा चौक पर से ही बैंड बाजे और आतिशबाजी के साथ पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। श्री यादव ने मौजूद कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा लोकसभा में आपकी ताकत के बदौलत पहुंचा हूं। यहां के लोगों की दुआ और आशीर्वाद के बदौलत चुनाव के समय हर घर में मेरे जितने के लिए प्रार्थना और दुआ कर रहे थे। एक तरफ देश के बड़े-बड़े पॉलीटिशयन ताकतवर लोग धन बल सबका इस्तेमाल किया। लेकिन आप तमाम लोगों की दुआ और आशीर्वाद के बदौलत चुनाव जीत कर संसद भवन पहुंचा हूं । उन्होंने कहा 6 माह के अंदर हर तरफ विकास का काम होगा। हर युवाओं को चेहरे पर खुशी होगा गांव को पक्की सड़क से जोड़ने का काम किया जाएगा।

श्रीं यादव ने कहा आप मेरे ईश्वर के समान है आप हमारे लाइफ लाइन है । आप लोगों की बदौलत ही देश का सेवा करने के लायक बनाया है। उन्होंने कहा शपथ लेने के बाद सबसे पहले हमारी मांग कोशि, सीमांचल के आजादी और विशेष पैकेज और के साथ-साथ है बिहार के लिए विशेष राज्य की दर्ज की मांग सदन में पहले दिन ही उठाने का काम किया हूं। हर युवाओं का आवाज सरकारों तक पहुंचाने का काम किया । अमीर गरीब जब न्याय के लिए एक कदम आगे बढ़ता है और अपनी खुशियों को ढूंढता है। एक ही उम्मीद जागती है जिसका नाम पप्पू यादव है। उन्होने सरकार पर भी तंज कसा है। मौके पर विनोद यादव, नूर आलम, सुशील यादव, कुंदन कुमार, मिथुन यादव, मनोज यादव, रतन यादव, नवीन कुमार, मोफिक आलम, राजीव बबलू, सिंटू कुमार, रणधीर कुमार, मिंटू कुमार सिंह, मुखिया तेज नारायण यादव, रामचंद्र मंडल, रणधीर यादव, अजय यादव मनोज यादव, मो ० गियास, सिराजउद्दीन, फारूक आलम, बाबुल आलम समेत हजारों की संख्या में लोग मौजूद थे।

अनुकंपा के आधार पर 8 आश्रितों को जनवितरण प्रणाली के अनुज्ञप्ति की दी गई स्वीकृति

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। अनुकंपा के आधार पर जनवितरण प्रणाली की अनुज्ञप्ति को लेकर शनिवार को जिलाधिकारी अमन समीर की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति की बैठक आहुत की गई।बैठक में कुल 28 आवेदनों पर विचार किया गया। सभी आवश्यक दस्तावेजों के सत्यापन के आधार पर 8 आवेदकों को अनुज्ञप्ति देने की स्वीकृति दी गई। स्वीकृति प्राप्त आवेदकों में जलालपुर प्रखंड के राकेश कुमार प्रसाद एवं प्रकाश कुमार सिंह, सदर प्रखंड के आशुतोष कुमार एवं प्रेम कुमार मांझी, पानापुर प्रखंड के सुरेंद्र साह, अमनौर प्रखंड की सीता देवी, मढ़ौरा प्रखंड के मुकेश कुमार एवं दरियापुर प्रखंड के मनोज कुमार राय शामिल हैं।

इसके साथ ही 4 आवेदनों को विभिन्न वैध कारणों से अस्वीकृत किया गया। 16 अन्य आवेदनों में जन्मतिथि एवं अन्य दस्तावेजों के सत्यापन/पुष्टि के उपरांत अग्रेतर कार्रवाई का निर्णय लिया गया। इनमें से कुछ आवेदनों में पुराने विद्यालय स्थानांतरण प्रमाण-पत्र में अंकित जन्मतिथि का मिलान आवेदक के पूर्व निर्गत मतदाता फोटो पहचान पत्र से कराने का निदेश दिया गया। जन्मतिथि के मिलान एवं अन्य दस्तावेजों के सत्यापन के आधार पर अगली बैठक में सभी लंबित आवेदनों पर विचार कर अंतिम निर्णय लिया जायेगा। बैठक में जिला आपूर्ति पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी सदर तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अनुमंडल पदाधिकारी सोनपुर एवं मढ़ौरा जुड़े थे।

उचित दर से मुआवजा नहीं मिलने को लेकर भू स्वामियों ने दिघवारा-शेरपुर पुल का काम रोका

दिघवारा नगर।स्थानीय प्रखंड के दिघवारा नगर पंचायत में अवस्थित मौजा मीरपुर भुआल और सैदपुर दिघवारा में बनने वाले शेरपुर दिघवारा सिक्स लेन पुल को लेकर किए जा रहे भूमि अधिग्रहण का कड़ा विरोध न्यायालय से लेकर जमीनी स्तर पर हो रहा है।शनिवार को भू स्वामियों को जैसे ही अधिग्रहण में परने वाले जमीन में निर्माण कार्य की सूचना मिली काफी संख्या में भू स्वामी अपनी जमीनों पर पहुंच कर जेसीबी से कार्य कर रहे निर्माण कंपनी के कर्मियों को काम करने से रोक दिया,साथ ही भू स्वामियों ने कहा कि जबतक उनका

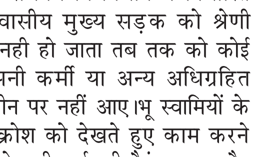

नोटिस निबंधन विभाग में निर्धारित आवासीय मुख्य सड़क को श्रेणी से नही हो जाता तब तक को कोई कंपनी कर्मी या अन्य अधिग्रहित जमीन पर नहीं आए।भू स्वामियों के आक्रोश को देखते हुए काम करने पहुंचे सभी कर्मचारी बैरंग वापस लौट गए।अपनी मांग को दुहराते हुए सभी भू स्वामियों ने अपना मांग दोहराते हुए कहा जब तक उचित मुआवजा का नोटिस उन्हें प्राप्त नहीं होता तब तक पुल निर्माण के संदर्भ में कोई आगे पहल ना किया जाए । विदित हो कि इस अधिग्रहण में सरकारी मनमानी के खिलाफ कतिपय भू स्वामियों ने कमिश्नर कोर्ट में आर्बिटेशन बाद दाखिल किए थे।उन वादों की सुनवाई पश्चात सारण कमिश्नर के द्वारा आदेश जारी हुआ था।उक्त आदेश के आलोक में जिलाधिकारी ने विगत 4 माह पूर्व 15 फरवरी को दर निर्धारण की बैठक करते हुए सबंधित विभाग को भेजने का निर्देश भू अर्जन विभाग को दिया थे।हालांकि इस बैठक में भी भू स्वामियों की उपस्थित नहीं होने और कमिश्नर के आदेश के हिसाब से त्रिपक्षीय वार्ता नहीं होने के कारण प्रस्तावित दर पर भी भू स्वामियों की आपत्ति बरकरार है।अभी तक साढ़े चार माह बीतने के पश्चात भी भू स्वामियों को नया दर का नोटिस प्राप्त हुआ ही नही है।जिसके कारण भू स्वामियों और निर्माण कंपनी में तकरार बरकरार है। हालांकि सूत्र के हवाले से अभी तक उक्त मुआवजा बढ़ोतरी का प्रस्ताव अभी तक सरकारी फाइलों में अटका पड़ा है।इस परिस्थिति में यह देखना दिलचस्प होगा कि आखिर कब तक नए दर से सभी संबंधित भू स्वमियो को नोटिस भू अर्जन विभाग हस्तगत करवा पाती है।

बढ़ रहे अपराधिक घटनाओं को ले इंडिया गठबंधन के नेताओं ने निकाला प्रतिरोध मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। बिहार में बढ़ रही अपराधिक घटनाओं, बेतहाशा महंगाई और विधि व्यवस्था सुधार को लेकर इंडिया गठबंधन के नेताओं ने शनिवार को शहर में प्रतिरोध मार्च निकाला ' बता दें कि बिहार प्रदेश के इंडिया गठबंधन के आह्वान पर प्रतिरोध मार्च निकालकर केंद्र और राज्य सरकार के प्रति इंडिया गठबंधन के नेताओं ने विरोध जताया ' नगरपलिका चौक स्थित जिला परिषद कार्यालय के प्रांगण से इंडिया गठबंधन के नेताओं व कार्यकताओं ने लगभग 11 बजे अपराहन में शहर में विशाल प्रतिरोध मार्च निकाला। जिसमें भारी संख्या में राजद,कांग्रेस,सीपीआई,सीपीआई (एम) भाकपा माले एवं विकाश शील इंसान पार्टी के बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए ' प्रतिरोध मार्च नगरपालिका चौक, नगर थाना चौक होते हुए शहर में प्रदर्शन कर महागठबंधन के नेताओं का एक शिष्टमंडल जिलाधिकारी से मिलकर बिहार में अप्रत्याशित रूप से रोज हो रही हत्याएं, अपहरण, बलत्कार, डकैती एवं लूट तथा गिरती विधि व्यस्था के खिलाफ एक ज्ञापन सौपा। संयुक्त प्रतिरोध मार्च में महागठबंधन के जिले के कई विधायक पूर्व मंत्री सहित भारी संख्या में इंडिया गठबंधन के नेता व कार्यकर्ता शामिल हुए ' इस अवसर पर इंडिया गठबंधन के नेताओं ने कहा कि बिहार में अप्रत्याशित रूप से हो रही हत्याएं एवं चौपट विधि व्यस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन विरोध करती है।

राज्य में बिगड़ती कानून व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन का प्रतिरोध मार्च

गया ।राज्य में बिगड़ती कानून व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन के राज्यव्यापी प्रोटेस्ट मार्च के तहत आज गया में जोरदार प्रदर्शन किया गया है। गांधी मैदान मुख्य द्वार से निकला मार्च कचहरी होते हुए समाहरणालय पहुंचा जहां सभा का आयोजन किया गया है ।इस मार्च का नेतृत्व राजद जिला अध्यक्ष मो. मुर्शीद आलम, सुभाष यादव, कांग्रेस जिला अध्यक्ष गगन कुमार मिश्र, भाकपा माले जिला सचिव निरंजन

कुमार, सीपीआई जिला सचिव सीताराम शर्मा, माकपा जिला सचिव राम खेलावन दास, वीआईपी के जिला अध्यक्ष राज किशोर साहनी कर रहे थे। इस दौरान 11 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी के माध्यम से महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा ।नेताओं ने कहा की बिहार में इन दिनों जिस तरह से अपराध की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है, उसे वर्तमान एनडीए सरकार रोकने में पूरी तरह असमर्थ साबित हुई है। सत्ता के संरक्षण में अपराध फल-फूल रहा है। राज्य में बढ़ रहे अपराधिक घटनाओं के कारण नागरिक समाज दहशत में है। अब तो घर के अन्दर भी लोग सुरक्षित नहीं हैं।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, रविवार, 21 जुलाई, 2024

एनिमल में रणबीर, शाहिद की कबीर सिंह जैसे किरदार 10-12 साल पहले कामयाब नहीं होते

2023 की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर में से एक, रणबीर कपूर की एनिमल ने कैश रजिस्टर की धूम मचा दी, लेकिन आलोचकों और दर्शकों के एक वर्ग ने महिला विरोधी, हिंसक पुरुषों को हीरो बनाने के लिए इसकी आलोचना की। अब, ईटाइम्स के साथ एक इंटरव्यू में, अभिनेता कुणाल कपूर ने फिल्म पर टिप्पणी की और कहा कि आज दर्शक सभी तरह के नायकों को स्वीकार करते हैं, कुछ साल पहले के विपरीत। कुणाल ने कहा, आज दर्शक हर तरह के हीरो को स्वीकार करते हैं। कबीर सिंह में शाहिद कपूर और एनिमल में रणबीर कपूर जैसे किरदार आपके सामने हैं। ये किरदार शायद 10-12 साल पहले कामयाब नहीं होते क्योंकि लोग हीरो से एक खास तरह की उम्मीद करते थे। हम जितना ज़्यादा उस ढांचे को आगे बढ़ाएंगे, सबके लिए उतना ही बेहतर होगा। कुणाल ने कहा, जब मैंने शुरुआत की थी, तो कुछ खास तरह की फिल्में बनती थीं और हीरो से एक खास तरह का होने की उम्मीद की जाती थी। आपको एक सांचे में फिट होना पड़ता था, जो मैं नहीं कर पाया। आपको जिस तरह की फिल्में करनी थीं, उनसे कुछ खास उम्मीदें थीं। और मुझे वे फिल्में पसंद नहीं आईं। सौभाग्य से, जो हुआ है वह यह है कि अब सांचा बदल गया है और अलग-अलग तरह के किरदार लिखे जा रहे हैं और अलग-अलग कहानियां बनाई जा रही हैं। मैं इसी तरह के माहौल का आनंद लेता हूं। रणबीर के अलावा, संदीप रेड्डी वांगा की एनिमल में अनिल कपूर, रश्मिका मंदाना, बॉबी देओल और तृप्ति डिमरी भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। एनिमल में अत्यधिक हिंसा है और कई लोगों ने इसे विषाक्त मर्दानगी का महिमामंडन करने के लिए आलोचना की थी।

सोशल मीडिया पर क्यों ज्यादा सक्रिय नहीं रहती हैं प्राची

अभिनेत्री ने बताई इसके पीछे की वजह

बॉलीवुड अभिनेत्री प्राची देसाई को हाल ही में मनोज बाजपेयी की फिल्म 'साइलेंस 2' में देखा गया। प्राची देसाई ने अपने करियर की शुरुआत टीवी से की थी। प्राची ने 'वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई', 'एक विलेन', 'बोल बच्चन' और 'रॉक ऑन' जैसी फिल्मों में सफल भूमिका अदा की है। एक बातचीत में प्राची ने अपने व्यक्तित्व के बारे में खुलासा किया। उन्होंने कहा कि वह बहुत ही निजी व्यक्ति हैं। उन्हें पार्टी करना पसंद नहीं है। वह सोशल मीडिया से भी खुद को दूर रखती हैं। इस दौरान उन्होंने अपनी पसंद के बारे में भी साझा किया।

प्राची को पसंद है प्राइवेसी

बातचीत के दौरान प्राची ने साझा किया कि उन्हें प्राइवेसी पसंद है। वह सोशल मीडिया पर भी बहुत सक्रिय नहीं रहना चाहतीं। उन्होंने कहा, कई बार मेरे दोस्त मुझसे कहते हैं कि मुझे सोशल मीडिया पर ज्यादा सक्रिय रहना चाहिए, लेकिन मुझे प्राइवेसी पसंद है। उन्होंने आगे कहा, पिछले कुछ वर्षों में, मैं बहुत ज्यादा काम नहीं कर रही थी, क्योंकि मैं एक जैसे रोल से ऊब गई थी। जब मेरे पास दिलचस्प प्रोजेक्ट आए, तो महामारी आ गई और सभी को दो साल का ब्रेक लेना पड़ा।'

'साइलेंस 1' और 'साइलेंस 2' ने दिया मौका

एक साक्षात्कार में अभिनेत्री ने साझा किया कि वह वेब सीरीज की प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनकर कितनी खुश हैं। अभिनेत्री ने कहा, 'महामारी के दौरान और उसके बाद, ओटीटी ने लेखकों, निर्देशकों, नए लोगों और यहां तक कि मनोज बाजपेयी और विजय वर्मा जैसे अभिनेताओं के लिए भी सब कुछ बदल दिया, जो जाने-माने नाम थे', लेकिन 'साइलेंस 1' और 'साइलेंस '2' ने मुझे बाधाओं को तोड़ने और कुछ अलग करने का मौका दिया।'

प्राची देसाई का वर्क फंट

प्राची देसाई के वर्कफंट की बात करें, तो अभिनेत्री ने वर्ष 2006 में एकता कपूर के सीरियल कसम से अपने करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने 2008 में फिल्म रॉक ऑन के साथ फिल्मों में कदम रखा। रॉक ऑन के बाद प्राची ने 'वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई' सुपरहिट फिल्म में काम किया, जो बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी। इस फिल्म में प्राची के अलावा अजय देवगन, इमरान हाशमी थे। हाल ही में अभिनेत्री 'साइलेंस 1' और 'साइलेंस 2' में नजर आई हैं।

वर्दी पहनकर जबरदस्त एक्शन करते नजर आएंगे शाहिद

शाहिद कपूर एक और एक्शन पैक्ड फिल्म के साथ पर्दे पर धमाल मचाने वाले हैं। शाहिद कपूर देवा के साथ सिल्वर स्क्रीन पर वापसी करने के लिए तैयार हैं। तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया के बाद से वो किसी फिल्म में नजर नहीं आए हैं, ऐसे में इस अपकमिंग फिल्म ने उनके प्रशंसकों को बेसब्र किया है। यह फिल्म 14 फरवरी, 2025 को रिलीज होने वाली है। मेकर्स ने रिलीड डेट के साथ शाहिद कपूर का लुक भी रिवील कर दिया है। जी स्टूडियोज और रॉय कपूर फिल्म्स हाई-ऑक्टेन एक्शन थ्रिलर देवा का निर्माण कर रहे हैं। सामने आए पोस्ट में शाहिद कपूर ने अपनी एक तस्वीर दिखाई है, जिसमें वो बुलेट प्रूफ जैकेट पहने दिख रहे हैं। उनके हाथ में बंदूक है, जिसे देखकर जाहिर हो रहा है कि वो किसी घटना स्थल पर जहां फायरिंग हो रही है। इस तस्वीर को साझा करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, देवा के रोमांच का अनुभव करें, क्योंकि यह पावर-पैक एक्शन थ्रिलर 14 फरवरी, 2025 को सिनेमाघरों में आएगी! शाहिद कपूर के इस पोस्ट के कमेंट सेक्शन में लोग उत्साहित नजर आ रहे हैं। देवा का निर्देशन प्रशंसित मलयालम फिल्म निर्देशक रोशन एंड्रयूज ने किया है और इसका निर्माण सिद्धार्थ रॉय कपूर ने किया है। देवा रोमांच, ड्रामा और एक्शन पैक्ड फिल्म है। ये फिल्म एक रोलर-कोस्टर राइड का वादा करती है। शाहिद कपूर एक शानदार लेकिन विद्रोही पुलिस अधिकारी की भूमिका में हैं, जबकि पूजा हेगड़े एक पत्रकार की भूमिका में प्रमुख महिला हैं।

नागवधू में बोल्ड सीन्स को लेकर पहले डरी हुई थीं सुबुही जोशी

मशहूर एक्ट्रेस सुबुही जोशी टीवी इंडस्ट्री में अपनी एक्टिंग और कॉमेडी टाइमिंग के लिए जानी जाती हैं। इन दिनों वह वेब सीरीज नागवधू- एक जहरीली कहानी में बोल्ड सीन्स को लेकर चर्चाओं में है। सीरीज में उनके काम को लेकर मिल रही दर्शकों की प्रतिक्रिया से वह बेहद खुश हैं। नागवधू- एक जहरीली कहानी में सुबुही जोशी नई दुल्हन आभा के किरदार में हैं। सुबुही ने कहा, मुझे लगता है कि कुल मिलाकर, मुझे बहुत पॉजिटिव रिस्पांस मिला। मैं बहुत डरी हुई थी, क्योंकि मैंने कुछ बोल्ड सीन किए थे। लेकिन, सभी ने इसके बारे में अच्छी बातें कहीं, क्योंकि स्क्रीन पर बिल्कुल भी ऐसा नहीं लग रहा था कि यह गैर-जरूरी हो। मुझे कुल मिलाकर बहुत अच्छे कमेंट्स मिले हैं। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि फीडबैक बहुत पॉजिटिव रहा है। दर्शकों को यह कहानी के लिए जरूरी और दिलचस्प लगा, जो मेरे लिए राहत की बात थी। तारीफों ने सीन्स की सुंदरता को बढ़ा दिया। सुबुही ने कहा कि वह सभी तरह के प्रोजेक्ट करने के लिए तैयार हैं। एक्ट्रेस ने कहा, मुझे नागवधू जैसा कुछ फिर से करने में कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि कहानी के लिहाज से, यह अच्छा था। जिन चीजों को लेकर मैं सबसे ज्यादा डर रही थी, वे असल में अच्छी निकलीं, इसलिए मुझे उन्हें फिर से करने में कोई आपत्ति नहीं है। ऑन-स्क्रीन बोल्ड कंटेंट के बारे में एक्ट्रेस ने कहा, आजकल बोल्ड कंटेंट को इसलिए स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि लोग इन चीजों के बारे में ज्यादा खुले हैं। लोग इसे लेकर काफी सहज हैं, हालांकि अभी भी कुछ जगहें ऐसी हैं जहां इसे ज्यादा पसंद नहीं किया जाता क्योंकि परिवार एक साथ शो देखना चाहता है।

छह साल बाद फिर से साथ नजर आएगी जान्हवी कपूर-ईशान खट्टर की जोड़ी!

जान्हवी कपूर और ईशान खट्टर ने अपने फिल्म करियर की शुरुआत एक साथ फिल्म धड़क से की थी। फिल्म की कहानी से लेकर इसके गाने लागों के बीच बेहद प्रसिद्ध हुए थे। इस फिल्म में दोनों की लाजवाब जोड़ी को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला था। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार एक बार फिर से जान्हवी और ईशान एक फिल्म में साथ नजर आ सकते हैं। इस फिल्म को नीरज घायवान निर्देशित करेंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार एक बार फिर से जान्हवी और ईशान आगामी फिल्म में अपनी शानदान ऑनस्क्रीन जोड़ी से दर्शकों का दिल धड़काएंगे। हो सकता है कि यह फिल्म धर्मा प्रोडक्शन के तहत बनाई जाए। फिल्म का नाम अभी तक तय नहीं हुआ है और ना ही फिल्म को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा हुई है। जान्हवी और ईशान ने साल 2018 में करण जौहर और शशांक खेतान की फिल्म धड़क से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी। उनकी पहली फिल्म को दर्शकों ने खूब सराहा और फिल्म को समीक्षकों और दर्शकों भरपूर प्यार मिला था। अब यह जोड़ी अपने बॉलीवुड डेब्यू के छह साल बाद बड़े पर्दे पर फिर से साथ आने के लिए तैयार है, करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस और राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक नीरज घायवान इस जोड़ी के लिए एक रोमांचक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं।

मेलबर्न में यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय अभिनेता बने रामचरण

ऑस्कर विजेता फिल्म आरआरआर के अभिनेता साउथ सुपरस्टार के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है। राम चरण को मेलबर्न के भारतीय फिल्म फेस्टिवल में भारतीय कला और संस्कृति के राजदूत से सम्मानित किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित सम्मान पाने वाले वह पहले भारतीय हैं। आईएफएफएम विक्टोरियन राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला आधिकारिक फिल्म महोत्सव है। इस साल यह 15-24 अगस्त तक चलेगा। भारतीय फिल्म फेस्टिवल मेलबोर्न ने इस बार राम चरण को राजदूत गेस्ट घोषित किया है। साथ ही अभिनेता को इंडियन सिनेमा में उनके शानदार योगदान के लिए भारतीय कला और संस्कृति के राजदूत से सम्मानित किया जाएगा। इसी के साथ राम चरण यह सम्मान पाने वाले इंडियन सिनेमा के पहले एक्टर बन गए हैं। राम चरण की पिछली फिल्म आरआरआर थी, जिसने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर एक हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का बिजनेस किया था। फेस्टिवल में हिस्सा लेने को लेकर राम चरण बेहद खुश हैं।

ब्रेकअप की अफवाहों के बीच अर्जुन कपूर ने साझा किया पोस्ट

अर्जुन कपूर और मलाइका अरोड़ा के ब्रेकअप की अफवाहों से सोशल मीडिया पर चर्चाओं का बाजार गर्म है। हालांकि, दोनों की तरफ इन खबरों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने रिश्ते के बारे में हिंट देते हुए पोस्ट किए हैं। हाल ही में अर्जुन कपूर ने दर्द से निपटने और सकारात्मक रहने के बारे में अपने इंस्टाग्राम पर एक नोट साझा किया है। आइए जानते हैं अर्जुन ने इस नोट में क्या लिखा?

अर्जुन कपूर ने साझा किया क्रिप्टिक पोस्ट

अभिनेता अर्जुन कपूर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक नोट साझा किया है, जिसमें लिखा, पॉजिटिव रहने का मतलब यह नहीं है कि चीजें ठीक हो जाएंगी। बल्कि, इसका मतलब यह है कि आप जानते हैं कि चीजें चाहे जैसे भी हों, आप ठीक रहेंगे।' वहीं, कुछ दिनों पहले अभिनेता ने एक क्रिप्टिक पोस्ट साझा किया था। उन्होंने लिखा था, 'हमारे पास जीवन में दो विकल्प हैं। हम अपने अतीत के कैदी हो सकते हैं या भविष्य की संभावनाओं के खोजकर्ता हो सकते हैं।'

मलाइका ने भी साझा किया था पोस्ट

वहीं, दूसरी ओर अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा ने भी रहस्यमयी पोस्ट साझा किया था, उन्होंने लिखा था, 'जब वे कहते हैं कि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो इसे दो बार करें और तस्वीरें लें।' साल 2018 ले अर्जुन कपूर और मलाइका अरोड़ा के डेटिंग की खबरें आ रही हैं। हालांकि, दोनों ही सितारों ने कभी भी अपने रिश्ते को लेकर कोई बात नहीं की, लेकिन वह अपनी छुट्टियों की तस्वीरें पोस्ट करते रहें और साथ ही एक-दूसरे को जन्मदिन की बधाई देते रहें। अर्जुन कपूर के वर्क फंट की बात करें तो वह मुदस्सर अजीज की फिल्म 'मेरी पत्नी' के रीमेक में नजर आएंगे। इस फिल्म में भूमि पेडनेकर और रकुल प्रीत सिंह मुख्य भूमिका में हैं। वह रोहित शेट्टी की सिंघम अगेन का भी हिस्सा हैं, जिसमें अजय देवगन, दीपिका पादुकोण, करीना कपूर, टाइगर श्रॉफ, जैकी श्रॉफ, रणवीर सिंह और अक्षय कुमार महत्वपूर्ण भूमिका में हैं।

शूटिंग खत्म करने के कगार पर पहुंची कमल हासन की फिल्म ठग लाइफ

इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्म ठग लाइफ का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। फिल्म की शूटिंग तेजी से चल रही थी। मणिरत्नम के निर्देशन में बन रही फिल्म ठग लाइफ पर लगातार नई जानकारियां सामने आ रही हैं। हाल ही में फिल्म की शूटिंग की कुछ तस्वीरें वायरल हुई थीं, जिसमें अभिनेता सिम्बू फिल्म के सेट पर मौजूद नजर आए थे। वहीं अब फिल्म के बारे में नई जानकारियां सामने आई हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, अब यह परियोजना पूरी होने की कगार पर पहुंच चुकी है। अगर नई जानकारी पर विश्वास किया जाए तो कमल हासन और मणिरत्नम की महत्वाकांक्षी परियोजना 2024 की दूसरी छमाही तक सिनेमाघरों में आने के लिए तैयार है। रिपोर्ट्स के अनुसार, निर्देशक मणिरत्नम और उनकी टीम अगस्त 2024 तक कमल हासन अभिनीत फिल्म की शूटिंग पूरी करने की योजना बना रही है। कहा जा रहा है कि अब तक लगभग 75 प्रतिशत फिल्मांकन पूरा हो चुका है। कमल हासन के साथ सिलंबरासन और अशोक सेलवन के फिल्म के अंतिम शेड्यूल में शामिल होने की उम्मीद है, जो जल्द ही रूस में फ्लोर पर जाएगी। बहुप्रतीक्षित एक्शन-ड्रामा फिल्म के बाकी 25 प्रतिशत हिस्से को आगामी रूस शेड्यूल में फिल्माए जाने की उम्मीद है। अगर सब कुछ योजना के अनुसार हुआ तो टीम अगस्त 2024 के अंत तक बहुप्रतीक्षित परियोजना की पूरी शूटिंग पूरी कर लेगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, लेखक-निर्देशक मणिरत्नम और उनकी टीम ने ठग लाइफ के पोस्ट-प्रोडक्शन का काम शुरू कर दिया है।

संक्षिप्त खबरें

छात्र राजद ने कुलपति का किया पुतला दहन

तारापुर (कोर्ट)। छात्रों की समस्या को लेकर छात्र राजद ने मुंगेर विश्वविद्यालय के वीसी का पुतला शनिवार के दिन आर एस कॉलेज तारापुर के गेट के समने फूंका। छात्र राजद का कहना है कि हमारे महाविद्यालय में शौचालय एवं कक्षा की साफ सफाई की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। इस वजह से सभी छात्र-छात्राओं को आए दिन कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। जबकि प्रत्येक विषय के अनुसार इस कॉलेज में प्रोफेसर उपलब्ध नहीं रहने के कारण पढ़ाई बाधित होता रहता है। इन सभी समस्याओं को लेकर कई बार आरएस कॉलेज के प्राचार्य के माध्यम से हम लोगों ने मुंगेर विश्वविद्यालय के कुलपति से इन समस्याओं का निदान किए जाने की मांग किया। लेकिन हम छात्रों की मांग को आज तक पूरा नहीं किया गया है इसलिए हम छात्र-छात्राओं ने आज शनिवार के दिन पुतला दहन करने का निर्णय लिया। हम छात्र-छात्रा आज मुंगेर विश्वविद्यालय के कुलपति का पुतला दहन कर रहे हैं।

आंगनबाड़ी केंद्रों पर आयोजित की गई सामाजिक अंकेक्षण

सदर मुंगेर। शनिवार को विभागीय निदेर्शानुसार सदर प्रखंड अंतर्गत सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों पर सामाजिक अंकेक्षण कार्यक्रम सेविका द्वारा आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय वार्ड सदस्य या कोई भी पंचायत प्रतिनिधि के द्वारा किया गया। वहीं बैठक में उपस्थित आंगनबाड़ी पोषक क्षेत्र के गर्भवती धात्री किशोरी तथा अन्य लोगो के बीच सेविका द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों पर किए जा रहे कार्य तथा दिए जा रहे लाभ के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारियां दी। वही श्रीमतपुर पंचायत के आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 114 पर बाल विकास परियोजना पदाधिकारी मुंगेर ग्रामीण प्रियदर्शनी ने सामाजिक अंकेक्षण कार्यक्रम में भाग ली। बैठक में उपस्थित अभिभावकों बताया गया कि आंगनबाड़ी द्वारा दिए जा रहे सभी प्रकार का लाभ हम लोगों को मिल रहा है। पर हम लोगों के बच्चों को पोशाक राशि की नहीं मिला है। जिसके कारण विदाउट ड्रेस में बच्चे को हम लोग भेजते हैं।

अफौर पंचायत के सरपंच ने थानाध्यक्ष की सारण एसपी से की शिकायत

नगरा। प्रखंड क्षेत्र के अफौर पंचायत के सरपंच मुकेश साह ने सारण एसपी को लिखित आवेदन देकर नगरा थानाध्यक्ष पर अभद्र व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए शिकायत की है. उन्होंने दिए हुए आवेदन में कहा है कि 18 जुलाई को उनके पंचायत के ग्रामीण पंकज कुमार सिंह के एक आवेदन पर कार्रवाई नहीं होने की पूछताछ करने गए थे. थानाध्यक्ष से चार दिन बीत जाने के बावजूद आवेदन पर कोई कार्रवाई नहीं होने के बारे में पूछा, तो थानाध्यक्ष ने न केवल उनसे अभद्र व्यवहार किया बल्कि उन्हें थाने नहीं आने की धमकी दी. थानाध्यक्ष ने कहा कि अगर वे दुबारा थाने आएंगे तो उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाएगा. वहीं इस संबंध में नगरा थानाध्यक्ष विजय रंजन कुमार ने बताया कि थाना के नाम पर पैसे लेने की किसी द्वारा शिकायत मिली थी।

पूर्व विवाद को लेकर मारपीट एक घायल, प्राथमिकी दर्ज

नगरा। खैरा थाना क्षेत्र के मानपुर नहर के समीप शुक्रवार की रात्रि में पूर्व विवाद को लेकर एक युवक से मारपीट का मामला सामने आया है. घायल युवक की पहचान मानपुर निवासी प्रेम सागर के रूप में हुई है. प्राथमिक उपचार के बाद प्रेम सागर ने अपने फर्दबयान में बताया कि वह रात्रि में छपरा से अपने घर मानपुर जा रहा था, तभी खैरा मानपुर नहर के पास पहले से मौजूद मानपुर टोले के परवेज खान, गणेश राय के पुत्र तेरस राय, उनकी पत्नी लगनी देवी, पुत्री संजू कुमारी, एवं अन्य दो अज्ञात लोगों ने उस पर हमला कर दिया. उन्होंने प्रेम सागर के साथ गाली - गलौज की और चाकू से पेट पर तथा खंती से सिर पर वार कर घायल कर दिया. घटना के बाद उन्होंने गले से सोने की चेन और 40,000 रुपये नकद छीनकर फरार हो गए. स्थानीय लोग और राहगीरी ने प्रेम सागर को आनन - फानन में सदर अस्पताल छपरा में भर्ती कराया, जहां चिकित्सकों ने उसका प्राथमिक उपचार किया।

फाइनेंस कर्मी से लूट मामले में एक गिरफ्तार

शेरघाटी। थाना क्षेत्र के मंझार गांव के पास पिछले सप्ताह में फ्यूजन फाइनेंस कंपनी के कर्मी से हुई लूट मामले में गुरुवार को पुलिस ने झारखंड के हंटरगंज थाना क्षेत्र के जजलो गांव निवासी अरविंद भुइयां को गिरफ्तार किया गया है.

थानाध्यक्ष अजीत कुमार ने बताया कि झारखंड पुलिस की मदद से लूट मामले में लाईनर की रूप काम करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है. उससे पूछताछ कर उसे जेल भेज दिया जाएगा।

मुंगेर जिला सहित बिहार में बढ़ते अपराध की रोकथाम को लेकर इंडिया गठबंधन ने किया विरोध प्रदर्शन मार्च

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। बिहार में बिगड़ी विधि व्यवस्था बढ़ते अपराध अपराधी प्राशासनिक अधिकारी और सत्ता के गठजोड़ के खिलाफ इंडिया गठबंधन में शामिल राजद कांग्रेस सपा सीपीआई माले वीआईपी के नेताओं ने शनिवार को राज्य सरकार के विरुद्ध कलेक्ट्रेट मार्च निकाला कर सरकार के विरुद्ध जमकर नारेबाजी किया । वहीं गठबंधन के नेता मुंगेर स्टेशन से राजद जिला अध्यक्ष त्रिलोकी नाथ शर्मा सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव सीपीआई के सचिव संजीवन सिंह माले के वरिष्ठ नेता दशरथ सिंह वीआईपी जिला अध्यक्ष अरविंद निषाद के नेतृत्व में सैकड़ो कार्यकताओं ने जिला मुख्यालय के मुख्य मार्ग पर प्रदर्शन करते हुए जिला समाहरणालय पहुंचा और जमकर नारेबाजी किया। इंडिया गठबंधन के नेता नीतीश कुमार इस्तीफा दो नीतीश कुमार खोलो कान नहीं तो होगा चक्का जाम पुलिस आपराधिक गठजोड़ नहीं चलेगा आदि नारे लगा रहे थे। समाहरणालय पहुंचने पर जैसे ही प्रदर्शनकारियों इस बात की जानकारी मिला कि जिला पदाधिकारी अपने कार्यालय कक्ष में मौजूद नही है। इसके बाद प्रदर्शनकारियों ने जम कर बवाल काटा और सरकार विरोधी नारेबाजी किया। इस मौके पर मौजूद नेताओं ने कहा कि नीतीश कुमार के कार्य काल में बिहार में अपराधियों , प्राशासनिक अधिकारियों की मनमानी समानांतर सत्ता स्थापित है जिसे पूर्णता सरकार का संरक्षण प्राप्त है और यही कारण है कि बिहार से लेकर मुंगेर जिला में हर दिन अपराध और अपराधियों का तांडव मच रहा है हर दिन लाश गिर रही है और यह सरकार मुकदर्शक बनी है ऐसे भ्रष्ट व्यवस्था के स्वयंभू शासक को इंडिया गठबंधन मुंह तोड़ जवाब देगी ।

मौके पर राजद के प्रदेश महासचिव प्रमोद यादव वीआईपी के उपाध्यक्ष जफर अहमद राजद के प्रधान महासचिव संतोष यादव सपा के जिला उपाध्यक्ष रामनाथ राय महासचिव मिथिलेश यादव युवाजन सभा के जिला अध्यक्ष मो मास सचिव नकुल यादव मीडिया प्रभारी मनोज क्रांति नगर अध्यक्ष मो आजम सीपीआई से विजय रजक मुरारी प्रसाद राजद के आकाशदीप यादव वीआईपी के दिलीप साहनी कांग्रेस से बीके चौरसिया राजकुमार मंडल सहित सैकड़ों लोग शामिल थे।

वैशाली में राजद ने निकाला प्रतिरोध मार्च, जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

अपराधियों के मन से प्रशासन का भय समाप्त : सरिता राय

प्रात: किरण ब्यूरो

वैशाली। सूबे में बढ़ते अपराध की घटनाओं और गिरती कानून व्यवस्था को लेकर इंडिया गठबंधन के आह्वान पर शनिवार को राज्यव्यापी कार्यक्रम के तहत सभी जिला समाहारणालय पर प्रतिरोध मार्च निकाला गया। प्रतिरोध मार्च में राजद कार्यकताओं ने बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया। राजद वैशाली जिला महिला प्रकोष्ठ के प्रधान महासचिव सरिता राय के नेतृत्व में वैशाली में प्रतिरोध मार्च निकला गया। मार्च के दौरान श्रीमती सरिता राय ने कहा कि बिहार में अपराध की घटना दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, विधि व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है। प्रत्येक दिन पूरे बिहार से अपराध की घटना की सूचना आ रही है। उन्होंने कहा कि बिहार की डबल इंजन की सरकार बिगड़ती विधि व्यवस्था के लिए पूरी तरह जिम्मेवार है। आज संस्थागत अपराध हो रहे हैं। किसी की भी जान सुरक्षित नहीं है। राज्य में जिस प्रकार दिन प्रतिदिन अपराधिक घटनाएं बढ़ती जा रही है और अपराधियों के मन से पुलिस प्रशासन का भय समाप्त होता जा रहा है, इससे पूरे राज्य में दहशत का माहौल कायम है। इंडिया गठबंधन द्वारा जिला मुख्यालयों पर प्रतिरोध मार्च निकाल कर जिलाधिकारी को संयुक्त ज्ञापन सौंपा गया।

इंडिया गठबंधन के घटक दलों के द्वारा सरकार विरोधी रैली को जनता ने पूरी तरह से जानकारी दिया है : विमलेंद्र राय

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। जनता दल यूनाइटेड के जिला प्रवक्ता विमलेंदु राय ने प्रेस को संबोधित करते हुए कहा की इंडिया गठबंधन के घटक दलों के द्वारा सरकार विरोधी रैली को जनता ने पूरी तरह से नकार दिया है, इस असफल रैली को इंडिया गठबंधन के घटक दलों की आपसी खींचातानी, मुद्दा विहीन राजनीति ने पूरी तरह से हास्यास्पद बना दिया । विगत लोकसभा के चुनाव में करारी हार से इंडिया गठबंधन के स्थानीय नेताओं पर यह कहावत चरितार्थ हुई की इस दिल के टुकड़े हजार हुए, कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा । इंडिया गठबंधन के स्थानीय नेताओं को भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह रैली क्यों निकाली गई ? रैली को असफल होते देख मुंगेर कलेक्ट्रेट के कार्यालय के सामने बिना अनुमति के धरने पर बैठना यह दशार्ता है कि इंडिया गठबंधन के स्थानीय नेता प्रशासन के ऊपर बेवजह अनुचित दबाव बनाने का प्रयास कर रहे हैं । जिसकी जनता दल यूनाइटेड, मुंगेर निंदा करती है । विगत दिनों वीआईपी पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी के पिता की हत्या से हम सभी काफी आहत हैं। विगत दिनों माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री संजय झा ने मुकेश सहनी जी से मिलकर सरकार की ओर से पूरा सहयोग करने का वादा किया है, उनके पिता की हत्या में शामिल अपराधियों को कठोर से कठोर सजा दी जाएगी यह भरोसा दिया गया है एवं मुकेश सहनी जी को सरकार के ऊपर पूरा भरोसा है जैसा उन्होंने मीडिया से कहा है , उसके बावजूद इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक दल राष्ट्रीय जनता दल के द्वारा पूरे बिहार में सरकार के खिलाफ नारे लगवाना एवं अराजकता का माहौल पैदा करने का प्रयास करना घोर निंदनीय है ।

माउंट यूनम हिमालय की चोटी पर चढ़ बरियारपुर का नाम किया रोशन

प्रात: किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। हौसले हो बुलंद तो ऊंचाई को भी नाप लेते हैं कुछ ऐसा ही बरियारपुर की एक लड़की ने कर दिखाई है प्रखंड के हरिजन कल्याण टोला निवासी शिक्षक अरविंद कुमार की पुत्री सृष्टि श्री ने कर दिखाई है सृष्टि श्री का प्राथमिक शिक्षा गांव के ही मध्य विद्यालय हरिजन कल्याण टोला में हुआ अपनी उच्च पढ़ाई के लिए बीएचयू बनारस में अपना नामांकन करवाई जहां पर पढ़ाई के दौरान ही पहाड़ पर चढ़ाई के लिए वह चुनी गई उसके बाद उसे चढ़ाई के लिए प्रशिक्षण दिया गया कल 50 छात्र एवं 50 छात्रों मेंसे प्रशिक्षण के उपरांत 6 छात्र एवं छात्र का चयन हुआ जिसमें प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए टीम लीडर के लिए भी चयनित हुई सभी चयनित छात्रों को माउंट यूनम हिमालय के 6150 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचना था और वापस आना था सफलतापूर्वक चढ़ाई करते हुए सृष्टि श्री ने पहाड़ की ऊंचाई पहुंच कर अपने देश का तिरंगा झंडा फहराई उसकी इस उपलब्धि से बरियारपुर प्रखंड ही नहीं बल्कि जिला और राज्य का नाम पूरे देश में रोशन हो गया और उनके माता पिता का नाम गर्व से ऊंचा हो गया उसकी इस उपलब्धि पर जब पर्वतारोहण केबाद बरियारपुर आगमन हुआ तो उसका समारोह पूर्वक भव्य स्वागत किया गया स्वागत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मुंगेर भाजपा विधायक प्रणव कुमार यादव अंचल अधिकारी रवीना गुप्ता ने अंग वस्त्र पहनाकर सृष्टि श्री को सम्मानित किया सहित कई जन प्रतिनिधि शामिल हुए एवं कहां की पहले लड़कियां सिर्फ पढ़ाई के क्षेत्र में ही आगे बढ़ती थी परंतु अब जमाना बदल चुका है पर्वतारोहण जैसे क्षेत्रमें भी लड़कियां अपना परचम लहरा रही है अगर आपके इरादे पक्के और हौसले बुलंद हो तो आप किसी भी मंजिल को पा सकते हैं मौके पर भाजपा प्रखंड अध्यक्ष राजीव कुमार उर्फ टीटू विजय सिंह जुगल किशोर राय ललिता रानी सहित सैकड़ो ग्रामीण उपस्थित थे

विद्यार्थी परिषद अपने शत प्रतिशत मांगो को पूरा नहीं होने से करेंगे चरण बद्ध आंदोलन

प्रात: किरण संवाददाता

तारापुर (कोर्ट)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आरएस कॉलेज इकाई तारापुर के द्वारा आरएस कॉलेज प्रभारी प्राचार्य प्रोफेसर डॉक्टर उदय शंकर दास का विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं ने घेराव किया एवं लंबे समय से चले आ रहे हैं मांगों को लेकर सवाल जवाब कर ज्ञापन सोंपा। इस संबंध में नगर मंत्री आनंद कुमार ने बताया कि लंबे समय से चल रहे मांग विद्यार्थी परिषद के चले आ रहे मांग को कॉलेज प्रशासन अभी तक शत प्रतिशत पूरा नहीं कर पाई है। यहां तक पीजी सिंडिकेट से पास होने के बावजूद पुनः स्थगित हो जाना कॉलेज प्रशासन की रवैया पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करती है और अब इस बात को लेकर विद्यार्थी परिषद चरणबद्ध आन्दोलन करेगी।

माँ की ममता और पेड़ की हरियाली, दोनों जीवनदायी हैं जिला समन्वयक

प्रात: किरण ब्यूरो

आरा। जिला गंगा समिति भोजपुर के द्वारा गंगा ग्राम में चलाए जा रहे विशेष अभियान एक पौधा मां के नाम के तहत शाहपुर प्रखंड के लालू डेरा पंचायत के मर्चेइया डेरा गंगा ग्राम में 2000 छायादार और फलदार पौधे का वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जिला समन्वयक जिला जल एवं स्वच्छता रंजन बैठा ,जिला परियोजना अधिकारी जिला गंगा समिति भोजपुर अमित कुमार सिंह, आईटीसी के जिला समन्वय भीम कुमार और शाहपुर प्रखंड समन्वयक अनिल कुमार उपस्थित रहे। जिला सामान्य ने कहा कि माँ की ममता और पेड़ की हरियाली, दोनों जीवनदायी है।

माँ की ममता हमें स्नेह, सुरक्षा और मार्गदर्शन देती है, जैसे पेड़ हमें स्वच्छ वायु, छाया और जीवन का आधार प्रदान करते हैं। दोनों की मौजूदगी हमारे जीवन को समृद्ध और सुखद बनाती है। आज का कार्यक्रम का नाम ही एक पेड माँ के नाम रखा गया है। जिला परियोजना अधिकारी अमित कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में वृक्ष का महत्व या वृक्ष की तुलना हम पुत्र से कर सकते हैं वृक्ष का परोपकार एक पुत्र से भी कहीं अधिक होता है एक वृक्ष हमें फल फूल हरि लकड़ी जलावन की लकड़ी जैसे विभिन्न संसाधनों की जरूर को पूरा करता है। भीम कुमार ने कहा कि पौधे परोपकार के प्रतीक है इनको हम अपने हर एक उत्सव में उपहार के रूप में एक दूसरे को दे सकते हैं जिससे हरियाली का वाहक बल अधिक से अधिक मात्रा में पेड़ लगाया जा सकतेहैं। इस कार्यक्रम में मचेर्या डेरा,लालू डेरा, माधोपुर , सैया के डेरा , दामोदरपुर,ज्वैनिया , रामकरही और अन्य गांव में आम ,अमरूद ,जामुन,माहुबानी, सागवान ,आंवला ,अर्जुन,आदि पेड़ो का वितरण किया गया ,इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सम्राट स्पोर्टिंग क्लब के अध्यक्ष शिवलागन यादव , सोनू कुमार अभिषेक कुमार अमित कुमार चंदन कुमार सिंह मनीष कुमार रामु कुमार ।

मंडल मसीहा पूर्व सांसद उतर भारत के परियार स्वर्गीय राम अवधेश सिंह के पुण्यतिथि समारोह मनाया गया

आराः शहीद अकली देवी नगर में मंडल मसीहा पूर्व सांसद उतर भारत के परियार स्वर्गीय राम अवधेश सिंह के पुण्यतिथि समारोह अखील भारतवर्षीय यादव महासभा के जिला अध्यक्ष यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया के अध्यक्षता में मनाया गया।समारोह के उद्घाटन डॉ रघुबर चन्द्रवँशी ने उनके तैलचित्र पर माल्यार्पण कर किया।अपने सम्बोधन में श्रीरघुबर चन्द्रवँशी ने कहा कि राम अवधेश सिंह का जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ था।उनकी शिक्षा दीक्षा भी साधरण ठंग से हुआ था हालांकि वे बड़े ही कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी थे पढ़ाई समाप्त होते ही उन्हें नौकरी लग गई तो उनके बड़े भाई जो शिक्षक थे उन्होंने उनसे कहा कि मैं तुमको नौकर बनने के लिए नही पढ़ाया है।तो उन्होंने नौकरी से त्याग पत्र दे दिये बाद में वे 1969में आरा विधान सभा से चुनाव जीत गए1977में लोकसभा का चुनाव जीते और1986में वे राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए मनमोहन सिंह ने उन्हें राष्ट्रीय पिछड़ा आयोग के सदस्य मनोनीत किये। प्रो विजय सिंह मुखिया ने कहा कि उनका जीवन संघर्ष पूर्ण रहा है उन्होंने मुंगेरी लाल आयोग को लड़कर बिहार सरकार में आरक्षण लिए तथा लड़कर मंडल आयोग का गठन ही नहीकरवाया लेकिन मंडल आयोग के सिफारिश को1990में लागू भी करवाने के काम किये थे।अपने अध्यक्षीय भाषण में यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया ने कहा कि राम अवधेश बाबू ने रॉयल्टी माल भाड़ा समानीकरण नीति गाडगिल फामूर्ला के साथ साथ कदवन जलाशय परियोजना के लिए अपने जीवन के अंत तक संघर्ष करते रहे उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली।समारोह को सम्बोधित करने वाले लोगो मे अर्जुन यादव अजित यादव दिनेश सिंह कामेश्वर सिंह विनोद यादव अशोक यादव प्रो सुरेश राय धर्मेंद्र यादव राहुल कुमार बच्चा बाबू सन्तोष यादव अजय सिंह सहित कई लोग उपस्थित थे।

ग्रामीणों में मची अफरा तफरी, भयानक था अजगर

छपरा कार्यालय। दिघवारा प्रखंड अंतर्गत गंगाहरा दियारा में उस व की अजगर निकला है। कुछ लोग तो नाम सुनकर ही भागने लगे और कुछ लोगों ने हिम्मत बांधकर देखने के लिए गया। लेकिन देख कर वहां पर रोक नहीं पाए, जितने तेजी में लोग देखने के लिए गया, उससे कहीं ज्यादा तेजी में उलटे पांव भागना पड़ा, क्योंकि यह अजगर मामूली नहीं काफी भयानक है

जानकारी के अनुसार बास के पेड़ पर गाने पत्ता में छुपा हुआ था और कुछ हिस्सा निशा लटका हुआ था। जिस पर एक ग्रामीण व्यक्ति का नजर पड़ा, उसके बाद शोर मचाने लगा। यह खबर इलाके में आग की तरफ फैल गई। उसके बाद कुछ लोगों ने इस बात की जानकारी पटना वन विभाग को दी, जहां 4 घंटे बाद टीम पहुंची। और अजगर को रेस्क्यू करके किसी तरह उसे घने बास की पेड़ से उतार लिया गया। उसके बाद टीम उसे पटना ले गई। ग्रामीणों ने बताया कि बांस के पेड़ पर अजगर चढ़ा हुआ था। जिसको देखकर हम लोग काफी डर रहे थे। लोगों ने बताया कि इस बात की जानकारी पटना वन विभाग को दी गई। इसके बाद 4 घंटे बाद टीम पहुंची, बताया कि टीम के द्वारा रेस्क्यू कर पटना अजगर को टीम ले गया है। ग्रामीणों ने बताया कि 12 फीट से अधिक लंबा अजगर था और 62 किलो वजन था। जिस भयानक अजगर को देखकर हम लोग काफी डर रहे थे।

ग्रामीणों ने बताया कि गंगा की पानी बढ़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि गंगा की पानी बढ़ रहा है हो सकता है गंगा के रास्ते सांप दूसरे जगह से यहां पहुंचा होगा। जिस भयानक अजगर को देखकर हम लोग डर रहे थे। बताया कि दियारा क्षेत्र होने के वजह से जानवर जीव जंतु गंगा की पानी बढ़ने के दौरान आते रहते हैं। जिसके वजह से हम लोगों के अंदर डर बना रहता है।

डाइबिटीज को हल्के में ना लें, सचेत रहें और जागरूकः डॉ. दिवाकर

जमुई। जिसके परिवार में डाइबिटीज से पीड़ित कोई है तो उन्हें सचेत रहने की जरूरत है । डाइबिटीज आज महामारी का रूप ले चुकी है। हर दस में से चार लोग डाइबिटीज के शिकार हैं । यह बिमारी के शुरूआती लक्षण की बात करें तो प्यास खुब लगना, भुख खुव लगना, बजन अचानक से गिरते जाना, चिड़चिड़ापन होना , बार बार पेशाब जाना, कमजोरी ये सभी लक्षण है जिससे आप सचेत हो सकते हैं और अगर यह लक्षण दिखाई दे तो तुरंत अपनी जांच कराए। गरीब परिवार में यह बिमारी तेजी से फैलता जा रहा है और अब यह बच्चों को भी अपने आगोश में ले रही है । अतः जरूरी है कि आप समय रहते सचेत रहें। उक्त बातें आस्था फाऊंडेशन द्वारा चलाए जा रहे वाक फार लाइफ मुहिम के तहत गरीब परिवार को बच्चों को डाइबिटीज के प्रति जागरूक करते हुए मशहूर फिजिशियन डॉ दिवाकर तैजसवी सर ने कहा। उन्होंने बच्चों से कहा कि अगर आपके माता-पिता को डाइबिटीज है तो आप सचेत रहें क्योंकि ज्यादातर संभावना होती है डाइबिटीज होने का । आस्था फाऊंडेशन की चेयरमैन निक्की सिंह ने बच्चों को खानें पीने के बारे में जानकारी दी ।

बिहार में बढ़ते अपराधी घटनाओं के खिलाफ महागठबंधन ने निकाला प्रतिरोध मार्च

हाजीपुर। बिहार में बढ़ती अपराधी घटनाओं के खिलाफ महागठबंधन के द्वारा प्रतिरोध मार्च निकाला गया ।हाजीपुर रेलवे स्टेशम परिसर से आक्रोश मार्च निकलकर मुख्यालय पर प्रदर्शन करते हुए महामहिम के नाम प्रेषित मांग पत्र जिलाधिकारी को दिया गया ।इसमें राजद,कॉंग्रेस,वामदल के नेता,कार्यकर्ता शामिल हुए।

अपने संबोधन में मुख्य रूप से नेताओं ने कहा कि बिहार में इन दिनों जिस तरह से अपराध की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है, उसे वर्तमान एनडीए सरकार रोकने में पूरी तरह असमर्थ साबित हुई है। सत्ता के संरक्षण में अपराध फल-फूल रहा है। राज्य में बढ़ रहे अपराधिक घटनाओं के कारण नागरिक समाज दहशत में है। अब तो घर के अन्दर भी लोग सुरक्षित नहीं है। नाबालिग बच्चियां भी घर से निकलने में अपने को भयभीत महसूस करती है। वीआईपी अध्यक्ष मुकेश सहनी के पिता की निर्मम हत्या का प्रसंग हो या अभी बिहटा में एक मोटर साईकिल चालक द्वारा कार चालक को मामूली गलती के लिए गोलियों से हत्या कर दिये जाने का मामला हो या मुजफ्फरपुर के डीवीआर कम्पनी में हुई युवतियों के साथ यौन शोषण की घटना। सम्पूर्ण बिहार दिन-ब-दिन इस तरह की घटनाओं से डर के माहौल में जीने को मजबूर है।

बिहार में दिन-दहाड़े फिरौती और हत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। आज यहां की दलित, आदिवासी, अतिपिछड़ा और पिछड़े समाज की महिलाएं, बलात्कार, दमन और घुटन में जीने को अभिशप्त हैं। पूरा शासन-प्रशासन ध्वस्त हो चुका है। यहां तक की समाज का कोई भी वर्ग इस शासन-प्रशासन में सुरक्षित नहीं है। बिहार की एनडीए सरकार इन सम्पूर्ण घटनाओं पर मूकदर्शक बनी हुई है। हम महागठबंधन के घटक दल बिहार में जारी इन घटनाओं के लिए अपराधियों और उनकी संरक्षक बनी एनडीए सरकार के इस संवेदनहीनता की निंदा करते हैं और महामहिम राज्यपाल महोदय से राज्य की दयनीय विधि व्यवस्था को संज्ञान में लेने का अनुरोध करते है ताकि अपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगे और बिहार का आम जन अमन चैन का जीवन जी सके। आक्रोश मार्च में मुख्य रूप से महुआ की विधायक डॉ मुकेश रोशन, जिलाध्यक्ष वैधनाथ सिंह चन्द्रवंशी,हाजीपुर से राजद के पूर्व प्रत्याशी देव कुमार चौरसिया, राजदके प्रदेश महासचिव अनिल चंद्र कुशवाहा ललन प्रसाद साहू,सुचित्रा चौधरी,संतोष चौधरी, इं अमर आलोक सहित अन्य शामिल थे।

आँगनवाड़ी केंद पर किया गया सामाजिक अंकेक्षण

लालगंज। बाल विकास परियोजना अंतर्गत सभी आंगनवाड़ी केंद्रों का सामाजिक अंकेक्षण किया गया। सरकार के निर्देश पर 20 जुलाई की निर्धारित तिथि पर सामाजिक अंकेक्षण किया जाता है। लालगंज प्रखंड क्षेत्र के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों पर शनिवार को सामाजिक अंकेक्षण सीडीपीओ अलका कुमारी के नेतृत्व में पर्यवेक्षिकाओं ने अलग अलग पंचायत के केंद्र पर सामाजिक अंकेक्षण कराया गया। पर्यवेक्षिका मंजू कुमारी गुरमिया पंचायत के आंगनवाड़ी केंद्र संख्या 107 एवं 109 पर वही सुजाता कुमारी नगर परिषद क्षेत्र के केंद संख्या 24 एवं 28 पर जब कि ऋतु कुमारी पौरामदन सिंह पंचायत के केंद्र संख्या,122,125,126,127,241,243,सुषमा कुमारी पुरखोली पंचायत के केंद्र संख्या 181,184, आँगनवाड़ी पर समाजिक अंकेक्षण कराया गया। जिसमें आंगनवाड़ी केंद्र पर सेविका सहायिका एवं लाभुकों से आंगनवाड़ी केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों एवं गर्भवती, धात्री महिलाओं के लिए के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी ली गई। जिसमें उपस्थित लाभुकों ने बताया कि उन्हें आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा सभी प्रकार की योजनाओं का लाभ ससमय मिलता है। महिला पर्यवेक्षिका ने बताया कि प्रधानमंत्री मातृत्व योजना एवं मुख्यमंत्री कन्या उथान योजनाओं के बारे में लाभुकों को विस्तृत जानकारी दी गई।

असमाजिक तत्वों ने की स्कूलों के समान क्षतिग्रस्त

सहदेई बूजुर्ग - सहदेई बुजुर्ग प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय शेखोपुर टोले विक्रमपुर एवं इसी परिसर में संचालित प्राथमिक विद्यालय शेखोपुर कन्या में असामाजिक तत्वों ने रात में घुसकर तोड़फोड़ करते हुए स्कूल का पंखा,खिड़की का शीशा,शौचालय आदि क्षतिग्रस्त कर दिया ।शुक्रवार की सुबह घटना की सूचना पुलिस को दी गई ।मौके पर पहुंचकर पुलिस ने घटना की जांच की है ।इस संबंध में विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुनील कुमार ने बताया कि सुबह जब शिक्षक विद्यालय पहुंचे तो विद्यालय का यह दृश्य देखकर हतप्रभ रह गए ।इसके बाद घटना की सूचना डायल 112 एवं सहदेई थाना की पुलिस को दिया ।घटना की सूचना मिलने के बाद डायल 112 की टीम एवं सहदेई थाना अध्यक्ष मौके पर पहुंचे और घटना की जांच की ।विद्यालय में हुई इस घटना को लेकर विद्यालय के एचएम ने पुलिस से असामाजिक तत्वों के विरुद्ध लिखित शिकायत भी की है ।पुलिस दिए गए लिखित शिकायत में कहा है कि शुक्रवार की सुबह विधालय पहुंचने पर देखा कि अज्ञात व्यक्तियों ने विधालय के शौचालय,प्री फेब स्ट्रक्चर,फुल का गमला,बिजली कनेक्शन,बल्व,पंखा आदि सामाग्री को तोड़कर नष्ट कर जैसे-तैसे फेक दिया गया है। इसकी सूचना तत्क्षण प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी सहदेई बुजुर्ग को मोबाईल पर देते हुए विधालय शिक्षा समिति के अध्यक्ष सावित्री देवी,सचिव बबिता देवी एवं स्थानीय ग्रामीणों को दिया गया ।पुलिस के 112 नम्बर पर फोन कर पुलिस को बुलवाया गया ।पुलिया ने घटना स्थल का निरीक्षण किया ।विधालय के प्रथम तल पर इस विधालय के प्री-फेब के साथ-साथ प्राथमिक विद्यालय शेखोपुर कन्या का भी प्री फेब स्ट्रक्चर बना हुआ है ।उसके सामाग्री को भी नष्ट किया गया है ।ऐसा प्रतीत होता है कि गुरूवार की रात में अज्ञात व्यक्तियों ने नजायज तरीके से विधालय में घुसकर सरकारी कार्य में बाधा डालने,बच्चों के पठन-पाठन में अवरोध करने तथा विधालय के शिक्षकों को फंसाने के लिए विधालय के सामाग्री का चोरी एवं उसे नष्ट किया गया है ।।

अवैध बालू उत्खनन एवं पुलिस के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोपी गिरफ्तार

गिद्धौर/जमुई : गिद्धौर थाना पुलिस द्वारा बालू उत्खनन एवं पुलिस के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोप में गिद्धौर प्रखंड अंतर्गत कोल्हुआ गांव निवासी भगवान सिंह के पुत्र ललन सिंह को शनिवार को गिरफ्तार किया गया। जिसके बाद अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया गया। मामले के संदर्भ में गिद्धौर थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि गस्ती के क्रम में गिद्धौर रेलवे स्टेशन रोड के पुलिया के समीप एसआई रंजीत कुमार एवं उनके साथ मौजूद सशस्त्र बलों के साथ उक्त अभियुक्त ने दुर्व्यवहार किया। जिसके बाद पदाधिकारी एवं सशस्त्र बलों द्वारा उसे गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया गया।

सड़क हादसा में एक दर्जन लोग हुए घायल, अस्पताल में भर्ती

शेरघाटी ।चेरकी मार्ग पर एयरपोर्ट के समीप टैंकर के चपेट में आने से टेंपो खेत में पलट गया। जिससे उसे पर सवार आधा दर्जन लोग घायल हो गए। घायलों में कुछ लोगों को अनुमंडलीय अस्पताल शेरघाटी में इलाज के लिए भर्ती कराया गया ।जहां से उनको प्राथमिक इलाज के बाद छुट्टी दे दिया गया।

घायलों की पहचान करमाईन गांव निवासी देवचरण यादव, शेरघाटी कोर्ट में कार्यरत महिला रिंकी कुमारी चंडीस्थान निवासी रेणु देवी के रूप में हुई है। पीड़ित ने घटना को लेकर पुलिस से शिकायत किया है। इधर टेंपो पर सवार देवरतन यादव ने बताया कि हमलोग गया से सत्संग में शामिल होकर लौट रहे थे। इसी दौरान विष्णु बीघा गांव के पास यह हादसा हुई। इधर पुलिस ने जिम्मेवार टैंकर को अपने कब्जे में ले लिया है, और घटना की छानबीन शुरू कर दिया है।

तैयार हो गई गौतम गंभीर की कोचिंग टीम!

टी. दिलीप दोबारा फील्डिंग कोच, सपोर्ट स्टाफ में दो बड़े नाम की एंट्री,

मुंबई (एजेंसी)। अपनी अगुवाई में पहली टीम घोषित करने के बाद अब किसी भी पल हेड कोच गौतम गंभीर के सपोर्ट स्टाफ का ऐलान हो सकता है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने गंभीर के नामों पर मुहर लगा दी है, बस घोषणा का इंतजार है। भारत के पूर्व हरफनमौला खिलाड़ी अभिषेक नायर और नीदरलैंड्स के दिग्गज क्रिकेटर रहे रेयान टेन डोशेट भारतीय टीम के कोचिंग स्टाफ में शामिल होने के लिए तैयार हैं। राहुल द्रविड़ के कार्यकाल में फील्डिंग कोच रहे टी दिलीप अपनी पोजिशन पर बरकरार रहेंगे। दिलीप प्रभावी फील्डिंग कोच के साथ-साथ ड्रेसिंग रूम के माहौल को भी सकारात्मक बनाए रखने के लिए पहचाने जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि वह टीम बॉन्डिंग अभ्यास में बहुत अच्छे हैं, जिसे अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल में खिलाड़ियों के लिए एक अहम जरूरत की तरह देखा जाता है।

बॉलिंग कोच पर फंसा पेंच

हमारे सहयोगी क्रिकबज की रिपोर्ट के मुताबिक अभिषेक नायर और टेन डोशेट दोनों को असिस्टेंट कोच बनाया जाएगा। नए गेंदबाजी कोच को लेकर कुछ अस्पष्टता बनी हुई है, लेकिन साउथ अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज मोर्ने मोर्कल एक मजबूत उम्मीदवार हैं और गौतम गंभीर उनके लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा चुके हैं। अगर सबकुछ ठीक रहा तो मोर्कल ही भारत के अगले बॉलिंग कोच होंगे। मोर्कल कब और कैसे टीम के साथ जुड़ेंगे इस बारे में कोई स्पष्टता नहीं है। मगर क्रिकबज इस बात की पुष्टि करता है कि बीसीसीआई और उनके बीच इस रोल को लेकर बातचीत हुई है।

मैंने तीन मैच में 13 विकेट लिए और क्या चाहते हो...

मोहम्मद शमी ने इशारों ही इशारों में विराट-शास्त्री को सुना दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। जब वर्ल्ड कप इतिहास के सबसे सफल भारतीय बॉलर का जिक्र छिड़ेगा तो मोहम्मद शमी याद आएंगे। किसी भारतीय बॉलर ने वर्ल्ड कप में मोहम्मद शमी से ज्यादा विकेट नहीं लिए हैं। वर्ल्ड कप के इतिहास में शमी के नाम 55 विकेट हैं, जो उन्हें इस टैली में एशिया का तीसरा तो दुनिया का पांचवां सबसे सफल गेंदबाज बनाता है। वह विश्व कप में चार बार पांच विकेट लेने वाले एकमात्र गेंदबाज हैं। फिर भी आईसीसी टूर्नामेंट के पिछले तीन एडिशन में भारत की प्लेइंग इलेवन में उन्हें मुश्किल से जगह दी जाती है। भारत ने पिछले तीन विश्व कप में 28 मैच खेले है, जिसमें शमी को सिर्फ 18 मुकाबले खिलाए गए, जिनमें से भारत ने 15 मैच जीते। एक पॉडकास्ट पर जवाब देते हुए शमी ने कहा कि अच्छे प्रदर्शन के बावजूद उन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है।

इशारों ही इशारों में कोहली-शास्त्री पर निशाना - एक यूट्यूब शो अनप्लग्ड पर बात करते हुए शमी ने माना कि 2019 में टीम मैनेजमेंट के रुख ने उन्हें हैरान कर दिया था। उन्होंने सवाल किया कि हर टीम को अच्छे प्रदर्शन करने वालों की आवश्यकता होती है, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के बावजूद उनके प्रदर्शन को नजरअंदाज क्यों किया गया।

ओलंपिक में भाग लेंगे 117 भारतीय

इस राज्य से इतने खिलाड़ी और इन खेलों में लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में भारत के 117 खिलाड़ी भाग लेंगे। खेल मंत्रालय ने इसके अलावा सहयोगी स्टाफ के 140 सदस्यों को भी मंजूरी दी है जिसमें खेल अधिकारी भी शामिल हैं। सहयोगी स्टाफ के 72 सदस्यों को सरकार के खर्चे पर मंजूरी मिली है। ओलंपिक के लिए जिन खिलाड़ियों ने क्वालीफाई किया था उनमें से केवल गोला फेंक की एथलीट आभा खटुआ का नाम सूची में नहीं है। सूची में सर्वाधिक 29 (11 महिला और 18 पुरुष) खिलाड़ी एथलेटिक्स के हैं। उनके बाद निशानेबाजी (21) और हॉकी (19) का नंबर आता है। टेबल टेनिस में भारत के आठ जबकि बैडमिंटन में दो बार की ओलंपिक पदक विजेता के पीवी सिंधु सहित सात खिलाड़ी भाग लेंगे। कुश्ती (6), तीरंदाजी (6) और मुक्केबाजी (6) में छह-छह खिलाड़ी ओलंपिक में अपनी चुनौती पेश करेंगे। इसके बाद गोल्फ (4), टेनिस (3), तैराकी (2), सेलिंग (2) का नंबर आता है। घुड़सवारी, जूडो, रोइंग और भारोत्तोलन में एक-एक खिलाड़ी भाग लेंगे। निशानेबाजी दल में 11 महिला और 10 पुरुष खिलाड़ी शामिल हैं। टेबल टेनिस में पुरुष और महिला दोनों वर्ग में चार-चार खिलाड़ी शामिल हैं। तोक्यो ओलंपिक की रजत पदक विजेता मीराबाई चानू दल में शामिल एकमात्र भारोत्तोलक हैं। वह महिलाओं के 49 किग्रा वर्ग में चुनौती पेश करेंगी।

खिलाड़ियों की पूरी लिस्ट

पंजाब

- अक्षदीप सिंह, एथलेटिक्स - पुरुषों की 20 किमी रेस वॉक
- तजिंदरपाल सिंह तूर, एथलेटिक्स - पुरुष शॉट पुट
- विकास सिंह, एथलेटिक्स - पुरुषों की 20 किमी रेस वॉक
- गगनजीत भुल्लर, गोल्फ - पुरुष व्यक्तिगत
- गुरजंत सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- हार्दिक सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- हरमनप्रीत सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- जर्मनप्रीत सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- जुगराज सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- कृष्ण बहादुर पाठक, पुरुष हॉकी टीम
- मनदीप सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- मनप्रीत सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- शमशेर सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- सुखजीत सिंह, पुरुष हॉकी टीम
- अंजुम मोदगिल, निशानेबाजी - महिला 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन
- अर्जुन चीमा, निशानेबाजी - पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल, 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम
- सिफ्ट कौर समरा, शूटिंग - महिला 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन
- संदीप सिंह, निशानेबाजी - पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल, 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम
- प्राची चौधरी कलियर, एथलेटिक्स - रिजर्व

चंडीगढ़

- अर्जुन बबुता, निशानेबाजी - पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल, 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम
- विजयवीर सिद्धू, शूटिंग - पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल

राजस्थान

- अनंतजीत सिंह नरुका, निशानेबाजी - पुरुष स्कीट, स्कीट मिश्रित टीम
- माहेश्वरी चौहान, निशानेबाजी - महिला स्कीट, स्कीट मिश्रित टीम

दिल्ली

- अमोज जैकब, एथलेटिक्स - पुरुष 4×400 मीटर रिले
- तूलिका कॉम्प्रा, जूडो - महिला %78 किग्रा
- राजेश्वरी कुमारी, निशानेबाजी - महिला जाल
- मनिका बत्रा, टेबल टेनिस - महिला एकल

बिहार

- श्रेयसी सिंह, शूटिंग - महिला ट्रैप

कर्नाटक

- पूवम्मा एमआर, एथलेटिक्स - महिला 4×400 मीटर रिले
- अश्विनी पोनप्पा, बैडमिंटन - महिला युगल
- अदिति अशोक, गोल्फ - महिला व्यक्तिगत
- श्रीहरि नटराज, तैराकी - पुरुषों की 100 मीटर बैकस्ट्रोक
- धिनिधि देसिंघु, तैराकी - महिला 200 मीटर फ्रीस्टाइल
- अर्चना कामथ, टेबल टेनिस - महिला टीम
- रोहन बोपन्ना, टेनिस - पुरुष युगल

केरल

- अब्दुल्ला अबूबकर, एथलेटिक्स - पुरुष ट्रिपल जंप
- मोहम्मद अजमल, एथलेटिक्स - पुरुषों की 4×400 मीटर रिले
- मोहम्मद अनस, एथलेटिक्स - पुरुषों की 4×400 मीटर रिले
- मिजो चाको, कुरियन - एथलेटिक्स रिजर्व
- पीआर श्रीजेश, पुरुष हॉकी टीम
- एचएस प्रणय, बैडमिंटन - पुरुष एकल

तमिलनाडु

- जेसविन एल्ड्रिन, एथलेटिक्स - पुरुषों की लंबी कूद
- प्रवीण चित्रवेल, एथलेटिक्स - पुरुष ट्रिपल जंप
- राजेश रमेश, एथलेटिक्स - पुरुष 4×400 मीटर रिले
- संतोष तमिलरासन, एथलेटिक्स - पुरुष 4×400 मीटर रिले
- सुभा वेंकटेशन, एथलेटिक्स - महिला 4×400 मीटर रिले
- विथ्या रामराज, एथलेटिक्स - महिला 4×400 मीटर रिले
- नेत्रा कुमानन, नौकायन - महिलाओं की एक व्यक्ति डिंगी
- विष्णु सरवनन, नौकायन - पुरुषों की एक व्यक्ति डिंगी
- एलावेनिल वलारिवन, निशानेबाजी - महिला 10 मीटर एयर राइफल, 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम
- पृथ्वीराज टोंडाइमन, शूटिंग - पुरुष ट्रैप
- साथियान ज्ञानशेखरन, टेबल टेनिस - रिजर्व
- शरथ कमल, टेबल टेनिस - पुरुष एकल, टीम
- एन श्रीराम बालाजी, टेनिस - पुरुष युगल

उत्तर प्रदेश

- अन्नू रानी, एथलेटिक्स - महिला भाला फेंक
- पारुल चौधरी, एथलेटिक्स - महिला 3000 मीटर स्टीपलचेज, महिला 5000 मीटर
- प्रियंका गोस्वामी, एथलेटिक्स - महिलाओं की 20 किमी रेस वॉक, मैराथन रेस वॉक मिक्स्ड रिले
- राम बाबू, एथलेटिक्स - पुरुषों की 20 किमी रेस वॉक
- शुभंकर शर्मा, गोल्फ - पुरुष व्यक्तिगत
- ललित कुमार उपाध्याय, पुरुष हॉकी टीम
- राजकुमार पाल, पुरुष हॉकी टीम

आंध्र प्रदेश

- धीरज बोम्मादेवरा, तीरंदाजी - पुरुष व्यक्तिगत, पुरुष टीम
- ज्योति याराजी, एथलेटिक्स - महिला 100 मीटर बाधा दौड़
- ज्योतिका श्री दांडी, एथलेटिक्स - महिला 4×400 मीटर रिले
- सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी, बैडमिंटन - पुरुष युगल

असम

- लवलीना बोरगोहेन, बॉक्सिंग - महिला 70 किग्रा

गोवा

- तनीषा क्रैस्टो, बैडमिंटन - महिला युगल

गुजरात

- हरमीत देसाई, टेबल टेनिस - पुरुष एकल, टीम
- मानव ठक्कर, टेबल टेनिस - पुरुष टीम

झारखंड

- दीपिका कुमारी, तीरंदाजी - महिला व्यक्तिगत, महिला टीम

हरियाणा

- भजन कौर, तीरंदाजी - महिला व्यक्तिगत, टीम
- किरण पहल, एथलेटिक्स - महिला 400 मीटर, 4×400 मीटर रिले
- नीरज चोपड़ा, एथलेटिक्स - पुरुषों की भाला फेंक
- अमित पंघाल, मुक्केबाजी - पुरुष 51 किग्रा
- जैस्मीन लेम्बोरिया, बॉक्सिंग - महिला 57 किग्रा
- निशांत देव, मुक्केबाजी - पुरुष 71 किग्रा
- प्रीति पवार, मुक्केबाजी - महिला 54 किग्रा
- दीक्षा डागर, गोल्फ - महिला व्यक्तिगत
- संजय, हॉकी - पुरुष हॉकी टीम
- सुमित, हॉकी - पुरुष हॉकी टीम
- बलराज पंवार, - रोइंग - पुरुष एकल स्कल्स
- अनीश भानवाला, शूटिंग - पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल
- मनु भाकर, निशानेबाजी - महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल, 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम, महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल
- रमिता जिंदल, निशानेबाजी - महिला 10 मीटर एयर राइफल, 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम
- रायजा ढिल्लों, शूटिंग - महिला स्कीट
- रिदम सांगवान, शूटिंग - महिला 10 मीटर एयर पिस्टल, 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम
- सरबजोत सिंह, निशानेबाजी - पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल, 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम
- सुमित नागल, टेनिस - पुरुष एकल
- अमन सहरावत, कुश्ती - पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किग्रा
- अंशु मलिक, कुश्ती - महिला 57 किग्रा
- अंतिम पंघाल, कुश्ती - महिला 53 किग्रा
- निशा दहिया, कुश्ती - महिला 68 किग्रा
- रीतिका हुड्डा, कुश्ती - महिला 76 किग्रा
- विनेश फोगाट, कुश्ती - महिला 50 किग्रा

मध्य प्रदेश

- विवेक सागर प्रसाद, पुरुष हॉकी टीम
- ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, निशानेबाजी - पुरुषों की 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन

महाराष्ट्र

- प्रवीण जाधव, तीरंदाजी - पुरुष व्यक्तिगत, पुरुष टीम
- अविनाश साबले, एथलेटिक्स - पुरुष 3000 मीटर स्टीपलचेज
- सर्वेश कुशारे, एथलेटिक्स - पुरुष ऊंची कूद
- चिराग शेट्टी, बैडमिंटन - पुरुष युगल
- स्वप्निल कुसाले, शूटिंग - पुरुषों की 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन

मणिपुर

- मीराबाई चानू, भारोत्तोलन - महिला 49 किग्रा
- नीलकांत शर्मा, पुरुष हॉकी टीम - रिजर्व

ओडिशा

- अमित रोहिदास, पुरुष हॉकी टीम
- किशोर जेना, एथलेटिक्स - पुरुषों की भाला फेंक

सिक्किम

- तरुणदीप राय, तीरंदाजी - पुरुष व्यक्तिगत, पुरुष टीम

तेलंगाना

- पीवी सिंधु, बैडमिंटन - महिला एकल
- निकहत जरीन, बॉक्सिंग - महिला 50 किग्रा
- ईशा सिंह, निशानेबाजी - महिला 25 मीटर पिस्टल
- श्रीजा अकुला, टेबल टेनिस - महिला एकल, टीम

उत्तराखंड

- अंकिता ध्यानी, एथलेटिक्स - महिला 5000 मीटर
- परमजीत बिष्ट, एथलेटिक्स - पुरुषों की 20 किमी रेस वॉक
- सूरज पंवार, एथलेटिक्स - मैराथन रेस वॉक मिक्स्ड रिले
- लक्ष्य सेन, बैडमिंटन - पुरुष एकल

पश्चिम बंगाल

- अंकिता भक्त, तीरंदाजी - महिला व्यक्तिगत
- अनुष अग्रवाल, घुड़सवारी - ड्रेसेज इवेंट
- आयहिका मुखर्जी, टेबल टेनिस - रिजर्व

महिला एशिया कप 2024

पहले पाकिस्तान को हराया अब यूएई की बारी

● सेमीफाइनल में पहुंचने के करीब भारतीय महिला टीम

दाम्बुला (एजेंसी)। आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारतीय महिला क्रिकेट टीम रविवार को संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ जीत दर्ज करके महिला एशिया कप सेमीफाइनल में जगह पक्की करने उतरेगी। गत चैंपियन भारत ने शनिवार को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को सात विकेट से हराया। यूएई को हरमनप्रीत कौर की टीम को हराने के लिए चमत्कारिक प्रदर्शन करना होगा। भारत के फिलहाल दो अंक और प्लस 2.29 का नेट रनरेट है और अमीरात को हराने से उसके चार अंक हो जाएंगे। पाकिस्तान के खिलाफ दीप्ति शर्मा, रेणुका सिंह और पूजा वस्त्राकर ने अच्छी गेंदबाजी की। टीम प्रबंधन को बायें हाथ की स्पिनर राधा यादव से भी अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू श्रृंखला के जरिए वापसी की है।

रेणुका ने मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा, यह अच्छा स्पैल था और मौसम से भी मदद मिली। नेट पर जिस तरह से मैं अभ्यास कर रही हूं, मैच में भी उसे दोहरा सकी।' भारतीय बल्लेबाजों ने आक्रामक प्रदर्शन करते हुए 35 गेंद बाकी रहते जीत दर्ज की। सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना ने 9.3 ओवर में 85 रन की साझेदारी की। इसके बाद भारत ने तीन विकेट जल्दी गंवा दिए। भारतीय खेमा यूएई के खिलाफ मध्यक्रम के बल्लेबाजों से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद कर रहा होगा।

एशिया कप बांग्लादेश में अक्टूबर में होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारी के लिए अहम माना जा रहा है। रेणुका ने कहा, एशिया कप महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बाद टी-20 विश्व कप से पहले ज्यादा मैच नहीं खेलने हैं। बांग्लादेश में भी हालात ऐसे ही होंगे लिहाजा हमें इस टूर्नामेंट से काफी मदद मिलेगी।' दूसरे मैच में पाकिस्तान का सामना नेपाल से होगा।

भारत का स्क्वॉड - हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, जेमिमा रौड्रिग्स, रिचा घोष, उमा छेत्री, पूजा वस्त्राकर, दीप्ति शर्मा, अरूंधति रेड्डी, रेणुका सिंह, डी हेमलता, आशा शोभना, राधा यादव, श्रेयांका पाटिल, संजीवन साजना।

यूएई का स्क्वॉड- एशा रोहित ओझा (कप्तान), कविशा कुमारी, रितिका रजत, समायरा डी, लावण्या केनी, एमिली थॉमस, हीना होचंदानी, महक ठाकुर, इंदुजा नंदकुमार, रिनिता रजत, खुशी मोहन शर्मा, रिशिता रजत, सुरक्षा कोट्टे, टी सतीश, वैष्णवी महेश

गेंदबाजों और सलामी बल्लेबाजों ने अपना काम बखूबी किया : हरमनप्रीत

दाम्बुला (एजेंसी)। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने शुक्रवार को यहां महिला टी20 एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के पहले मुकाबले में पाकिस्तान को हराने के बाद कहा कि उनके गेंदबाजों और सलामी बल्लेबाजों ने अपना काम बखूबी किया। भारत ने गेंदबाजों और सलामी बल्लेबाजों की बदौलत पाकिस्तानी टीम को सात विकेट से हरा दिया। हरमनप्रीत ने मैच के बाद कहा कि हमारी गेंदबाजों और सलामी बल्लेबाजों ने अपना काम किया। पहला मैच हमेशा ही दबाव भरा होता है क?योंकि आपको लय बनानी होती है। हमारी पूरी टीम अच?छा खेली। उन्होंने कहा कि जब हम गेंदबाजी कर रहे थे तो हम जल?दी विकेट लेने के बारे में बात कर रहे थे। बल?लेबाजी में श्रेय स?मृति और शेफाली को जाता है। हम इसी तरह से निर्भीक क्रिकेट खेलना चाहते हैं। अनुभवी गेंदबाज दीप्ति शर्मा 'प?लेयर ऑफ द मैच' रहीं जिन्होंने तीन विकेट झटके। उन्होंने कहा कि योजना के मुताबिक गेंदबाजी कर पाई जिससे मैं अच्छा महसूस कर रही हूं।

अरे, मेरी एक पत्नी और बच्चे हैं घर- मार्क वुड के लीथल बाऊंसर पर बोले केवम हॉज

नॉटिंघम (एजेंसी)। वेस्टइंडीज ने दूसरे टेस्ट में केवम हॉज के शतक और एलिक अथानाजे के साथ 175 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी के साथ

इंग्लैंड को सख्त चुनौती दे दी। इंग्लैंड ने पहली पारी में 416 रन बनाए थे जिसके जवाब में विंडीज ने दूसरे दिन के अंत तक 5 विकेट पर 351 रन बना लिए थे। विंडीज की इस बेहतरीन पारी में केवम हॉज का बड़ा योगदान रहा। इस दौरन केवम ने कप्तान क्रैग ब्रैथवेट के साथ बेहतरीन तामलेल पर बात की। उन्होंने कहा कि एक ही फ्रेंचाइजी के लिए खेलते समय उनमें यह तालमेल बैठा, जिसका उन्हें फायदा हो रहा है।

हॉज ने दूसरे दिन का खेल खत्म होने के बाद कहा कि हम हमेशा एक साथ अच्छी बल्लेबाजी करते हैं, घर में एक ही फ्रेंचाइजी के लिए खेलते हैं, हमने कई बड़ी साझेदारियां की हैं। वह मुझसे ज्यादा आक्रामक है, मैं अधिक संचायक हूं, इसलिए मैं रडार के नीचे जाता हूं और अपना काम चुपचाप करता हूं। विकेट पर उनके साथ समय बिताना हमेशा अच्छा होता है। अपना केवल चौथा टेस्ट मैच खेलते हुए हॉज ने अपने पहले टेस्ट शतक पर कहा कि यह सपना सच होने जैसा है, आप एक युवा खिलाड़ी के रूप में खेल खेलते हैं, यह कुछ ऐसा है जो आप करना चाहते हैं, खासकर इंग्लैंड जैसी टीम के खिलाफ। मैं वास्तव में इससे खुश और संतुष्ट हूं।

हॉज की पारी का मुख्य आकर्षण उनकी इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड से जोरदार लड़ाई थी। वुड जोकि टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज ओवर फेंकने वाले प्लेयर भी बन गए हैं, कई बाऊंसर डालकर हॉज की निरंतरता तोड़ने की कोशिश की थी।

संक्षिप्त समाचार

गुरदासपुर- नहाने गए सरपंच को डूबता देख दो दोस्तों ने लगाई छलांग, तीनों डूबे

गुरदासपुर, एजेंसी। पंजाब के बटाला स्थित गांव अलीवाल की अप्परबारी दुआब नहर में सरपंच समेत तीन युवक डूब गए। इनमें से एक का शव बरामद कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि गांव भरथवाल के सरपंच रणबीर सिंह शुक्रवार को नहर में नहाने के लिए गए थे। पानी का बहाव तेज होने के चलते वह डूबने लगे, सरपंच को बचाने के लिए उनके दो साथियों मक्खन उर्फ मखु और करतार सिंह ने नहर में छलांग लगा दी लेकिन पानी के साथ वो भी बह गए। जब आसपास के लोगों ने तीनों को डूबते हुए देखा तो जिला प्रशासन को सूचित किया। प्रशासन ने जल्द से जल्द पानी के बहाव को रोका और गोताखोर की मदद से सरपंच समेत तीनों की तलाश शुरू कर दी। बताया जा रहा है कि शनिवार सुबह एक व्यक्ति मक्खन सिंह के शव को बरामद कर लिया गया है और बाकियों की तलाश जारी है। वहीं मृतक के परिजनों ने कहा कि यह तीनों घर से नहाने के लिए गए थे, लेकिन पानी का बहाव तेज होने के चलते तीनों पानी में डूब गए। उन्होंने बताया कि साथियों ने अपनी पगड़ी उतार कर सरपंच को बचाने की कोशिश की, लेकिन जब पगड़ी से बात नहीं बनी तो उन्होंने भी पानी के तेज बहाव में छलांग लगा दी और वह भी डूब गए।

कोर्ट ने स्वामी प्रसाद मौर्य व उनकी बेटी संघमित्रा को घोषित किया फरार

लखनऊ, एजेंसी। एमपी एमएलए कोर्ट ने पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य और उनकी पूर्व सांसद बेटी संघमित्रा को फरार घोषित कर दिया है। यह आदेश एमपी-एमएलए कोर्ट के विशेष एसीजेएम आलोक वर्मा ने जारी किया। इसके पहले दोनों के खिलाफ इस साल अप्रैल में गैर जमानतीय वारंट जारी किया गया था। मामले में हाईकोर्ट भी बाप-बेटी को राहत देने से इनकार कर चुका है। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि आरोपी कोर्ट में हाजिर होने से बच रहे हैं। इसलिए उनके खिलाफ धारा-82 की कार्यवाही की जाती है। अधिवक्ता ने बताया बिना तलाक लिए धोखाधड़ी कर दूसरी शादी करने की आरोपी संघमित्रा मौर्य और वादी के साथ मारपीट, गाली गलौज और जानमाल की धमकी व साजिश रचने के आरोपी स्वामी प्रसाद मौर्य, नीरज तिवारी, सूर्य प्रकाश शुक्ला व रितिक सिंह के कोर्ट में हाजिर न होने पर कोर्ट ने सभी आरोपियों को फरार घोषित किया है। बता दें कि आरोप है कि परिवादी दीपक कुमार और संघमित्रा वर्ष 2016 से लिव-इन रिलेशन में रह रहे थे। संघमित्रा और उनके पिता स्वामी प्रसाद मौर्य ने परिवादी को बताया कि संघमित्रा की पूर्व शादी से तलाक हो गया है। लिहाजा परिवादी ने तीन जनवरी 2019 को संघमित्रा से शादी कर लिया। संघमित्रा ने 2019 के चुनाव में शपथपत्र देकर खुद को अविवाहित बताया, जबकि बाद में वादी को पता चला कि संघमित्रा का मई 2021 में तलाक हुआ था। आगे कहा गया कि जब वादी ने वर्ष 2021 में रीति-रिवाज के साथ विवाह करने के लिए कहा, तो स्वामी प्रसाद मौर्य ने वादी के ऊपर कई बार जानलेवा हमला कराया।

36.50 करोड़ पौधा रोप उत्तर प्रदेश बनाएगा नया रिकॉर्ड

लखनऊ , एजेंसी। हरे भरे उत्तर प्रदेश के संकल्प के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुकरैल नदी के तट पर पौधा रोपण करेंगे। पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ अभियान के तहत सीएम पीपल, तिलखान और बरगद प्रजाति के पौधे लगाएंगे। यहां करीब 10 हजार पौधे लगाए जाएंगे। बता दें, प्रदेश में आज 36.50 करोड़ पौधे रोपने का रिकॉर्ड बनेगा। पौधरोपण जन अभियान-2024 के तहत इस बार एक पेड़ मां के नाम लगाने का आह्वान किया गया है। प्रदेश सरकार की आधिकारिक साइट पर हर पल रोपे जा रहे पौधों की संख्या को अपडेट भी किया जा रहा है।सीएम योगी ने इसे लेकर एक ट्वीट भी किया। भारतीय मनीषा ने हमें माता भूमि-पुत्रोऽहं पृथिव्या- का संदेश दिया है। हमारी परंपरा पेड़-पौधों को केवल जीव सृष्टि का हिस्सा नहीं मानती, बल्कि उनमें साक्षात ईश्वर का दर्शन करती है। साकार करने जा रहा है। उन्होंने इसे पीएम के एक पेड़ मां के नाम अभियान से प्रेरित बताया। आगे लिखा, आदरणीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान एक पेड़ मां के नाम से जुड़कर वृक्षारोपण महाभियान में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

राजस्थान में स्वास्थ्य विभाग में 50 हजार पदों पर भर्तियां होंगी

जयपुर, एजेंसी।
राजस्थान में स्वास्थ्य विभाग में बंपर भर्तियां होंगी। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि राज्य सरकार जनस्वास्थ्य के प्रति गंभीर है और इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। चिकित्सा संस्थानों में मानव संसाधन की कमी पूरी करने के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा 50 हजार से अधिक पदों पर भर्तियां की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि परिवर्तित बजट में कुल बजट का 8.26 प्रतिशत अर्थात् 27 हजार 660 करोड़ रूपये का प्रावधान केवल स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए किया गया है, जबकि राष्ट्रीय औसत 6.18 प्रतिशत है। स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए यह अब तक का सर्वाधिक बजट प्रावधान है। श्री खींवसर ने बताया कि पूर्ववर्ती सरकार ने अपने अंतिम बजट में महज 23 हजार 972 करोड़ रुपये का प्रावधान स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए किया था।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री शुक्रवार को विधानसभा में मांग संख्या -27 (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग) एवं मांग संख्या -28 (चिकित्सा शिक्षा विभाग) की अनुदान मांगों पर हुई बहस का जवाब दे रहे थे। चर्चा के बाद सदन ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की 1 खरब 18 अरब 18 करोड़ 31 लाख 78 हजार रूपये एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की 54 अरब 55 करोड़ 03 लाख 08 हजार रूपये की अनुदान मांगें ध्वनिमत से पारित कर दीं।

खींवसर ने कहा कि चिकित्सा विभाग ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट, हॉस्पिटल केयरटेकर, नर्सिंग ऑफिसर, महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता, लैब टेक्नीशियन, सहायक

रेडियोग्राफर, नेत्र सहायक, ईसीजी टेक्नीशियन, डेन्टल टेक्नीशियन एवं फार्मासिस्ट के पदों पर भर्ती प्रक्रियाधीन है। विगत 7 माह में कुल 3182 पैरामेडिकल एवं मंत्रालय कार्मिकों को नियुक्ति दी जा चुकी है। उन्होंने कहा कि कई वर्षों से लम्बित फार्मासिस्ट भर्ती के कार्य को आगे बढ़ाते हुए 2543 अभ्यर्थियों की अंतरिम वरीयता सूची जारी कर दी गई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत संविदा महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता, संविदा नर्स एवं कम्यूनिटी हैल्थ ऑफिसर के रिक्त कुल 10 हजार 657 पदों के परिणाम घोषित किये जा चुके हैं। इन्हें शीघ्र ही नियुक्ति दी जाएगी। राजमेस के अधीन संचालित मेडिकल कॉलेजों में चिकित्सक शिक्षकों के 1460 पदों पर भर्ती की जाएगी। साथ ही, इस वर्ष बजट में 1500 चिकित्साधिकारियों तथा 4 हजार नर्सिंगकर्मियों के नये पद सृजित कर भर्ती की घोषणा की गई है। साथ ही, अन्य पदों पर भर्तियां करते हुए अस्पतालों में मानव संसाधन की कमी दूर की जाएगी।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र में एक मॉडल सीएचसी स्थापित की जाएगी। साथ ही, इस वर्ष 20 जिला चिकित्सालय, 13 जिला चिकित्सालय में शैय्या वृद्धि, 7 सेटेलाइट चिकित्सालय, 56 उप जिला चिकित्सालय, 28 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 463 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 2292 उप स्वास्थ्य केन्द्र, 18 जिला औषधि भण्डार, 16 एएनएम ट्रेनिंग सेन्टर, 10 ट्रोमा सेन्टर सहित क्रिटिकल केयर ब्लॉक आईपीएचएल एवं बीपीएचयू आदि के भवन बनाये जाएंगे। साथ ही, चिकित्सा संस्थानों के उचित रख-रखाव पर 150 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे।

खींवसर ने बताया कि चिकित्सा विभाग द्वारा 25 एडवांस लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस एवं 39 बेसिक लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस खरीदी जा रही हैं। उन्होंने बताया कि एसएमएस अस्पताल सहित अन्य अस्पतालों में मरीज भार कम करने की दृष्टि से सांगानेर में 150 बेड का जिला अस्पताल बनाया जा रहा है। साथ ही, झोटवाड़ा एवं विद्याधर नगर में सेटेलाइट हॉस्पिटल बनाये जाएंगे। चिकित्सा मंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने आईपीडी टावर की अधूरी प्लानिंग की और पर्याप्त वित्तीय प्रावधान नहीं किए। इसके चलते 14 मंजिल तक ही इसका काम हो सका। इसमें पार्किंग का समुचित प्रावधान भी नहीं रखा गया। राज्य सरकार 24 मंजिल तक इसके निर्माण को पूरा करेगी और इसमें 1200 वाहनों की पार्किंग एवं स्काई वॉक विकसित किया जाएगा। यह देश के बेहतरीन चिकित्सा संस्थानों में शामिल होगा। इसके लिए 200 करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रावधान कर दिया गया है।

खींवसर ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने आरयूएचएस अस्पताल को क्रियाशील करने के लिए कोई कदम नहीं उठाए। अब राज्य सरकार ने एसएमएस मेडिकल कॉलेज से 16 चिकित्सकों को आरयूएचएस चिकित्सालय में लगाया है। आरयूएचएस में सुपर स्पेशलिटी सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए इस वर्ष के बजट में 200 करोड़ रुपये व्यय किये जाने की घोषणा भी की गई है। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के समय अंग प्रत्यारोपण में फर्जीवाड़ा हुआ। राज्य सरकार ने इस मामले में दोषियों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई करते हुए अंगदान एवं अंग प्रत्यारोपण को मजबूती से आगे बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। खींवसर ने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा में राजस्थान ने कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उन्होंने कहा कि चिकित्सा विभाग ने 100 दिवसीय कार्ययोजना में कई कार्य पूर्ण किये हैं। बुजुर्गों को एक ही स्थान पर जांच, दवा, उपचार आदि की सभी सुविधाएं देने के लिए विशेष रामाश्रय वार्डों की शुरूआत की गई है। प्रदेश के 49 जिला अस्पतालों में यह वार्ड बनाकर क्रियाशील कर दिए गये हैं। करीब 11 हजार 500 चिकित्सा संस्थानों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर के रूप में परिवर्तित किया जा चुका है। आयुष्मान आरोग्य मंदिर में स्वास्थ्य सेवाओं का दायरा बढ़ाते हुए मेन्टल हैल्थ, ईएनटी, ऑफ्थेल्मिक, जेरियाट्रिक एवं पेलियेटिव स्वास्थ्य सेवाओं को शुरू किया जा रहा है।

अडानी ग्रुप को 280 करोड़ का झटका, हाई कोर्ट ने आदेश पलटा, सुक्खू सरकार को बड़ी राहत

शिमला, एजेंसी।
हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट की एक खंडपीठ ने गुरुवार को अडानी पावर लिमिटेड को 280 करोड़ रुपये की प्रीमियम राशि वापस करने के एकल पीठ के फैसले को पलट दिया। इस फैसले से हिमाचल प्रदेश की सुक्खू सरकार को बड़ी राहत मिली है। हाई कोर्ट के जस्टिस विवेक सिंह ठाकुर और जस्टिस बिपिन चंद्र नेगी की खंडपीठ ने 2022 में एकल पीठ के फैसले के खिलाफ हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए यह फैसला सुनाया।

मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली राज्य सरकार को राहत देते हुए हिमाचल हाई कोर्ट की एक खंडपीठ ने एकल पीठ के फैसले को पलट दिया। 2022 में एकल पीठ ने किन्नौर जिले में 969 मेगावाट की जंगी थोपन पावर पनबिजली परियोजना से जुड़े अदानी पावर लिमिटेड को 280 करोड़ रुपये की प्रीमियम राशि वापस करने का आदेश दिया था। खंडपीठ ने कहा कि अडानी समूह इसका हकदार नहीं है।

हिमाचल प्रदेश के महाधिवक्ता अनूप कुमार रतन ने कहा कि हाई कोर्ट की एक खंडपीठ ने गुरुवार को एकल पीठ के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें राज्य सरकार को अडानी पावर लिमिटेड को 280 करोड़ रुपये का प्रीमियम भुगतान करने को कहा गया था। हमने एकल पीठ के आदेश को खंडपीठ के समक्ष चुनौती दी, जिसने राज्य सरकार के पक्ष में फैसला सुनाया।

महाधिवक्ता ने बताया कि खंडपीठ ने अपने फैसले में यह भी टिप्पणी की कि परियोजना को खरीदने के लिए राज्य सरकार के समक्ष गलत तथ्य पेश किए गए। फैसले में कहा गया है कि अडानी समूह ने पिछले दरवाजे से परियोजना में निवेश किया, जो परियोजना की समझौते की शर्तों के खिलाफ था। इसलिए अडानी ग्रुप को प्रीमियम राशि वापस नहीं की जाएगी। सरकार ने ब्रैकल कंपनी के साथ प्रोजेक्ट एग्रीमेंट (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन कंपनी ने फर्जी दस्तावेजों के जरिए फर्जी तरीके से प्रोजेक्ट हासिल कर लिया, जो एग्रीमेंट के खिलाफ पाया गया। इसके बाद सरकार की सहमति के बिना ब्रैकल कंपनी ने अडानी ग्रुप को प्रोजेक्ट का सदस्य बना लिया। इस प्रकार ब्रैकेल कंपनी भी प्रीमियम राशि की हकदार नहीं है। अडानी पावर लिमिटेड ने भारतीय अनुबंध अधिनियम की धारा 65 और 70 के तहत राज्य सरकार से मुआवजे की मांग की थी। कोर्ट ने पाया कि अडानी और राज्य के बीच कोई कानूनी संबंध नहीं था, जो धारा 70 के तहत ऐसे दावों के लिए आवश्यक है। कोर्ट ने इस बात पर जोर दिया कि अडानी के ब्रैकेल को भुगतान से संबंधित लेन-देन राज्य से मुआवजे के हकदार होने का आधार स्थापित नहीं करता है।

महाराष्ट्र से जम्मू-कश्मीर तक 4 राज्यों में चुनावी रणनीति को लेकर उलझी भाजपा, आरएसएस से मदद की दरकार

नईदिल्ली, एजेंसी।
लोकसभा चुनाव के झटके के बाद भाजपा की आगामी चार विधानसभा चुनाव के लिए रणनीति को लेकर उलझनें बढ़ गई है। पार्टी आक्रामक और संतुलित चुनाव अभियान को लेकर पसोपेश में है। एक वर्ग का मानना है कि इस समय विपक्षी के दबाव में आने के बजाय पार्टी को पूर्व की तरह अपना आक्रामक अभियान ही जारी रखना चाहिए। हालांकि, इस रणनीति से नुकसान होने की भी आशंका है, क्योंकि विपक्षी इंडिया गठबंधन के दलों में विरोधाभास के बाबजूद भाजपा विरोधी सुर एक जैसे हैं। हरियाणा, महाराष्ट्र, झारखंड और जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनाव के लिए अपने प्रभारी काफी पहले तैनात कर दिए थे। इन नेताओं ने राज्यों में जाकर शुरुआती दौर की बैठक भी की है। सूत्रों के अनुसार, चुनाव प्रभारियों की शुरुआती रिपोर्ट बहुत अच्छी नहीं है। सभी राज्यों में संगठन को लेकर दिक्कतें बढ़ी हुई है। ऐसे में विपक्षी चुनौती का सामना करना काफी

मुश्किलों भरा होगा। यही वजह है कि पार्टी नेतृत्व इस समय संगठनात्मक समस्याओं को सुलझाने में जुटा हुआ है ताकि चुनाव अभियान को गति दी जा सके। पार्टी के सामने एक बड़ा मुद्दा चुनाव अभियान को लेकर भी है। लोकसभा चुनाव में और उसके पहले के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने विपक्ष के खिलाफ बेहद हमलावर तरीके से आक्रामक अभियान चलाया था। इसका उसे फायदा भी हुआ था, लेकिन लोकसभा में कई राज्यों में उसे इसका नुकसान भी उठाना पड़ा है। खासकर जहां संगठन में नाराजगी थी। झारखंड और महाराष्ट्र में भी संगठन में कुछ समस्याएं रही हैं। बावजूद सामाजिक समीकरण सुधार नहीं पा रहे हैं, उल्टे बिगड़ने की आशंका है। सूत्रों के अनुसार लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली मजबूती से भी भाजपा के सामाजिक समीकरण के प्रभावित होने की आशंका है। खासकर, ब्राह्मण और दलित समुदाय को लेकर पार्टी सशंकित है। ये कांग्रेस का साथ दे सकते हैं। महाराष्ट्र में तो भाजपा का अपना गठबंधन, विपक्षी गठबंधन के सामने लोकसभा चुनाव में भी काफी कमजोर पड़ा था। अब विधानसभा चुनाव में भी यही समस्या सामने आ रही है। ऐसे में पार्टी के लिए अपने गठबंधन के मुख्यमंत्री के चेहरे को जनता के सामने पेश करने में भी दिक्कत आ रही है, क्योंकि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में जाने पर एनडीए को बहुत बड़ी सफलता मिलने की संभावना नहीं है। भाजपा के भीतर भी उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को आगे रखने की मांग बढ़ रही है। अजित पवार पर तो फिलहाल भरोसा ही नहीं किया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर में घाटी में भाजपा की समस्याएं बरकरार हैं। अभी यह तय नहीं है कि पार्टी घाटी की सीटों पर किस तरह चुनाव लड़ेगी। अपने उम्मीदवार उतारेगी या कुछ निर्दलीयों को समर्थन देगी। जम्मू क्षेत्र के लिए पार्टी की तैयारी तेज हो चुकी और वहां पर पार्टी को बड़ी सफलता मिलने की भी उम्मीद है।

पृथ्वी से टकरा सकता है एक स्टेरॉयड

वाशिंगटन, एजेंसी। नासा ने एक चौंकाने वाली जानकारी दी है, जिसके चलते नासा ने पूरी पृथ्वी के लिए अलर्ट जारी किया है। इस अलर्ट के मुताबिक, जल्द ही एक बड़ा स्टेरॉयड पृथ्वी से टकरा सकता है और पृथ्वी पर भारी हलचल पैदा कर सकता है। इस स्टेरॉयड का नाम 'अपोलो एमजी 1' है। इसकी लंबाई बोइंग 767 विमान के बराबर है और इसका वजन कई गुना ज्यादा है। नासा के मुताबिक, करीब 220 फीट लंबा यह स्टेरॉयड 73 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से अंतरिक्ष में घूम रहा है और पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है।

नासा के मुताबिक, यह स्टेरॉयड 21 जुलाई 2024 को पृथ्वी के पास से गुजर सकता है। भारतीय मानक समय के मुताबिक यह घटना 22 जुलाई को सुबह 3:10 बजे होने की संभावना है। यह स्टेरॉयड पृथ्वी से लगभग 4.2 मिलियन किलोमीटर की दूरी से पृथ्वी की ओर आ रहा है। इस स्टेरॉयड का नाम अपोलो अंतरिक्ष यान के नाम पर रखा गया है। इस स्टेरॉयड के विखंडन से बना एक स्टेरॉयड पृथ्वी से टकरा सकता है और

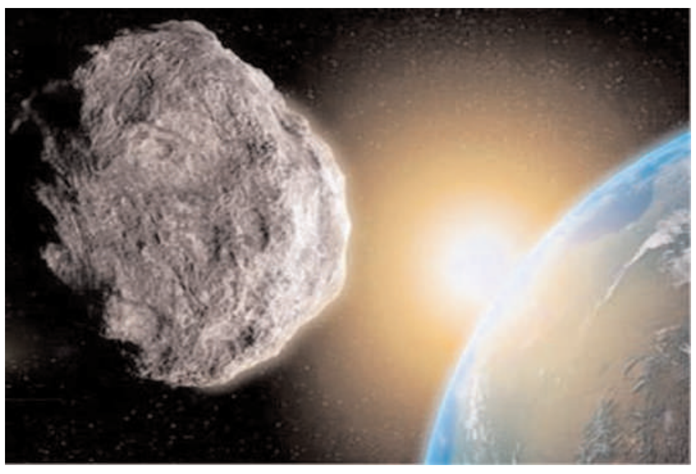

तबाही मचा सकता है, लेकिन यह पता नहीं चल पाया है कि यह धरती के किस हिस्से से टकराएगा। नासा के वैज्ञानिकों का कहना है कि जब स्टेरॉयड पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं, तो वे 2013 में चेल्याबिंस्क आग जैसी तबाही मचाते हैं। 15 फरवरी, 2013 को रूस के दक्षिणी यूराल क्षेत्र में स्थित यह शहर एक बड़े उल्कापिंड की चपेट में आ गया और आग लग गई। हालांकि अपोलो एमजी1 के पृथ्वी से टकराने की संभावना कम है, लेकिन नासा के वैज्ञानिक इसकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रख रहे हैं। नासा के वैज्ञानिक स्टेरॉयड को ट्रैक करने के लिए रडार सिस्टम और दूरबीनों का उपयोग कर रहे हैं। इस स्टेरॉयड की गति को देखते हुए इसका रास्ता बदलने की संभावना है।

चीन में भारी बारिश के बीच भरभराकर गिर गया पुल, कम से कम 11 की मौत

बीजिंग, एजेंसी। अपनी उन्नत तकनीक और मॉडर्न इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए मशहूर चीन में एक पुल ढह गया और 11 लोगों की मौत हो गई। उत्तर पश्चिमी चीन के शानक्सी प्रांत में एक राजमार्ग पुल के आंशिक रूप से ढह जाने से शनिवार सुबह तक ग्यारह लोगों की मौत की पुष्टि हो गई है। स्थानीय अधिकारियों ने यह जानकारी दी। प्रांतीय प्रचार विभाग के अनुसार शांग्लुओ शहर के झाशुई काउंटी में स्थित यह पुल शुक्रवार को अचानक भारी बारिश और बाढ़ के कारण रात लगभग 8:40 बजे ढह गया। शनिवार सुबह 10 बजे (स्थानीय समय) तक बचाव दल ने नदी में गिरे पांच वाहनों को बरामद कर लिया था। बचाव कार्य जारी है। बता दें कि इन दिनों चीन के कई हिस्सों में भारी बारिश हो रही है। भारत में भी मॉनसूनी बारिश की वजह से कई जगहों पर पुल गिरे हैं। दो दिन पहले ही उत्तराखंड के ऋषिकेश-बद्रीनाथ राजमार्ग पर रूद्रप्रयाग के पास एक निर्माणाधीन सिग्नेचर ब्रिज का एक हिस्सा गिर गए। गनीमत यह थी कि उस वक्त कोई भी मजदूर साइट पर नहीं था। ऐसे में किसी की जान इस हादसे में नहीं गई है। बता दें कि नरकोटा में 66 करोड़ की लागत से 110 मीटर लंबा सिग्नेचर ब्रिज बनाया जा रहा है। 2021 से

ही इस प्रोजेक्ट पर काम जारी है। वहीं 2022 में इस पुल का बेस गिर गया था जिसमें तीन लोगों की जान चली गई थी। बिहार की बात करें तो भारी बारिश के बीच कई पुल गिर चुके हैं। जून के महीने में 11 दिन के अंदर ही बिहार में पांच पुल गिर गए। 28 जून को गंगा नदी पर बन रहे पुल का एक हिस्सा गिर गए। पुल गिरने पर सियासत भी हो रही है। पुल गिरने से आरजेडी को हमला करने का मौका मिल रहा है। ज्यादातर प्रोजेक्ट नीतीश की सरकार में ही मंजूर हुए हैं। वहीं नीतीश कुमार इन दिनों एनडीए में हैं। ऐसे में तेजस्वी यादव ने कहा कि पीएम मोदी की रहनुमाई में सीएम नीतीश कुमार की अगुआई में बिहार की डबल इंजन वालीसरकार में पुलों के गिरने से जनता के करोड़ों रुपये स्वाहा हो रहे हैं।

राष्ट्रपति बनने से पहले ट्रंप ने हमास को दी धमकी, मिला करारा जवाब- इजरायल को अशुभ विनाश से बचाओ

वाशिंगटन, एजेंसी।
इजरायल-हमास युद्ध के बीच राष्ट्रपति बनने से पहले ही डोनाल्ड ट्रंप ने हमास को धमकियां देना शुरू कर दी हैं। रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार ट्रंप ने कहा है कि हमास अगर उनके राष्ट्रपति बनने से पहले बंधकों को नहीं लौटाता तो उसे बड़ी कीमत चुकानी होगी। गुरुवार को रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में बोलते हुए पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने फिलिस्तीनी संगठन हमास को धमकाते हुए कहा कि अगर उनके राष्ट्रपति बनने से पहले बंधकों को नहीं छोड़ा तो उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी । इस बीच फिलिस्तीनी हमास आंदोलन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने न्यूजवीक के साथ साझा की टिप्पणियों में ट्रंप को कुछ अनचाही सलाह दी है, क्योंकि रिपब्लिकन उम्मीदवार व्हाइट हाउस में अपने

डेमोक्रेटिक प्रतिद्वंद्वी से अलग होने की कोशिश कर रहे हैं।

ट्रंप ने गुरुवार को रिपब्लिक नेशनल कन्वेंशन में अपनी पार्टी के नामांकन को स्वीकार करने के बाद दिए अपने 90 मिनट के भाषण में गाजा में चल रहे युद्ध का जिक्र किया और कभी भी हमास का सीधे तौर पर जिक्र नहीं किया, लेकिन उन्होंने अनुमानित आठ अमेरिकी बंधकों के भाग्य के बारे में पूरी दुनिया को एक अशुभ चेतावनी जारी की, जिनके बारे में माना जाता है कि वे फिलिस्तीनी मिलिशिया द्वारा पकड़े गए हैं। ट्रंप ने कहा ,हम अपने बंधकों को वापस चाहते हैं, और बेहतर होगा कि वे मेरे पदभार ग्रहण करने से पहले वापस आ जाएं, अन्यथा आपको बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।

टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए हमास के प्रवक्ता बासेम नईम ने एक बयान में कहा कि ऐसे बयान सुनकर दुख हुआ, क्योंकि इससे पता चलता है कि यहां संघर्ष के प्रति अमेरिकी नीतियां गैर-पक्षपाती मुद्दा है और चाहे चुनाव में कोई भी जीत जाए, इजरायल के प्रति अमेरिका का अंधा और शर्मनाक समर्थन जारी रहेगा। 7 अक्टूबर को हमास ने जिन लोगों को बंधक बनाया था, उसमें अमेरिकी नागरिक भी शामिल थे।ट्रंप ने कहा, हम अपने बंधकों को वापस चाहते हैं. अच्छा होगा कि मेरे राष्ट्रपति बनने से पहले उन्हें छोड़ दिया जाए ट्रंप की इस बात पर उनके समर्थक भी अपना समर्थन जताते नजर आए। वो उन्हें (बंधकों) वापस लाओ के नारे लगा रहे थे। हमास ने ट्रंप के एक समर्थक रोनेन न्यूट्रा के अमेरिकी-इजराइली बेटे उमर को भी बंधक बनाया है। पार्टी सम्मेलन में रोनेन ने कहा कि ट्रंप ने इस संबंध में उनसे बात की है। उन्होंने बताया, हमले में जब उमर को बंधक बना लिया गया, ट्रंप ने उसे बात की थी। हम जानते हैं कि वो अमेरिकी बंधकों के साथ हैं। बता दें कि इजरायल-फिलिस्तीन में दशकों से तनाव चला आ रहा है। पिछले साल 7 अक्तूबर 2023 को हमास ने इजरायल के दक्षिणी हिस्से पर हमला कर दिया था जिसमें 1,200 इजराइली नागरिकों की जान चली गई थी और हमास लड़ाकों ने 251 लोगों को बंधक बना लिया था जिसमें कई अमेरिकी भी शामिल थे। बंधकों में कुछ को छुड़ाया गया है लेकिन अब भी सैकड़ों बंधक हमास के कब्जे में हैं।

पाकिस्तान में हिंदू सबसे बड़े अल्पसंख्यक

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी वर्ष 2017 के 35 लाख से बढ़कर 2023 में 38 लाख हो गई, जो इन्हें इस इस्लामी राष्ट्र का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह बनाती है। पिछले साल की जनगणना के आधिकारिक आंकड़ों से यह जानकारी मिली। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान सांख्यिकी ब्यूरो (पीबीएस) ने गुरुवार को 7वीं आबादी और आवास जनगणना 2023 के नतीजे जारी किए। 2023 में पाकिस्तान की कुल जनसंख्या 2,40,458,089 थी। इससे पता चलता है कि कुल आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी 2017 में 96.47 प्रतिशत से थोड़ी कम होकर 2023 में 96.35 प्रतिशत रह गई, जबकि सभी प्रमुख धार्मिक अल्पसंख्यकों की आबादी पिछले छह वर्षों में बढ़ी है। पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी 2017 के 35 लाख से बढ़कर 2023 में 38 लाख हो गई, लेकिन कुल आबादी में उनकी हिस्सेदारी 1.73 से घटकर 1.61 प्रतिशत हो गई है। इससे पता चलता है कि अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की आबादी में तेज दर से वृद्धि हुई है। ईसाइयों की जनसंख्या भी 26 लाख से बढ़कर 33 लाख हो गई। अहमदियों की वास्तविक जनसंख्या के साथ-साथ कुल जनसंख्या में उनकी हिस्सेदारी में भी गिरावट देखी गई। आंकड़ों से पता चलता है कि देश की जनसंख्या 2.55 प्रतिशत की वृद्धि दर से 2017 में करीब 20.76 करोड़ से बढ़कर 2023 में करीब 24.14 करोड़ हो गई।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129